यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 46, सं. 2 VOL.XXXXVII NO. 2, मुंबई अप्रैल - जून, 2021

ಕರ್ನಾಟಕ-कर्नाटक विशेषांक
Karnataka Special

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra कार्पोरेशन Corporation

यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 46, सं. 2 VOL.XXXXVII NO. 2, मुंबई अप्रैल - जून, 2021

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
कल्याण कुमार

General Manager (HR)
Kalyan Kumar

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे

Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
ए. के. विनोद
एम. वेंकटेश
शैलेश सिंह
नवल किशोर दीक्षित

Editorial Advisors
A. K. Vinod
M. Venkatesh
Shailesh Singh
Naval Kishor Dixit

Printed and published by **Dr. Sulabha Kore**
on behalf of Union Bank of India and
printed at **UCHITHA GRAPHIC PRINTER PVT. LTD.**
352-54, Murlidhar Temple Compound,
Near Thakurdwar Post Office,
J.S.S. Road, Mumbai-400002.
and published at Union Bank Bhavan,
Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - **Dr. Sulabha Kore**
E-mail : sulabhakore@unionbankofindia.com
Our Address : Union Dhara,
11th Floor, Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.
E-mail : uniondhara@unionbankofindia.com
Mob. No. 9820468919
Tel.: 22896595 / 22896545 / 22896590

कर्नाटक विशेषांक

प्रकाशन तिथि : 12.08.2021

- परिदृश्य 3
- संदेश (क्षेमप्रका मंगलूरु/बेंगलूरू) 4
- संपादकीय 5
- साहित्य जगत से... 6-7
- काव्य धारा 8-9
- कर्नाटक का राज्य गीत 10
- कर्नाटक की नदियाँ 11
- कर्नाटक : एक यात्रा 12-13
- क्षेत्रीय विशेषताएँ 14-15
- Karnataka Shines 17
- Flora & Fauna of Karnataka / हमें गर्व हैं 18-19
- कर्नाटक की विभूतियाँ 20-21
- कर्नाटक के दर्शनीय स्थान 22-23
- कर्नाटक की खनिज संपदा 24-25
- कर्नाटक के विशिष्ट स्थल 26-29
- Bangalore - IT Hub of India 30
- An Iconic heritage Museum 31
- Natural Resources of Karnataka 32
- शिखर की ओर... 33-34

अनुक्रमणिका
Contents

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया | Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम | A Government of India Undertaking

आन्ध्रा Andhra | कार्पोरेशन Corporation

- What's New 35
- कर्नाटक की गतिविधियों का अन्वेषण 36
- Festive Karnataka 37
- The Seat of Carnatic Music 39
- Folk Culture of Karnataka 39-40
- Founder of E-Corporation Bank 41
- E-Corp Centenary Public Library 42
- हमारा महाविद्यालय: हमारी शान 43-44
- हिन्दी और कन्नड़ भाषा का तुलनात्मक अध्ययन 45-46
- Art and Artisans of Karnataka 47-48
- Cultural legacy of Karnataka 49
- सेंटर स्प्रेड - हम्पी 50-51
- यक्षगान 52-53
- हमारे महत्वपूर्ण ग्राहक 54-59
- Popular Waterfalls in Karnataka 60-61
- कर्नाटक के विशिष्ट व्यक्तित्व / बधाई 62-66
- Karnataka with Indian Independence Struggle 67-68
- Contribution to Nation's Defence 69-70
- संत बसवन्ना 71-72
- विशिष्टता / हमें गर्व हैं 73-74
- Architecture of karnataka 75-76
- शुभमस्तु... 77
- सेवा निवृत्त जीवन से... 78
- Face in UBI Crowd 79-80
- कर्नाटक का खान-पान एवं पहनावा 81-82
- दक्षिण कर्नाटक के प्रसिद्ध मंदिर 83-84
- Karnataka the land of Opportunity & Innovation 85-86
- Agriculture in Karnataka 87-88
- सुधा मूर्ति 89-90
- Quiz Corner 91
- प्रतियोगिता क्र. 158 / परिणाम 92
- पुरस्कार / समाचार (केंद्रीकृत) 93
- समाचार दर्शन 94-97
- हेल्थ टिप्स / व्यंजन 98
- आपकी पाती 99
- बैक कवर 100

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at **UCHITHA GRAPHIC PRINTERS PVT. LTD.**, Mumbai-400 013

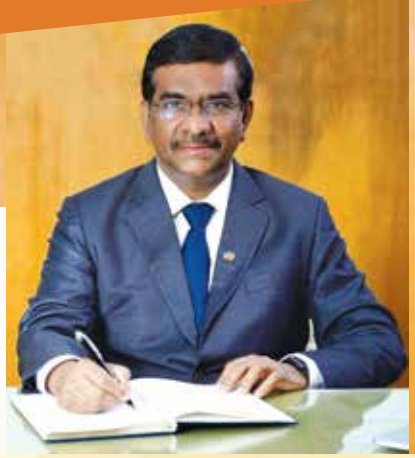

परिदृश्य
PERSPECTIVE

साथियों,

दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक भारत मुख्य रूप से 'विविधता में एकता' के लिए जाना जाता है. हम, भारत के लोग, विविध संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों, विश्वासों का प्रतिनिधित्व करते हैं और गर्व से कई सामाजिक, आर्थिक पहचानों को साझा करते हैं. कर्नाटक एक ऐसा राज्य है जो देश के विकास को प्रतिबिंबित करता है. इस राज्य में सांस्कृतिक विविधता प्रचुर मात्रा में है. साथ ही इस राज्य को समृद्ध इतिहास एवं कृषि योग्य भूमि, खनिज भंडार और एक विस्तृत तटीय पहुंच के साथ एक अद्भुत भौगोलिक स्थिति का लाभ मिला है. कर्नाटक में विभिन्न धर्मों का सामंजस्यपूर्ण सहअस्तित्व है और इसे इसके महीन नक्काशीवाले विशाल मंदिरों, प्राचीन स्मारकों आदि के माध्यम से देखा जा सकता है. इतिहास और वास्तुकला में समृद्ध कर्नाटक राज्य बहुत से विरासत के स्थानों (heritage sites) की मेजबानी करता है. इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा शहरी क्षेत्रों में रहता है. यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह राज्य लोगों की उद्यमिता का एक समृद्ध इतिहास बयां करता है.

पिछले कुछ समय से यह राज्य भारतीय औद्योगिक विकास में अग्रणी शक्ति रहा है. कर्नाटक की औद्योगिक संरचना में एक ओर जहाँ आधुनिक उच्च तकनीक पूंजीगत वस्तुएँ तथा ज्ञान गहन उद्योग हैं तो दूसरी ओर पारंपरिक उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग हैं. विशेषतया दक्षिण केनरा जिले उद्यमिता के लिए सबसे सक्रिय क्षेत्रों में से एक रहे हैं. भारत के प्रमुख बैंकों का जन्म दक्षिण केनरा में हुआ था. राज्य की अर्थव्यवस्था का आकार और संरचना को देखते हुए, लगभग 70% का ऋण-जमा अनुपात, ऋण की और अधिक वृद्धि करने की एक बड़ी संभावना को दर्शाता है.

मुझे हर्ष है कि हमारी द्विभाषी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' ने इस अंक को कर्नाटक राज्य को समर्पित किया है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं और आर्थिक अवसरों पर जानकारी का समृद्ध खजाना समाहित है. मैं इस अंक के लिए व्यापक पाठक वर्ग की कामना करता हूं. सुरक्षित रहें और अपना ख्याल रखें.

शुभकामनाओं सहित

राजकिरण रै जी.

राजकिरण रै जी.

Dear Unionites,

India, one of the oldest living civilizations in the world, is best known for 'unity in diversity'. We, the people of India, represent diverse cultures, languages, religions, beliefs, and proudly bear many socio-economic identities. Karnataka is one state which mirrors the developments in the country. Cultural diversity abounds while the state is also blessed with a rich history and geography with arable land, mineral deposits and an expansive coastal reach. Karnataka has harmonious coexistence of various religions and it can be seen through its vast intricate temples, ancient monuments etc. Rich in history and architecture it has a host of heritage sites. Moreover, a larger share of its population is living in urban areas. It is no surprise that people of the state have a rich history of entrepreneurship.

More recently, the state has been a leading force in the growth of Indian industry. The industrial structure of Karnataka represents a blend of modern high-tech capital goods and knowledge intensive industries on the one hand and traditional consumer goods industries on the other. The South Canara districts in particular have been one of most active regions for entrepreneurship. Some leading banks of India have had their origin in South Canara. Given the size and structure of the state economy, the credit-deposit ratio around 70% signals a huge potential for credit deepening.

I am happy that our bilingual House Journal, 'Union-Dhara' has dedicated this issue to Karnataka state, bringing a rich treasure of information on varied aspects of life and economic opportunity. I wish for a wider readership for the issue. Stay safe and take care.

With best regards,

Rajkiran Rai G.

क्षेत्र महाप्रबंधक, मंगलूरु की डेस्क से...

'यूनियन धारा' को कर्नाटक विशेषांक के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश, एक अच्छी पहल है. इस पत्रिका के माध्यम से मे मंगलूरु अंचल की ओर से सभी यूनियनाइट्स एवं पाठकों का अभिनंदन करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ. शीर्ष प्रबंधन एवं 'यूनियन धारा' के संपादक मण्डल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मुझे विश्वास है कि यूनियन धारा का कर्नाटक विशेषांक अद्वितीय होगा तथा आपके ज्ञानवर्धन में भी सहायक होगा.

भारत के दक्षिणतम हिस्से में बसे इस प्रदेश की संस्कृति, प्रकृति तथा ऐतिहासिक धरोहर इसे सबसे अलग राज्य बनाती है. यह सुन्दर तथा विशाल कृषि प्रधान राज्य है. आजादी से पूर्व इस राज्य का नाम मैसूर हुआ करता था. पश्चिम में अरब सागर, उत्तर-पश्चिम में गोवा, उत्तर में महाराष्ट्र, पूर्व में आंध्रप्रदेश, दक्षिण पूर्व में तमिलनाडु तथा दक्षिण में केरल से जुड़े हुए इस राज्य की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जो विभिन्न साम्राज्यों के योगदान से निरंतर आगे बढ़ती रही है. कर्नाटकी साहित्य, वास्तुकला, लोकगीत, संगीत, चित्रकला और अन्य कला रूपों का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है. राज्य के लोग पारंपरिक हैं. सरल जीवन शैली के हैं. कर्नाटकी लोगों की संस्कृति और परम्पराओं की झलक उनके त्यौहार, उत्सव, वेशभूषा, गहने, संगीत और उनके खान पान में भी देखी जा सकती है.

मेंगलूरु अंचल के अधीन कुल 8 क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जिसमें से 6 क्षेत्रीय कार्यालय केरल राज्य में एवं अन्य दो, क्षे. का. मंगलूरु और क्षे. का. उडुपि, कर्नाटक राज्य में है, समामेलन से पूर्व कॉर्पोरेशन बैंक मंगलूरु शहर में अग्रणी बैंक होने के कारण वर्तमान में इस क्षेत्र में यूनियन बैंक की मौजूदगी व्यापक है. इस क्षेत्र में हमारे बैंक की व्यापकता एवं अपनी उपस्थिति बनाये रखने हेतु हमने अपने कार्यों के स्तर को और बेहतर बनाया है. कर्नाटक के तटीय क्षेत्र में बैंकिंग की उत्पत्ति का पता वर्ष 1868 में लगाया जा सकता है. जब प्रेसीडेंसी बैंक ऑफ मद्रास ने बागान उत्पादों के निर्यात में शामिल ब्रिटिश कंपनियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक शाखा खोली. इसे अर्थव्यवस्था में मुख्य क्षेत्र, कृषि को संबोधित करने के लिए बनाया गया था लेकिन बाद में अन्य आर्थिक क्षेत्रों को भी संबोधित करने के लिए विविधता लाई गयी. कर्नाटक राज्य, विशेष रूप से दक्षिण कर्नाटक और उडुपी के तटीय जिलों, ऐतिहासिक और सामूहिक रूप से दक्षिण केनरा के रूप में जाना जाता है. इस क्षेत्र को भारत के बैंकिंग का उद्गम स्थल (cradle of banking in India) कहा जाता है. क्योंकि देश के सात प्रमुख बैंक केनरा बैंक, सिंडिकेट बैंक, कॉर्पोरेशन बैंक, विजया बैंक, कर्नाटक बैंक, वैश्य बैंक और स्टेट बैंक ऑफ मैसूर की उत्पत्ति कर्नाटक राज्य के इसी भाग से हुई है. बैंकों की उपरोक्त सूची में से पहले पांच बैंक उडुपि और दक्षिण कन्नड़ जिलों में स्थापित किए गए थे और दिलचस्प बात यह है कि कई प्रबंध निदेशक, जिन्होंने अतीत में कई बैंकों का नेतृत्व किया हैं और वर्तमान में भी कुछ प्रमुख हैं, वे भी कर्नाटक के इसी भाग से हैं.

मंगलूरु अंचल में पदस्थ हर यूनियनाइट, जोशीला एवं कार्य सम्पादन के उच्च मानक प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध है और मैं इस टीम का उत्साह वर्धन करते हुए अपना आभार व्यक्त करता हूँ.

- एम वी बालसुब्रमण्यम, मुख्य महाप्रबंधक

क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु की डेस्क से...

बैंक की कॉर्पोरेट पत्रिका 'यूनियन धारा' हमेशा से देश, समाज व जीवन के विविध पक्षों को छूने का प्रयास करती रही है. इसी कड़ी में पत्रिका के जून, 2021 अंक को 'कर्नाटक विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जाना एक सराहनीय कदम है.

कर्नाटक में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के कुल 10 क्षेत्रीय कार्यालय है, जिनमें से 8 क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु अंचल में है. इस अंचल में एक तरफ जहाँ बेंगलूरु जैसा हाइटेक वैश्विक महानगर है, वहीं दूसरी तरफ बेलगावी व कलबुर्गी जैसे कृषि आधारित उद्योगों वाले नगर हैं. कर्नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ न केवल भारत की सभी भाषाओं को जानने वाले वरन विश्व की अधिकांश मुख्य भाषाओं को जानने वाले लोग मिल जाते हैं.

इस अंचल के मैसूरु, हुबली, शिवमोग्गा आदि जिले अपनी ऐतिहासिक इमारतों, विश्व प्रसिद्ध त्योहारों व जड़ी-बूटियों के लिए जाने जाते हैं तो धारवाड़, बीजापुर, कलबुर्गी आदि नगर अपनी विशिष्ट सामाजिक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है. कर्नाटक के मडिकेरी, चिकमगलूर, कुर्ग, आगुम्बे जैसे सुरम्य 'हिल स्टेशन' आज भी सैलानियों को आकर्षित करते हैं तो मंगलूरु, उडुपि व कारवार जैसे सुप्रसिद्ध तटीय नगर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ भव्य मंदिरों के लिए पर्यटकों को यहाँ आने पर विवश कर देते हैं. वहीं कोलार गोल्ड फील्ड्स के खंडहर कर्नाटक के स्वर्णिम इतिहास की गाथा गाते हैं.

यूं तो कर्नाटक की प्रमुख भाषा कन्नड़ा है, परंतु दक्षिण कन्नड़ा और उडुपि जिलों की प्रमुख भाषा तुलु है. चूंकि कर्नाटक राज्य की सीमाएं महाराष्ट्र, केरल, गोवा, तमिलनाडु व आंध्र प्रदेश से मिलती हैं, इसलिए यहाँ मराठी, तेलुगू, मलयालम, कोंकणी आदि भाषाएँ जानने वाले लोग भी बड़ी संख्या में मिलते हैं. कर्नाटक, भारत के उन राज्यों में से एक है, जिनकी लोक नृत्य व संगीत की विरासत प्राचीन इतिहास से जुड़ी हुई है. कर्नाटक साहित्य की विशालता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब तक कन्नड़ भाषा के सर्वाधिक 8 साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हो चुका है.

कर्नाटक का इतिहास अत्यंत वैभवशाली व गौरवशाली रहा है. यहाँ राजा कृष्णदेव राय और हर्षवर्धन जैसे विश्व प्रसिद्ध शासकों ने शासन किया. विजयनगर साम्राज्य के किले आज भी अपनी विशिष्ट वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं. कर्नाटक अनेक महापुरुषों की तपोभूमि भी रही है. यह राज्य बैंकिंग का गढ़ भी रहा है, जहाँ से भारत के कई बड़े बैंकों ने जन्म लिया और फले फुले. यहाँ यूनियन बैंक की भी अत्यंत प्रभावशाली उपस्थिति है.

कर्नाटक राज्य के यूनियनाइटस सदैव बढ़-चढ़ कर बैंक की प्रगति में अपना योगदान देते रहे हैं. 'यूनियन धारा' के कर्नाटक विशेषांक से स्टाफ सदस्यों में उत्साह व गौरव का माहौल सृजित हुआ है, जो भविष्य में कारोबारी लक्ष्यों की प्राप्ति में अवश्य सहायक होगा.

आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं.

- डी. चंद्रमोहन रेड्डी, महाप्रबंधक

संपादकीय
EDITORIAL

पौराणिक कथाओं से पता चलता है कि भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने कर्नाटक के कोंकण तट का निर्माण किया और तब से इसे परशुराम सृष्टि के नाम से जाना जाता है. यह सृष्टि हरे-भरे और आलीशान पश्चिमी घाटों, सफेद रेतीले समुद्री तटों और मंत्रमुग्ध करने वाले दृश्यों, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थानों तथा भव्य एवं शांत स्थानों से समृद्ध है. इसके साथ ही यह राज्य सुंदर मंदिरों, किलों, ताजे समुद्री भोजन तथा शिक्षा, साहित्य, सामाजिक कार्य, संस्कृति, आतिथ्य, भारतीय बैंकिंग, प्रौद्योगिकी, स्वतंत्रता संघर्ष आदि विभिन्न क्षेत्रों की महान हस्तियों से संपन्न है. समृद्ध रूप से संपन्न इस राज्य की प्राचीन काल से अरब, चीन, मोरक्को, पुर्तगाली, डच और ब्रिटिश शासकों/ आगंतुकों द्वारा सराहना की गयी है. देवत्व और भारत का तकनीकी केंद्र, इन पूरी तरह से अलग पहलुओं को आप इस राज्य में पाएंगे. आप आकर्षक वास्तुकला, अद्भुत व्यंजन और शानदार लोगों से भी इस राज्य में मिलेंगे. हमने इस अद्भुत राज्य के सभी पहलुओं और सुंदरता को शामिल करने की कोशिश की है लेकिन इस राज्य में इसके अलावा भी आपको बहुत कुछ मिल जाएगा.

यूनियन धारा का यह कर्नाटक विशेषांक हमारे बेंगलूरु और मंगलूरु अंचलाधीन स्टाफ सदस्यों तथा कार्यपालकों के सहयोग और योगदान के बिना संभव नहीं था. हमारे संवाददाता श्री के.के. यादव और श्री जॉन अब्राहम तथा उनकी टीम के साथियों का उत्साह मैं भूल नहीं सकती. उन सबका तहे दिल से शुक्रिया और मेरे संपादकीय बोर्ड के अपरिमेय समर्थन और मार्गदर्शन हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद !

आशा है कि आप यूनियन धारा के माध्यम से कर्नाटक राज्य की इस यात्रा का आनंद लेंगे और अपने सुझाव, प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएंगे. मैं आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करूँगी और अब आपको कर्नाटक के अनन्वेषित जादुई सौंदर्य की यात्रा पर छोड़ रही हूं.

शुभकामनाओं के साथ,

आपकी,

डॉ. सुलभा कोरे

Mythology reveals that Parashurama, the 6th incarnation of Lord Vishnu, formed the great konkan coast of Karnataka and is ever since known as Parashurama Shrishti. This shristhi is majestically bestowed with lush green and luxuriant western ghats, white sandy beaches and owning mesmerising sight, cultural and historical places and gorgeous and serene spots. Alongwith this the entire state is filled with beautiful temples, forts, fresh sea food and legendary personalities from various fields such as education, literature, social work, culture, hospitality, Indian banking, technology, freedom struggle etc. This state has a rich heritage and has received appreciation from Arab, China, Morocco, Portuguese, Dutch and British rulers/visitor in ancient times. The divine and techno hub of India are two different aspects going hand in hand in this state. You will also witness fascinating architecture, wonderful cuisine and fantastic people. In this edition, we have tried to blend all the aspects and beauty of this marvellous state, but this state has yet much more to explore.

This issue of Union Dhara on Karnataka is not possible without the contribution of our staff members and executives of Bengaluru and Mangalore zones. The enthusiasm of our correspondents Mr. K.K.Yadav and Mr. John Abraham along with their team is. Thanks to one and all and thanks to my editorial board for their unfathomable support and guidance.

Hope you enjoy this journey of Karnataka state through Union Dhara and will come out with your suggestions and appreciation also. I will be waiting for your feedback and will leave you to explore this journey of the magical state of Karnataka.

with best wishes,

Yours truly,

Dr. Sulabha Kore

कन्नड़ भाषा के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता

कन्नड़ भारत के कर्नाटक राज्य की राज्य भाषा तथा भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से एक है. भारत में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक कन्नड़ भाषा का लगभग 4.5 करोड़ से अधिक लोग प्रयोग करते हैं. विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची में कन्नड़ भाषा का स्थान 27वां है. भारत सरकार ने कन्नड़ भाषा को भारत की शास्त्रीय भाषा (क्लासिकल लैंगवेज) का दर्जा भी दिया है.

साहित्यिक या सांस्कृतिक क्षेत्र में किए गए ऐसे कार्यों को जो राष्ट्रीय गौरव तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के अनुरूप हो, को पुरस्कृत करने हेतु 16 सितंबर, 1961 को भारतीय ज्ञानपीठ न्यास की संस्थापक व अध्यक्ष श्रीमती रमा जैन ने एक गोष्ठी में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार का प्रस्ताव रखा. 02 अप्रैल, 1962 को दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ और टाइम्स ऑफ़ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में देश की सभी भाषाओं के 300 मूर्धन्य विद्वानों ने एक गोष्ठी में इस विषय पर विचार किया. इस गोष्ठी के प्रथम दो सत्रों की अध्यक्षता डॉ. वी. राघवन और श्री भगवती चरण वर्मा तथा इसका संचालन डॉ. धर्मवीर भारती ने किया. इस गोष्ठी में काका कालेलकर, हरेकृष्ण मेहताब, निसीम इजेकिल, डॉ. सुनीति कुमार चैटर्जी, डॉ. मुल्कराज आनंद, सुरेंद्र मोहंती, देवेश दास, सियारामशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र माथुर, डॉ. नागेन्द्र, डॉ. बी.आर.बेंद्रे, जैनेंद्र कुमार, मन्मथनाथ गुप्त, लक्ष्मीचंद्र जैन आदि प्रख्यात विद्वानों ने भाग लिया. इस पुरस्कार के स्वरूप का निर्धारण करने के लिए समय-समय पर गोष्ठियाँ होती रहीं. अंततः, वर्ष 1965 में पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार का निर्णय लिया गया. इस पुरस्कार के अंतर्गत 11 लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र व वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है.

भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला यह सर्वोच्च पुरस्कार है. भारत का कोई भी नागरिक जो आठवीं अनुसूची की किसी भी भाषा में लिखता हो, इस पुरस्कार के योग्य है. प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार सन 1965 में मलयालम लेखक जी. शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था. उसके बाद सन 1966 में ज्ञानपीठ पुरस्कार हेतु बांग्ला लेखक ताराशंकर बंधोपाध्याय का चयन हुआ. तदनंतर 1967 में कन्नड़ लेखक कुपल्ली वेंकटप्पागौड़ा पुटप्पा 'कुवेम्पु' को इस पुरस्कार से नवाजा गया. कन्नड़ भाषा के साहित्यकारों को अब तक कुल 8 ज्ञानपीठ पुरस्कार मिल चुके हैं, जोकि किसी भी भारतीय भाषा में सर्वोच्च है. साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है:

1. **कुपल्ली वेंकटप्पा गौड़ा पुटप्पा:** कुपल्ली वेंकटप्पागौड़ा पुटप्पा (1904-1994) को 20वीं शताब्दी के महानतम कन्नड़ कवि की उपाधि दी जाती है. ये कन्नड़ भाषा में ज्ञानपीठ सम्मान पाने वाले प्रथम व्यक्ति हैं. पुटप्पा ने अपने समस्त साहित्यिक कार्य उपनाम 'कुवेम्पु' से किये हैं. उनको साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1958 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था. इनके द्वारा रचित महाकाव्य श्रीरामायण दर्शनम् के लिये उन्हें सन् 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया.

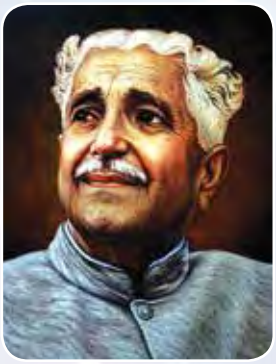

2. **दत्तात्रेय रामचंद्र बेन्द्रे:** दत्तात्रेय रामचंद्र बेन्द्रे (1896-1981) द्वारा रचित कविता संग्रह 'अरलु-मरलु' के लिये उन्हें सन 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था तथा सन 1973 में समग्र साहित्यिक योगदान हेतु ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

3. **कोटा शिवराम कारन्त:** कोटा शिवराम कारन्त (1902-1997) कन्नड़ भाषा में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले तीसरे साहित्यकार हैं. ये लेखक, यक्षगान कलाकार व फिल्मों के निर्देशक भी थे. इनके द्वारा रचित लोक नाट्य 'विवेचन यक्षगान' के लिये उन्हें सन 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'कन्नड़ा' से भी सम्मानित किया गया.

4. **मास्ती वेंकटेश अयंगार:** मास्ती वेंकटेश अयंगार (1891-1986) ज्ञानपीठ साहित्य सम्मान पाने वाले कर्नाटक के चौथे लेखक थे. 'चिक्कवीरा राजेंद्र' नामक कथा के लिये उनको सन 1983 में ज्ञानपीठ पंचाट से सम्मानित किया गया था. मास्ती जी ने कुल मिलाकर 137 पुस्तकें लिखीं जिसमें से 120 कन्नड़ भाषा में तथा शेष अंग्रेज़ी में थी. वे अपनी लघु कहानियों के लिये काफी लोकप्रिय थे. वे अपनी रचनाओं को 'श्रीनिवास' उपनाम से लिखते थे. उन्हें प्यार से 'मास्ती कन्नड़ादा आस्ती' कहा जाता था, क्योंकि उनको कर्नाटक का अनमोल रत्न माना जाता था.

5. **विनायक कृष्ण गोकाक:** विनायक कृष्ण गोकाक (1909-1992) ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता के पांचवें कन्नड़ा लेखक हैं. उनकी सबसे विख्यात कृति 'भारत सिन्धु रश्मि' है. इनके द्वारा रचित एक कविता संग्रह 'द्यावा पृथ्वी' के लिये उन्हें सन 1960 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (कन्नड़ा) से भी सम्मानित किया गया.

6. **उडुपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति:** उडुपी राजगोपालाचार्य अनंतमूर्ति (1962-2014) समकालीन कन्नड़ साहित्यकार, आलोचक और शिक्षाविद् थे. इन्हें कन्नड़ साहित्य के नव्या आंदोलन का प्रणेता माना जाता है. इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'संस्कार' है. वे ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले छठे कन्नड़ साहित्यकार हैं. साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सन 1998 में भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया था. वर्ष 2013 के मैन बुकर पुरस्कार से भी इन्हें सम्मानित किया गया.

7. **गिरीश कार्नाड:** गिरीश कार्नाड (1938-2019) भारत के जाने माने लेखक, अभिनेता, फ़िल्म निर्देशक और नाटककार हैं. कन्नड़ा और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में इनकी लेखनी समानाधिकार से चलती थी. सन 1998 में ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित पद्मश्री व पद्मभूषण जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों के विजेता कार्नाड द्वारा रचित तुगलक, हयवदन, तलेदंड, नागमंडल व ययाति जैसे नाटक अत्यंत लोकप्रिय हुये और भारत की अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद व मंचन हुआ.

8. **चंद्रशेखर कंबार:** चंद्रशेखर कंबार (1937) कन्नड़ भाषा के कवि, नाटककार एवं लोक साहित्यकार हैं. उन्होंने कन्नड़ भाषा में फिल्मों का निर्देशन भी किया है और वे हम्पी में कन्नड़ विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति भी रहे हैं. उनके उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए वर्ष 2010 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया. कन्नड़ भाषा के साहित्यकारों में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वालों में चंद्रशेखर कंबार का नाम अंतिम है. इनके बाद किसी ने अभी तक कन्नड़ भाषा में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नहीं किया है. इनके द्वारा रचित नाटक 'सिरिसंपिगे' के लिये उन्हें सन 1991 में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'कन्नड़' से सम्मानित किया गया.

कर्नाटक राज्य की भाषा कन्नड़ दक्षिण भारत की लोकप्रिय भाषाओं में से एक है. कन्नड़ भाषा के साहित्यकारों की रचनाएँ आज पूरे देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी अमिट छाप छोड़ रहीं है.

- सुनील कुमार यादव
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

यह कर्नाटक बेमिसाल है

धरा यह कर्नाटक की, ऐतिहासिक बेमिसाल है.
कर्त्तव्यनिष्ठा मातृभूमि की, धरती यह कमाल है.
विजयनगर की स्थापना, काल वह 1336 साल है.
हरिहर, बुक्का राय के, पराक्रम का धमाल है.
पूरे भारत में आज भी कर्नाटक हिन्द का नाज है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा की गोद में पला.
कई युद्धों को साधकर अग्नि में जला.
था वह टीपू सुल्तान, जो अंग्रेजों से लड़ा.
कर्नाटक अपने पराक्रम से सदा है खड़ा.
कृष्णदेव राय की ताकत, कोई नहीं सवाल है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

शिल्पकला से परिपूर्ण मंदिरों का आकर्षण.
पहाड़ियों की शृंखला, प्रकृति का प्रदर्शन.
संरक्षित उद्यान, वन संपदा और पर्यावरण.
संरक्षित स्मारकें, गौरव का यह हर क्षण.
पग पखारे सागर, सौंदर्य भी विशाल है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

चंदन की खुशबू, मैसूर का प्रांगण.
विश्वेश्वरैया बांध एवं पार्क वृंदावन.
चामूण्डा धाम एवं वन्नेरघट्टा अभयारण्य.
नगर बेंगलुरु दिल में छा जाए जन-जन.
कांजीवरम् की चर्चा, पूरा देश मालो-माल है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

गुरु बसवेश्वर महाराज का आशीर्वचन.
बढ़ रहा कर्नाटका कदम हर कदम.
सूचना प्रौद्योगिकी का केंद्र, पूरे विश्व की नजर.
उद्योगों का जाल खुशहाल जन-जीवन.
यक्षगान का नृत्य, ठुमुक-ठुमुक चाल है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

मैसूर पाक का स्वाद, लगे अति मनभावन.
आलुगेड्डा, नीर डोसा, केला चिप्स सुहावन.
हालवाई, रागी चावल, सांभर लगे लुभावन.
मौसम लगे अति प्यारा, ज्येष्ठ हो या सावन.
बेंगलुरु का मजेस्टिक, हर दिल का सरताज है.
यह कर्नाटक बेमिसाल है.

- डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे. का., पटना

नयी सोच

कहने को तो सब राजी है,
पर मन की कर लें तो हम बाग़ी हैं.
सब चाहे दिखावे के शिष्टाचार,
पर दक़ियानूसी रिवाजों से करें परहेज
तो इनके लिए हैं हम बेकार.
कब जाने समझेंगे ये सब छोटी सी बात,
कि अब आ गया है जमाना हमारा,
छोड़ो तौर तरीके पुराने और
अपनाओ नए विचार,
मानते है आपके पास है अनुभव,
क्यों होते हो नाराज़.
हम है कल की नयी किरण,
कर लो थोड़ा हम पर भी विश्वास
अंग्रेजी कपड़ों के पीछे भी
हिन्दुस्तानी ही है दिल हमारा
हम युवा हैं युवा इस देश के भविष्य
की एक दस्तक.
अंदाज भले ही हो अलग पर,
हम भी चाहें पहुंचाना भारत को
ऐसे मुकाम पर,
कि सारी दुनिया हो तिरंगे के
सामने नतमस्तक.

- दीप्ति दास
क्षे का पुणे (पश्चिम)

आज रुक गया है इंसान

आज रुक गया है इंसान,
थम गया है यह जहां
जीवन चार दीवारी में ठहर गया है
अब यहाँ सूनी पड़ी है राहें
और आशियाने बन गए हैं मंज़िलें
मीट जाएंगे अब अपनों के सब शिकवे-गिले
बहुत कुछ बदलना है अब यहाँ
पर अभी भी कुछ है जो नहीं ठहरा है यहाँ
और शायद इससे पहले हमने
ये महसूस भी नहीं किया
जो दबी हुई थी दुनिया के शोरगूल में,
मूक थी अब तक
जिंदगी की कशमकश में,
अनसुना कर दिया था जिसे हमने
प्रकृति की आहट, जिसका
वजूद भूल गए थे हम
नदियों की कलकल,
ये पक्षियों का कलरव,
जो अब उन्मुक्त है स्वछन्द उड़ान के लिए
विचरण करते ये निरीह जीव
जो अब आज़ाद है मनुष्य की कैद से
लगता है कुछ कहना चाहती है
हमसे यह प्रकृति
नहीं था जो मुमकिन अब तक
मानवता को उस सपने की एक झलक
दिखलाना चाहती है
एक आस में कि संभल जाएगा इंसान
और चलेगा तबदीली की राह पर,
इस बदले मिजाज का आईना दिखाना चाहती है
इस कलयुग की बुराइयों का खात्मा कर
एक नए युग का सृजन करना चाहती है
कुदरत की अब है ये पुकार
हम इस झलक को रखें बरकरार
तभी होगा ये सपना साकार।

- मनोज चारण
मेहतपुर शाखा, जालंधर

तुम बहुत याद आते हो

सुनो, तुम बहुत याद आते हो
सुबह से शाम, शाम से फिर सुबह
तुम बहुत याद आते हो

जब अकेले बैठती हूँ,
खुद से बातें करती हूँ
अपनी उधेडबुन से जूझती हूँ
न होती आहटें सुनती हूँ,
दरवाजे की चिटकनी खोल देखती हूँ
किसी को न आया देख झूंझलाती हूं
सुनो, तुम बहुत याद याद आते हो..

चाय की महक अब अच्छी नहीं लगती
उजले पूरे चाँद को अब आँखे नहीं ताकती
बारिश में मन गीला होता है पर
हथेली पर बूंदे अब नहीं रुकती
खिली चमकती धूप में सुनो,
तुम बहुत याद आते हो..

ढूढ़ती हूँ तुम्हें, फूलों की नरमी में
महसूस होते हो तुम, हाथों की गरमी में
आती जाती सांसे तुम्हें खोजती हैं
धड़कने तुम्हें चिठ्ठियां भेजती हैं
पता है कि जवाब नहीं आयेगा फ़िर भी
सुनो, तुम बहुत याद आते हो।।

- कविता श्रीवास्तव
क्षे. म. प्र. का., जयपुर

Dear You

I know you are told, you'r fixer, a binder,
Of husband, of childrens, of families.
I know you are told,
to carry shame in your bodies, in your priorities
To put everyone's happiness before yours.
I know your scar never fade
But funnily are never seen too!!
I know how they treat you. Like Just a Woman
Shamed for your Emotions,
Questioned for your clothes,
Ridiculed for your dreams!!
I know you don't bleed once in a month
But your whole Life ! Fighting for your place.
Dear you, the sister I never had,
the mother I adore and the
Daughter I would do anything for.
You are amazing! You are more than your body.
That Father like uncle,
brother like cousin or that supposed
friend, might have violated your peace.
But remember it's not your fault. It's them
It isn't your Smile, it isn't your friendliness.
It's always them.
Don't loose your light for them cause
this world need your shine.
You are not victim but a Survivor.
Hoping to a future where our greatest
achievement isn't
Motherhood but whatever we choose,
where our place in
History isn't about our struggles but
achievements,
Until then keep being you.
You have come so far.
And I'm so proud of you.

- B Alekhya
Sundar Nagar Branch,
RO Punjagutta Hyderabad

वक्त की ही बात है

लगी ठेस तो पूछे लोग,
हर कोई मुझे टोक गया।
सोचा जवाब दे दूं उन्हें,
पर कमबख्त वक्त रोक गया।

तेरे जख्मों को कोई
और देख नहीं पायेगा।
बना हथियार इन्हें और आगे बढ़ जा,
फिर तुझे कोई रोक नहीं पायेगा।

सच्चाई की रौशनी में
काला सूरज डूब जाएगा।
दुनिया देखेगी,
मेरा सितारा फिर छाएगा।

ऐ वक्त सुना है तू ठहरता नहीं,
तुझे ये दिखाना है।
अपने हौसलों की रफ्तार से,
तुझे भी पीछे छोड़ जाना है।

बहुत हुआ अब उठ और बिना पंख
वालों को भी उड़ना सिखा दे।
खुद वक्त बना दे मिसाल तुझे,
कुछ ऐसा करके दिखा दे।

- ईश कुमार
क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर)

कर्नाटक राज्य का गीत 'जय भारत जननिय तनुजाते'

'जय भारत जननिय तनुजाते' कन्नड़ भाषा के महान साहित्यकार, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता व राष्ट्र कवि कुप्पल्लि वेंकटप्पा पुट्टप्पा 'कुवेंपु' द्वारा रचित कविता है. यह गीत लंबे समय तक कर्नाटक का अनौपचारिक राज्य गीत था. आधिकारिक रूप से यह कविता वर्ष 2004 में कर्नाटक राज्य के 'राज्य गीत' के रूप में स्वीकार की गयी. यहाँ इस कविता का हिन्दी रूपांतरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है.

कन्नड़ संस्करण	लिप्यंतरण	भावानुवाद
ಜಯ ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ, ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ! ಜಯ ಸುಂದರ ನದಿ ವನಗಳ ನಾಡೇ, ಜಯ ಹೇ ರಸಋಷಿಗಳ ಬೀಡೆ!	जय भारत जननिय तनुजाते, जय हे कर्नाटक माते ! जय सुंदर नदि वनगल नाडे, जय हे रसऋषिगल बीडे !	जय भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता ! जय सुंदर नदी वनों की धरा, जय हे गुणी ऋषियों का बसेरा !
ಭೂದೇವಿಯ ಮಕುಟದ ನವಮಣಿಯೆ, ಗಂಧದ ಚಂದದ ಹೊನ್ನಿನ ಗಣಿಯೆ; ರಾಘವ ಮಧುಸೂಧನರವತರಿಸಿದ ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ ! ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ!	भूदेवीय मकुटद नवमणिये, गंधद चंदद होन्निन गणिये; राघव मधुसूधनवतरिसिद भारत जननिय तनुजाते ! जय हे कर्नाटक माते !	भूदेवी के मुकुट की नवमणी, चंदन व सोने की सुंदर संपदा, जहां राम और कृष्ण ने अवतार लिया उस भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता !
ಜನನಿಯ ಜೋಗುಳ ವೇದದ ಘೋಷ, ಜನನಿಗೆ ಜೀವಮ ನೆನ್ನಾವೇಶ! ಹಸುರಿನ ಗಿರಿಗಳ ಸಾಲೇ, ನೆನ್ನಯ ಕೊರಳಿನ ಮಾಲೆ! ಕಪಿಲ ಪತಂಜಲ ಗೌತಮ ಜಿನನುತ, ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ! ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ!	जननिय जोगुल वेदद घोष, जननिगे जीववु निन्नावेश ! हसुरिन गिरिगल साले, निन्नय कोरलिन माले ! कपिल पतंजल गौतम जिननुत, भारत जननिय तनुजाते ! जय हे कर्नाटक माते !	जहां माता की लोरी वेदघोष हो, जहां सपूतों का धैर्य मातृभूमि की शान हो! हरित पहाड़ियों की शृंखला जो गले का हार हो! जहां कपिल, पतंजलि, गौतम, महावीर जन्में, उस भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता !
ಶಂಕರ ರಾಮಾನುಜ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯ, ಬಸವೇಶ್ವರ ಮಧ್ವರ ದಿವ್ಯಾರಣ್ಯ! ರನ್ನ ಷಡಕ್ಷರಿ ಪೊನ್ನ, ಪಂಪ ಲಕುಮಿಪತಿ ಜನ್ನ! ಕುಮಾರವ್ಯಾಸರ ಮಂಗಳಧಾಮ! ಕವಿಕೋಗಿಲೆಗಳ ಪುಣ್ಯಾರಾಮ! ನಾನಕ ರಮಾನಂದ ಕಬೀರರ, ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ! ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ!	शंकर रामानुज विद्यारण्य, बसवेश्वर मध्वर दिव्यारण्य ! रन्न षडक्षरी पोन्न, पंप लकुमिपति जन्न ! कुमारव्यासर मंगलधाम ! कविकोगिलेगल पुण्याराम ! नानक, रमानंद कबीरर, भारत जननिय तनुजाते ! जय हे कर्नाटक माते !	शंकर, रामानुज, विद्यारण्य, बसवेश्वर, मध्व की दिव्य भूमि! कवि रन्न, षडक्षरी, पोन्न, पंप, लकुमिपति, जन्न की धरा! कवि कुमारव्यास का मंगल-धाम! जहां कोयल रूपी कवियों ने, धरती को धन्य किया! नानक, रमानंद, कबीर की धरती, उस भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता !
ತೈಲಪ ಹೊಯ್ಸಳರಾಳಿದ ನಾಡೆ, ಡಂಕಣ ಜಕಣರ ನೆಚ್ಚಿನ ಬೀಡೆ! ಕೃಷ್ಣ ಶರಾವತಿ ತುಂಗಾ, ಕಾವೇರಿಯ ವರ ರಂಗ, ಚೈತನ್ಯ ಪರಮಹಂಸ ವಿವೇಕರ ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ! ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ!	तैलप होय्सलरालिद नाडे, डंकण जकणर नेच्चिन बीडे ! कृष्ण शरावति तुंगा, कावेरिय वर रंग, चैतन्य परमहंस विवेकर भारत जननिय तनुजाते ! जय हे कर्नाटक माते !	जहां तैलप, होय्सलों ने साम्राज्य किया, शिल्पकार डंकण, जकण की प्रियभूमि! कृष्ण, शरावति, तुंगा, कावेरी का जिसे वरदान मिला, चैतन्य, परमहंस, विवेकानंद की धरती, उस भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता !
ಸರ್ವಜನಾಂಗದ ಶಾಂತಿಯ ತೋಟ, ರಸಿಕರ ಕಂಗಳ ಸೆಳೆಯುವ ನೋಟ! ಹಿಂದೂ ಕ್ರೈಸ್ತ ಮುಸಲ್ಮಾನ, ಪಾರಸಿಕ ಜೈನರುದ್ಯಾನ ಜನಕನ ಹೊಲುವ ದೊರೆಗಳ ಧಾಮ, ಗಾಯಕ ವೈಣಿಕರಾರಾಮ.	सर्वजनांगद शांतिय तोट, रसिकर कंगल सेलेयुव नोट! हिंदू क्रैस्त मुसल्मान, पारसिक जैनरुद्यान जनकन होलुव दोरेगल धाम, गायक वैणिकरारामा.	सभी संप्रदायों का शांति वन, धरती जिसने कलाप्रेमी को किया आकर्षित! हिंदू, किश्चियन, मुसल्मान, पारसी, जैनों का गुलिस्ताँ! जनक-से राजाओं का धाम! गायक और संगीतकारों की धरती!
ಕನ್ನಡ ನುಡಿ ಕುಣಿದಾಡುವ ಗೇಹ! ಕನ್ನಡ ತಾಯಿಯ ಮಕ್ಕಳ ದೇಹ! ಭಾರತ ಜನನಿಯ ತನುಜಾತೆ, ಜಯ ಹೇ ಕರ್ನಾಟಕ ಮಾತೆ! ಜಯ ಸುಂದರ ನದಿ ವನಗಳ ನಾಡೆ, ಜಯ ಹೇ ರಸಋಷಿಗಳ ಬೀಡೆ!	कन्नड नुडि कुणिदाडुव गेह ! कन्नड तायिय मक्कल देह ! भारत जननिय तनुजाते, जय हे कर्नाटक माते ! जय सुंदर नदी वनगल नाडे, जय हे रसऋषिगल बीडे !	कन्नड़ बोली थिरकती ऐसे घर में ! जो है कन्नड़ माता की संतानों के देह! भारत माँ की सुपुत्री, जय हे कर्नाटक माता ! जय सुंदर नदी वनों की भूमि, जय हे गुणी ऋषियों की धरा !

- टी. नंजुंडप्पा
क्षे. का., बेंगलूरु (दक्षिण)

कर्नाटक की नदियाँ

नदियाँ सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपदा होती हैं. जहाँ से भी गुजरती हैं वहाँ के तटीय इलाक़ों को संपन्न करती जाती हैं. भारत में नदियों को पवित्रता का प्रतीक माना जाता है. इसीलिए भारत के अधिकतम पवित्र स्थल नदी तटों पर ही स्थित है. गंगा, यमुना, महानदी, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी आदि नदियों के तट पर विश्व प्रसिद्ध अनेक तीर्थस्थल मौजूद हैं. भारत की कुछ नदियाँ दूसरे देश में भी प्रवाहित होती हैं तो कुछ दूसरे देश से भारत में प्रवाहित होती हैं. कर्नाटक भारत का एक ऐसा ही राज्य है जो नदियों व प्राकृतिक संपदा से संपन्न है. यहाँ हम कर्नाटक राज्य में प्रवाहित होने वाली नदियों की चर्चा करेंगे.

कावेरी नदी कर्नाटक की सबसे महत्वपूर्ण नदी है. यह कुर्ग जिले के पश्चिमी घाट के ब्रह्मगिरी पहाड़ी पर स्थित तलकवेरी से निकलती है. इस नदी के कुल आठ सौ किलोमीटर की यात्रा के दौरान इसमें कई अन्य नदियाँ आकर मिलती हैं. कावेरी का समागम तमिलनाडु के तंजावुर जिले में बंगाल की खाड़ी में होता है. कावेरी नदी के तट पर श्रीरंगपट्टनम एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल स्थित है.

लगभग तेरह सौ कि.मी. वाली **कृष्णा नदी** भारत की एक महत्वपूर्ण नदी है. इसे कृष्णवेणी के नाम से भी जाना जाता है. इसका उद्गम महाराष्ट्र के महाबलेश्वर में है. यह नदी महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश से होकर बहती है.

तुंगभद्रा नदी कर्नाटक एवं आंध्र प्रदेश में बहने वाली एक महत्वपूर्ण नदी है. रामायण में भी तुंगभद्रा का जिक्र पंपा नाम से है. कर्नाटक के मैसूर में स्थित तुंग और भद्र नामक पर्वतों से निकलने वाली दो धाराओं से मिलकर तुंगभद्रा नदी की धारा बनती है. इसके उद्गम का स्थान गंगमूल कहलाता है. यह नदी दक्षिण की एक महत्वपूर्ण नदी है. पश्चिम घाट से निकल यह रायपुर के निकट कृष्णा नदी में मिलती है. महाभारत में इसे 'तुंगवेणा' कहा गया है.

कृष्णा नदी की सहायक **भीमा नदी** महाराष्ट्र व कर्नाटक में बहती है. यह नदी भारत की भीमरथी नाम से भी जानी जाती है. इसका उद्गम पश्चिमी घाट के भीमाशंकर पर्वत श्रेणी से होता है. यहाँ यह चाँद के आकार में मुड़ती है अत: वहाँ इसे 'चंद्रभागा' भी कहते हैं.

काली नदी का उद्गम स्थान पश्चिम घाट में है. यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हुई कारवार जिले के निकट अरब सागर में मिल जाती है. इस नदी के सहारे कई लोग अपना जीवन यापन करते हैं. बिजली उत्पादन के लिए इस नदी पर बांध भी बना है.

शरावती नदी का प्रवाह पश्चिम की ओर होता है. इस नदी का उद्गम व समापन कर्नाटक में ही होता है. इस नदी पर स्थित जोग फॉल्स भारत का सबसे ऊँचा वॉटर फॉल है. इसका पानी 253 फिट की ऊँचाई से गिरता है. सुंदरता में यह अमेरिका के नायगरा फ़ॉल्स को टक्कर देता है.

पलार नदी का उद्गम बेंगलूरु के पास चिक्काबल्लापुर जिले के नंदी हिल्स से होता है. यह नदी मात्र 93 किलोमीटर ही कर्नाटक में प्रवाहित होती है. इसके बाद यह आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु से होते हुए बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है. इसकी लम्बाई 295 किलोमीटर है.

चिकमंगलूरु जिले के कुद्रेमुख स्थान के येलानीरू घाट से **नेत्रावती नदी** निकलती है. प्रसिद्ध धर्मस्थल मंदिर इसी नदी के तट पर स्थित है. इसे भारत की पवित्र नदी के रूप में मान्यता मिली है. यह नदी अरब सागर में मिलने के पूर्व कुमारधारा नदी में मिल जाती है.

कुमारधारा नदी दो नदियों क्रमश: नेत्रावती व उप्पीनंगड़ी के मिलन से बनती है. यह नदी अरब सागर में मिलती है. कूक्के सुब्रमन्या मंदिर इसी नदी के तट पर स्थित है. भक्तों को इस मंदिर में दर्शन से पूर्व कुमारधारा नदी में पवित्र स्नान करना होता है.

घटप्रभा नदी कृष्णा नदी की एक सहायक नदी है. यह नदी महाराष्ट्र और कर्नाटक में बहती है. महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में इसका उद्गम होता है. मलप्रभा नदी कृष्णा नदी की ही एक सहायक नदी है, जो कर्नाटक राज्य में बहती है. बेलगाम जिले के पश्चिम घाट में इसका उद्गम होता है. इस नदी पर मलप्रभा बांध भी बना है. इस बांध द्वारा बेलगाव, धारवाड़ और बागलकोट जिलों में पीने के पानी की आपूर्ति होती है.

कपिला नदी कावेरी की सहायक नदी है. इसका उद्गम स्थान पश्चिम घाट पर्वत पर उत्तरी विनाद में है. कपिला कावेरी संगम पर परतिरुमकुला नरसीपुर नामक तीर्थस्थल है.

मांडवी नदी जिसे मंडोवी महादयी तथा गोमती नदी के नाम से भी जाना जाता है, अरब सागर में मिलने से पूर्व यह 29 किलोमीटर कर्नाटक में और 52 किलोमीटर गोवा राज्य से होकर बहती है. इस नदी को 'गोवा की जीवन रेखा' भी माना जाता है.

पेन्ना नदी कर्नाटक के नन्ददुर्ग पहाड़ी से निकलकर पूर्व की ओर 970 किलोमीटर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है.

शांभवी नदी का उद्गम चिकमंगलुरु जिले में स्थित कुद्रेमुख से होता है. अरब सागर में मिलने से पूर्व यह मुल्की में नंदी नदी के साथ मिल जाती है.

अर्कावती नदी चिक्काबलपुरा जिले में स्थित नंदी पहाड़ियों से निकलती है. यह कावेरी की एक सहायक नदी है. इस नदी का पानी बेंगलूरु शहर में पीने के लिए प्रयोग होता है.

ये वे महत्वपूर्ण नदियाँ हैं जो कर्नाटक राज्य को महत्वपूर्ण, सुंदर, संपन्न व दर्शनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं. इन नदियों के किनारे अनेकों तीर्थस्थल, झील-झरने व बाँध स्थित है, जहाँ देश विदेश से पर्यटक व श्रद्धालु आकर आनंद के सागर में गोते लगते हैं.

- सुरेश जी. डी.
क्षेका, बेंगलूरु (दक्षिण)

कर्नाटक : एक यात्रा

कर्नाटक या कर्णाटक, दक्षिण भारत का एक प्रमुख राज्य है. इस राज्य का गठन 01 नवंबर, 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अधीन हुआ था. पहले यह मैसूर राज्य कहलाता था. वर्ष 1973 में इसका नाम कर्नाटक कर दिया गया. इसकी सीमाएं पश्चिम में अरब सागर, उत्तर पश्चिम में गोआ, उत्तर में महाराष्ट्र, पूर्व में आंध्र प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में तमिलनाडु एवं दक्षिण में केरल से जुड़ी हुई हैं. इसका कुल क्षेत्रफल 74122 वर्ग मील (1,91,976 वर्ग कि.मी.) है, जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 5.83% है. कुल 21 जिलों वाला यह राज्य भारत का 8वां सबसे बड़ा राज्य है. कर्नाटक की आधिकारिक और सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा कन्नड़ है.

कर्नाटक का बड़ा इतिहास है जिसने समय के साथ अनेक करवटें बदली हैं. राज्य का इतिहास प्रागैतिहास पाषाण युग तक जाता है तथा इसने कई युगों का विकास देखा है. राज्य में मध्य एवं नव पाषाण युगों के साक्ष्य भी पाये गए हैं. हड़प्पा में खोजा गया स्वर्ण कर्नाटक की खानों से निकला था, जिसने इतिहासकारों को 3000 ई.पू. के कर्नाटक और सिंधु घाटी सभ्यता के बीच संबंध खोजने पर विवश किया. तृतीय शताब्दी ई.पू. से पहले अधिकांश कर्नाटक राज्य मौर्य वंश के सम्राट अशोक के अधीन आने से पूर्व नंद वंश के अधीन रहे. सातवाहन वंश को शासन की चार शताब्दियां मिली जिनमें उन्होंने कर्नाटक के बड़े भूभाग पर शासन किया. सातवाहनों के शासन के पतन के साथ ही स्थानीय शासकों, कदंब वंश एवं पश्चिम गंग वंश का उदय हुआ. इसके साथ ही क्षेत्र में स्वतंत्र राजनैतिक शक्तियां अस्तित्त्व में आयीं. कदंब वंश की स्थापना मयूर शर्मा ने 345 ई. में की और अपनी राजधानी बनवासी में बनायी. पश्चिम गंग वंश की स्थापना कोंगणिवर्मन माधव ने 350 ई में किया और अपनी राजधानी तालकाड़ को बनाया.

हाल्मिदी शिलालेख एवं बनवसी में मिले 5वीं शताब्दी की ताम्र मुद्रा के अनुसार इस राज्य प्रशासन ने कन्नड़ भाषा का प्रयोग शुरू किया. इन राजवंशों के उपरांत शाही कन्नड़ साम्राज्य, बादामी चालुक्य वंश, मान्यखेत के राष्ट्रकूट और पश्चिमी चालुक्य वंश आये, जिन्होंने दक्खिन के बड़े भाग पर शासन किया और अपनी राजधानियां वर्तमान कर्नाटक राज्य में बनायीं. पश्चिमी चालुक्यों ने एक अनोखी चालुक्य स्थापत्य शैली भी विकसित की. इसके साथ ही उन्होंने कन्नड़ साहित्य का भी विकास किया, जो आगे चलकर 12वीं शताब्दी में होयसाल वंश के कला व साहित्य योगदानों का आधार बना.

आधुनिक कर्नाटक के अधिकांश भागों पर वर्ष 990-1210 ई. के बीच चोल वंश का शासन रहा. चालुक्य शासक जयसिंह को युद्ध में हराने के पश्चात राजेन्द्र चोल ने तुंगभद्रा नदी के दोनों राज्यों के बीच की सीमा तय की थी. महाराजाधिराज चोल प्रथम (1042-1056) के शासन काल में दन्नड़, कुल्पाक, कोप्पम, काम्पिल्य दुर्ग, पुण्डूर, येतिगिरि एवं चालुक्य राजधानी कल्याणी भी जीत ली गई थी. वर्ष 1053 में राजेन्द्र चोल II द्वारा चालुक्यों को युद्ध में हराने के उपरांत अपनी राजधानी गंगाकोंडचोलपुरम वापस पहुंचने से पूर्व वहां एक विजय स्मारक स्तंभ बनवाया जो आज भी मौजूद है. वर्ष 1066 में पश्चिमी चालुक्य सोमेश्वर की सेना चोल शासक वीर राजेन्द्र से हार गयीं. इसके बाद उसी ने दोबारा पश्चिमी चालुक्य सेना को कुडालसंगम पर मात दी और तुंगभद्रा नदी के तट पर एक विजय स्मारक की स्थापना की. वर्ष 1116 ई. विष्णुवर्धन के नेतृत्व में होयसलों ने चोल साम्राज्य से गंगवाड़ी को जीत लिया था.

प्रथम सहस्राब्दी के आरंभ में होयसला वंश का क्षेत्र में पुनरोद्भव हुआ. इसी समय होयसला साहित्य के सृजन के साथ अनुपम कन्नड़ा संगीत व होयसला स्थापत्य शैली के मंदिर बनें. होयसला साम्राज्य ने अपने शासन के विस्तार के तहत आधुनिक आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के कुछ भागों का विलय कर दिया था. 14 वीं शताब्दी के आरंभ में हरिहर और बुक्का राय ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की एवं वर्तमान बेल्लारी जिले में तुंगभद्रा नदी के तट होसनपट्ट (बाद में विजयनगर) में अपनी राजधानी बसायी. इस साम्राज्य ने अगली दो शताब्दियों तक मुस्लिम शासकों को दक्षिण भारत में आगे बढ़ने पर रोक लगाये रखी.

वर्ष 1565 ई.में सम्पूर्ण दक्षिण भारत ने एक बड़ा राजनैतिक बदलाव देखा, जिसमें तालिकोटा युद्ध में हार के बाद विजयनगर साम्राज्य इस्लामी सल्तनतों के अधीन हो गया. बीदर के बहमनी सुल्तान की मृत्यु के उपरांत बीजापुर सल्तनत ने जल्दी ही दक्खिन पर अधिकार कर लिया और 17वीं शताब्दी के अंत में मुगल साम्राज्य से हारने तक इसे बनाये रखा. बहमनी और बीजापुर के शासकों ने उर्दू एवं फारसी साहित्य तथा भारतीय पुनरोद्धार स्थापत्य कला (इण्डो-सैरेसिनिक) को बढ़ावा दिया. इस शैली का प्रधान उदाहरण गोल गुम्बज है. पुर्तगाली शासन द्वारा भारी कर वसूली, खाद्य आपूर्ति में कमी एवं महामारियों के कारण 17वीं शताब्दी में कोंकणी हिन्दू मुख्यत: गोवा से विस्थापित होकर कर्नाटक में आ गए. लगभग इसी काल में बारदेज़ गोवा से विस्थापित होकर मंगलौरियाई कैथोलिक ईसाई दक्षिण कन्नड़ा में आकर बस गये.

भूगोल: कर्नाटक राज्य में तीन प्रधान मंडल यथा तटीय क्षेत्र करावली, पहाड़ी क्षेत्र मालेनाडु (पश्चिमी घाट) तथा बयालुसीमी क्षेत्र (दक्खिन पठार क्षेत्र) है. राज्य का अधिकांश क्षेत्र बयालुसीमी में आता है और इसका उत्तरी क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा शुष्क क्षेत्र है. कर्नाटक का सबसे ऊंचा स्थल चिकमंगलूर जिले का मुल्लयनगिरि पर्वत है. यहां की समुद्र की सतह से ऊंचाई 1,929 मीटर (6,329 फीट) है.

कृषि हेतु योग्यता के अनुसार यहां की मिट्टी को छ: प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: लाल, लैटेरिटिक, काली, ऍल्युवियो-कोल्युविलय एवं तटीय रेतीली मिट्टी. राज्य में चार प्रमुख ऋतुएं आती हैं. जनवरी,फ़रवरी में शीत ऋतु, मार्च से मई तक ग्रीष्म ऋतु, जून से सितंबर तक वर्षा ऋतु (मॉनसून) और अंतत: अक्टूबर से दिसम्बर पर्यन्त मॉनसूनोत्तर काल. मौसम विज्ञान

के आधार पर कर्नाटक को तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है: तटीय, उत्तरी आंतरिक और दक्षिणी आंतरिक क्षेत्र. शिवमोग्गा जिले का अगुम्बे भारत में दूसरा सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है. कर्नाटक का लगभग 38,724 वर्ग कि. मी. वनों से आच्छादित है जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 20% है.

पिछले दशकों में कर्नाटक राज्य का भारत के सकल घरेलु उत्पाद में योगदान 5.2% रहता था, परंतु अब यह बढ़कर 20.22% पहुँच चुका है. कर्नाटक पिछले कुछ वर्षों में जीडीपी एवं प्रति व्यक्ति जीडीपी के दरों में तीव्रतम विकासशील राज्यों में रहा है. राज्य में बेरोजगार दर 5.3% है. कर्नाटक की लगभग 55% जनसंख्या कृषि और संबंधित गतिविधियों में संलग्न है. राज्य की कुल भूमि का 64.6% कृषि कार्यों में प्रयुक्त हो रही है. इस राज्य में आज भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक बड़े उद्योग यथा हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, नेशनल एरोस्पेस लैबोरेटरीज़, भारत हैवी एलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज़, भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड एवं हिन्दुस्तान मशीन टूल्स आदि स्थापित हैं. यहाँ भारत के कई प्रमुख विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र जैसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड एवं केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान आदि भी स्थित है. मेंगलोर रिफाइनरी एंड पेट्रोकैमिकल्स लिमिटेड एक तेल शोधन केन्द्र है. पिछले दशकों से कर्नाटक विशेषकर बेंगलूरु सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेष उभरा है. इस कारण ही बेंगलूरु को भारत की 'सिलिकॉन घाटी' कहा जाने लगा है.

भारत में कर्नाटक जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी है. यह भारत के सबसे बड़े जैव आधारित उद्योग समूह का केन्द्र भी है. भारत के कुल पुष्प-उद्योग का 75% योगदान कर्नाटक का ही है. भारत के अग्रणी बैंकों में से सात बैंक यथा केनरा बैंक, सिंडिकेट बैंक (विलय के बाद केनरा बैंक), कॉर्पोरेशन बैंक (विलय के बाद यूनियन बैंक), विजया बैंक (विलय के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा), कर्नाटक बैंक, वैश्य बैंक तथा स्टेट बैंक ऑफ मैसूर (विलय के बाद भारतीय स्टेट बैंक) का उद्गम इसी राज्य से हुआ. राज्य के तटीय जिलों उडुपी और दक्षिण कन्नड़ में लगभग प्रति 500 व्यक्ति पर एक बैंक की शाखा है. यह भारत का सर्वश्रेष्ठ बैंक वितरण राज्य है. भारत के रेशम उद्योग का अधिकांश भाग कर्नाटक राज्य में स्थित है. यहां की बेंगलूरु और मैसूर सिल्क विश्वप्रसिद्ध है.

संस्कृति: कर्नाटक राज्य में बहु भाषायी और विभिन्न धार्मिक जाति-प्रजातियां बसी हुई हैं. कन्नड़िगों के अलावा यहां तुलुव, कोडव और कोंकणी जातियां भी बसी हुई हैं. यहां अनेक अल्पसंख्यक जैसे तिब्बती बौद्ध तथा अनेक जनजातियाँ यथा सोलिग, येरवा, टोडा और सिद्धि समुदाय भी हैं. कर्नाटक की परंपरागत लोक कलाओं में संगीत, नृत्य, नाटक, घुमक्कड़ कथावाचक आदि आते हैं. यक्षगान, वीरागेस, कमसेल, कोलाट और डोलुकुनिता यहां की प्रचलित नृत्य शैलियां हैं. मैसूर शैली के भरतनाट्यम यहां जत्ती तयम्मा जैसे पारंगतों के प्रयासों से आज शिखर पर पहुंचा है. कर्नाटक का विश्वस्तरीय शास्त्रीय संगीत में विशिष्ट स्थान है. कर्नाटक संगीत के कई प्रसिद्ध कलाकार जैसे गंगूबाई हंगल, मल्लिकार्जुन मंसूर, भीमसेन जोशी, बसवराज राजगुरु, सवाई गंधर्व आदि कर्नाटक राज्य से ही हैं.

पहनावा: कर्नाटक में महिलाओं की परंपरागत वेशभूषा साड़ी है. कोडगु की महिलाएं एक विशेष प्रकार से साड़ी पहनती हैं जो शेष कर्नाटक से भिन्न होती है. राज्य के पुरुषों का परंपरागत पहनावा धोती है, जिसे यहां पाँचे कहते हैं. राज्य के दक्षिणी क्षेत्र में विशेष शैली की पगड़ी पहनी जाती है जिसे मैसूरी पेटा कहते हैं. उत्तरी क्षेत्रों में राजस्थानी शैली की पगड़ी पहनी जाती है. चावल और रागी राज्य के प्रधान खाद्य पदार्थ हैं. इनके अलावा तटीय क्षेत्रों एवं कोडगु में अपनी विशिष्ट खाद्य शैली होती है. बिसे बेले भात, जोलड रोट्टी, रागी बड़ा, उपमा, मसाला दोसा और मद्दूर वड़ा आदि यहाँ के प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ हैं. मिष्ठान्न में मैसूर पाक, बेलगावी कुंदा, गोकक करदंतु और धारवाड़ पेड़ा अत्यंत मशहूर हैं.

पर्यटन: अपने विस्तृत भूगोल, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वैभवशाली इतिहास के कारण कर्नाटक पर्यटन आकर्षणों से परिपूर्ण है. राज्य में जहां एक ओर प्राचीन शिल्पकला से परिपूर्ण मंदिर हैं तो वहीं आधुनिक नगर भी हैं. एक ओर नैसर्गिक पर्वतमालाएं हैं तो वहीं अनान्वेषित वन संपदा भी है. यहाँ व्यस्त व्यावसायिक कार्यकलापों में उलझे शहरी मार्ग हैं, वहीं दूसरी ओर लम्बे सुनहरे रेतीले एवं शांत सागरतट भी हैं. कर्नाटक राज्य को भारत के राज्यों में सबसे प्रचलित पर्यटन गंतव्यों की सूची में चौथा स्थान प्राप्त है. राज्य के मैसूर शहर में स्थित महाराजा पैलेस इतना आलीशान एवं खूबसूरत बना है कि उसे विश्व के दस सबसे सुंदर महलों में गिना जाता है. राज्य में 25 वन्य जीव अभयारण्य एवं 5 राष्ट्रीय उद्यान यथा बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, बनेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान एवं नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान है. हम्पी में विजयनगर साम्राज्य के अवशेष तथा पट्टडकल में प्राचीन पुरातात्त्विक अवशेष युनेस्को विश्व धरोहर घोषित हो चुके हैं. इनके साथ ही बादामी के गुफा मंदिर तथा ऐहोल के पाषाण मंदिर बादामी चालुक्य स्थापात्य के अद्भुत नमूने हैं. बेलूर तथा हैलेबिडु में होयसाल मंदिर क्लोरिटिक शीस्ट से बने हुए हैं एवं युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बनने हेतु प्रस्तावित हैं. यहाँ बने गोल गुम्बज तथा इब्राहिम रौज़ा दक्खिन सल्तनत स्थापत्य शैली के अद्भुत उदाहरण हैं. श्रवणबेलगोला स्थित गोमतेश्वर की 17 मीटर ऊंची मूर्ति विश्व की सर्वोच्च एकाश्म प्रतिमा है. कर्नाटक के जोग फाल्स को भारत के सबसे ऊंचे एकधारीय जल प्रपात के रूप में सम्मिलित किया गया है.

यहाँ अनेक खूबसूरत सागरतट हैं, जिनमें मुरुडेश्वर, गोकर्ण एवं कारवार सागरतट प्रमुख हैं. यहां के प्रसिद्ध हिन्दू मंदिरों में उडुपि कृष्ण मंदिर, सिरसी का मरिकंबा मंदिर, धर्मस्थल का श्री मंजुनाथ मंदिर तथा शृंगेरी स्थित शारदाम्बा मंदिर हैं जो देश भर से लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं. लिंगायत मत के अधिकांश पवित्र स्थल जैसे कुडालसंगम एवं बसवन्ना बागेवाड़ी राज्य के उत्तरी भागों में स्थित हैं.

- स्वागतिका बल,
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

क्षेत्रीय विशेषताएं - बेंगलूरु, मंगलूरु, उडुपि, हुबली, बेलगावी, शिवमोग्गा, कलबुर्गी, मैसुरु

कर्नाटक दक्षिण भारत का सबसे रोमांचक राज्य है. वहाँ दक्कन का पठार स्थिति है. यहाँ कन्नड़, तुलु, कोकणी भाषा बोली जाती है. यहाँ सूचना जैव प्रौद्योगिकी में सबसे अग्रणी राज्य, टेक्नोलॉजी आईटी का हब है यहां पर, क्रोमाइट एवं मेग्नेसाइट का बड़ा उत्पादन है. यहाँ कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, मलाप्रभा नदियां बहती हैं. यहाँ काली मिट्टी की जमीन एवं भारत की सांस्कृतिक धरोहर है. कर्नाटक राज्य में कुल तीस जिले हैं जिनमें मुख्य रूप से मंगलूरु, उडुपि, बेंगलूरु, हुबली, बेलगावी, शिवमोगा, कलबुर्गी तथा मैसुरु हैं.

1. बेंगलूरु :

भारत के कर्नाटक राज्य की राजधानी है- बेंगलूरु. पूर्व में इस खूबसूरत स्थान को कल्याणपुरी या कल्याण नगर के नाम से जाना जाता था. इसके उत्तर पूर्व में कोलार, उत्तर पश्चिम में तुमकुल, दक्षिण पश्चिम में मंडया, दक्षिण में चामराजनगर जिला तथा दक्षिण पूर्व में तमिलनाडु राज्य है. यह भारत गणराज्य का तीसरा सबसे बड़ा शहर और पांचवा सबसे बड़ा महानगर क्षेत्र है. यह क्षेत्र दक्षिण भारत के दक्कन के पठारी क्षेत्र में 900 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. केंद्र व राज्य सरकार की स्वीकृति पर इसका नाम 1 नवंबर 2014 को बेंगलोर से बेंगलूरु रखा गया. भारत की सिलिकॉन वैली (आईटी राजधानी-बेंगलूरु) या फिर कहें नई पीढ़ी का शहर, 1537 में बसाया गया है जो आज कामयाबी की बुलंदियों को छू रहा है. बेंगलुरु के अंतर्गत 103 से भी अधिक केंद्रीय एवं राज्य अनुसंधान और विकास संस्थानें हैं. साथ ही, भारतीय विज्ञान संस्थान, राष्ट्रीय लॉ स्कूल, 45 से अधिक इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज बेंगलूरु को शिक्षा एवं अनुसंधान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान देते हैं. अपने सुहाने मौसम के कारण बेंगलूरु को 'भारत का उद्यान' कहते हैं. यहां पर दशहरा (मैसूर की पहचान), दीपावली, गणेश चतुर्थी, उगादि, संक्रांति, ईद उल फित्र, क्रिसमस आदि त्योहार श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाए जाते हैं. साथ ही यहां पर बेंगलूरु का अंतर्राष्ट्रीय कला महोत्सव मनाया जाता है. यहां पर बसवंगुड़ी बुल टेंपल (भगवान शिव के वाहन नंदी को समर्पित), शिव मूर्ति (65 मीटर ऊंची), इस्कॉन मंदिर (राधा कृष्ण जी का मंदिर), टिपू पैलेस व किला बेंगलूरु (मुगल शैली की वास्तुकला), बेंगलूरु पैलेस, लालबाग, कब्बन पार्क, गांधी भवन, नेहरू प्लैनेटोरियम, बन्नेरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क, विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय (मुख्य आकर्षण मोबाइल विज्ञान प्रदर्शन) है. इसके अतिरिक्त यहां पर कांचीपुरम् सिल्क आसानी से मिलता है.

2. मंगलूरु :

यह कर्नाटक राज्य के दक्षिणी कन्नड़ जिले में अरब सागर के तट पर स्थित है. इसे हम मंगलूर और मंगलूरु भी कहते हैं. इस नगर का यह नाम यहां की स्थानीय देवी मंगला देवी के नाम पर पड़ा है. यह अरब सागर और पश्चिमी घाट के बीच तथा नेत्रावती व गुरुपूरा नदियों के संगम स्थल पर बसा हुआ है. इसे प्राचीन काल में 'नौरा' कहकर पुकारा जाता था. शिक्षा की दृष्टि से यहां पर मंगलूरु विश्वविद्यालय अपना एक अलग ही स्थान रखता है. यहां के प्राचीन समुद्र तट, चौड़ी सड़कें और वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं. यहां की मंगला देवी मंदिर, (केरल की राजकुमारी की याद में) सैंट अलोयसियस चर्च, श्री शरावु महागणपति मंदिर, लाइट हाउस हिल गार्डन, श्रीमंथी बाई मेमोरियल म्यूजियम,

पिलीकुला बायोलॉजिकल पार्क, गोकर्णनाथेश्वरा मंदिर (भगवान शिव को समर्पित) इस स्थान की अलग ही पहचान बना देते हैं. खाने-पीने के शौकीन यहां गोली भाजी, बांगड़े पुलीमूंची, नीर डोसा, बादाम मिल्क, तुलुवा, मंगलोरियन बन्स आदि चीजों का जायजा ले सकते हैं. यह शहर काजू के लिए प्रसिद्ध है. पर्यटक यहां काजू व काजू से बनी मिठाई खरीदते हैं इसके अतिरिक्त रेशम की साड़ी, हाथी के दांत व चंदन की लकड़ियों से बनी कलाकृतियां भी प्रसिद्ध है.

3. उडुपि :

कर्नाटक राज्य का उडुपि, जिसे को तुलु भाषा में ऑडिपू कहते हैं. यह बेंगलुरु से 407 किलोमीटर दूरी पर स्थित यह शहर खुद में कई हैरतों को समेटे हुए है. उडुपि जिले के उत्तर में उत्तर कन्नड़ जिला, उत्तर पूर्व में शिमोगा जिला, पूर्व में चिकमगलूर जिला और दक्षिण में दक्षिण कन्नड़ जिला है. उडुपि एक लुभावनी सुंदरता की भूमि है. यह पश्चिमी घाटों और अरब सागर की पहाड़ियों के बीच स्थित है. यहां के शहरों की गलियों से यदि आप गुजरोगे तो श्वेत रंगों से बनी बेहद खूबसूरत रंगोलियां, घरों के आंगन में दिए व अगरबत्तियों से सजे तुलसी चौरे, हर सुबह को मनमोहक मनोरम बना देते हैं. गजरे की खुशबू से सजी गृहणियां, लुंगी पहने और गमछा टांगे यहां के पुरुष एक अलग ही प्रकार की गरिमा को अपने अंदर समाये हुए हैं. शहर से करीब 35 कि. मी. दूरी पर परिका में नेचुरोपैथी और आयुर्वेदिक इलाज भी होता है. अजब गजब स्वाद का शहर है उडुपि! इस छोटे परंतु बेहद खूबसूरत शहर ने दुनियाभर को अपना मसाला डोसा और कटहल के पत्तों में लपेटकर दी जाने वाली इडली दी है. उडुपि के व्यंजनों के अलावा यहां की गड़बड़ आइसक्रीम की अधिक मांग है. पर्यटकों के लिए उडुपि में श्री कृष्ण मंदिर, सेंट मैरी दीप, अनगुछी विनायक मंदिर (ऋषि परशुराम ने बनाया), चतुर्मुखा बसादी, चतुर्मुखा (जैन मंदिर), मालपे बीच, कॉप बीच आदि पर्यटन व धार्मिक स्थल हैं. श्री कृष्ण मंदिर के तालाब में मंदिर का खूबसूरत प्रतिबिंब दिखाई देता है. कुछ समय पहले मुस्लिम संप्रदाय को खाना खिलाकर इस मंदिर ने धार्मिक सौहार्द का एक उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया है. उडुपि शहर ने हमें संतोष हेगडे, पूजा हेगडे, दीपिका पादुकोण, ऑस्कर फर्नांडिस, रवि शास्त्री, के. शिवराम कारंत आदि अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व दिये हैं.

4. हुबली :

कर्नाटक राज्य का एक और प्रमुख ऐतिहासिक नगर है- हुबली. यह धारवाड़ से 24 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है और इसे धारवाड़ के जुड़वा शहर के नाम से भी जाना जाता है. हुबली उत्तरी कर्नाटक का वाणिज्य केंद्र है. यह पूर्व में रायका हुगली या इलेया पुरावदा हल्ली और पुरबल्ली के नामों से भी जाना जाता है. हुबली अपने सूत कातने और विभिन्न प्रसंस्करण मिलों के लिए प्रसिद्ध है. यहां पर कपास व मूंगफली की फसल मुख्य रूप से उगाई जाती है. इंदिरा गांधी ग्लास हाउस की प्रसिद्ध प्रदर्शनी, यहां आए पर्यटकों का रुझान बढ़ा देती है. इसके अतिरिक्त 200 एकड़ के क्षेत्र में फैली 110 वर्ष पुरानी उन्कल झील शामिल है. यहां पर पर्यटक शाम के समय सूर्यास्त का सुंदर दृश्य देखने को उमड़ते हैं. यहां का वातावरण व हरियाली देखकर पर्यटक आनंदित हो जाते हैं. हुबली रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर श्री सिद्धरुधा स्वामी जी रेलवे स्टेशन रखा गया है. यहां पर शानदार रेल म्यूजियम बनाया गया है, जो लोगों को रेलवे के गौरवशाली इतिहास के बारे में बताता है.

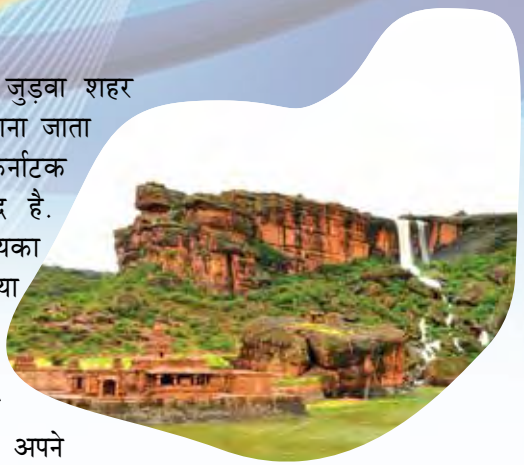

5. बेलगावी :

प्राकृतिक और ऐतिहासिक खज़ानों से भरा हुआ कर्नाटक राज्य का बेलगाम, जिसे बेलगावी और बेलगांव भी कहा जाता है, पश्चिमी घाटों में सबसे पुराना है. यह स्थान कर्नाटक की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर स्थित है. बेलगांव ने पूरे देश के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था. बेलगांव में वह जेल भी है जहां पर भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विनायक दामोदर सावरकर को रखा गया था. बेलगावी, समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का गवाह है जहाँ रीति रिवाज और परंपराएं कन्नड़ और मराठी दोनों संस्कृतियों से प्रभावित है. शैक्षिक दृष्टिकोण में जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, साउथ कोकण सोसाइटी, के अलावा कई मेडिकल कॉलेज भी है. पर्यटन के लिए यहाँ पर बेलगांव का किला (यह वास्तुशिल्प का चमत्कार है), गोकाक जलप्रपात (171 फीट की ऊंचाई से), येल्लूर का किला (मराठा, पेशवा, होयसला और बहमनी का साम्राज्य), कमला बस्ती (कला प्रेमियों के लिए), जंबोटी हिल्स (एडवेंचर के शौकीनों के लिए) आदि देखने लायक स्थल है.

6. शिवमोग्गा :

शिमोग्गा, जिसका आधिकारिक नाम शिवमोग्गा है, तुंगा नदी के किनारे स्थित है. यह चारों ओर से हरे-भरे धान के खेत, सुपारी व नारियल के वृक्षों से घिरा हुआ है. यह पश्चिमी घाट के पहाड़ी क्षेत्र का प्रवेश द्वार होने के कारण इसे 'मल्नाड का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है. शिमोग्गा अर्थात शिव का मुख, यह बेंगलुरु से 275 किलोमीटर की दूरी पर तुंगा नदी के किनारे स्थित है. शिवमोंग्गा में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चर्च 'सैक्रेड हार्ट कैथ्रेडल' अपने वास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्ध है. इसमें लॉर्ड जीसस क्राइस्ट की जीवंत मूर्ति कैथ्रेडल को बेहद खास बना देती है. साथ ही तुंगा नदी पर बना हुआ 'तुंगा डैम' जिसकी लंबाई लगभग 535 मीटर है, यात्रियों को सुखद अनुभव प्रदान करता है. यहां पर 1853 में अंग्रेजों द्वारा शुरू किया गया गवर्नमेंट हाई स्कूल, शिवमोग्गा का सबसे पुराना शिक्षा संस्थान है. शिवमोग्गा में एपीएमसी (कृषि उपज बाजार समिति) के द्वारा सुपारी, नारियल, चावल, मिर्च आदि वस्तुओं का विपणन होता है. यह अक्सर कर्नाटक राज्य के 'चावल के कटोरे' के रूप में भी जाना जाता है. शिमोग्गा रेलवे स्टेशन बेंगलूरु, मैसूर, चिकमंगलूर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है. यहां पर पर्यटन के लिए जोगफॉल्स (खूबसूरत झरना), भद्रा बांध (भद्रा नदी पर बनाया हुआ), अमृतपुरा (अमृतेश्वर मंदिर), पश्चिमी घाटों का ताज (कोडाचाद्री), अगुंबे (दक्षिण का चेरापूंजी) आदि लुभाने वाले स्थल हैं.

7. कलबुर्गी :

कलबुर्गी, (कन्नड़ में इसका अर्थ कला /मजबूत पत्थर) जिसका पहले नाम गुलबर्गा (उर्दू में इसका अर्थ फूल और बगीचों का शहर) था. यह स्थान कर्नाटक की राजधानी बेंगलूरु के उत्तर में दक्कन के पठार पर स्थित है. कलबुर्गी अपनी वास्तुकला, ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के कारण जाना जाता है. कलबुर्गी तुअर दाल व चूना पत्थर के लिए भी प्रसिद्ध है. यहां पर काली मिट्टी की अधिकता पाई जाती है. यहां प्रमुख नदियां कृष्णा और भीमा बहती हैं. पर्यटन की दृष्टि से यहां गुलबर्गा किला (राजा गुलचंद द्वारा निर्माण), शरण बसवेश्वर मंदिर (निर्माण लिंगायत संत शरण बसवेश्वर), सूफी संत हजरत ख्वाजा बांदा नवाज का दरगाह भी है, इस दरगाह में उर्दू, अरबी, और फारसी में लिखी गई किताबें है, इसके अतिरिक यहाँ कोरनटी हनुमान जी के दर्शन भी कर सकते हैं.

हम कह सकते हैं कि 'अनेकता में एकता' को समाए हुए कर्नाटक राज्य अपने आप में एक समृद्ध राज्य है. कर्नाटक राज्य भारत का सबसे अधिक चंदन उत्पादित करने वाला राज्य है. साथ ही, यहां पर 70% कॉफी का उत्पादन और 70% शहतूत रेशम का उत्पादन भी होता है. इसके अतिरिक्त यहां पर लगभग 408 से भी अधिक बाघ हैं. कर्नाटक में मैसूर भारत का एक ऐसा राज्य है जहां पर आज भी संस्कृत भाषा में अखबार छपता है. इसके साथ ही यहां के दो गांव मट्टूरु और होसहल्ली हैं, जहां आज भी संस्कृत भाषा बोली जाती है. यह भारत का एक मात्र ऐसा राज्य है जिसका अपना राज्य गान है 'जयभारत जननिय तनुजाते जय' हे कर्नाटक के साथी.'

8. मैसुरु :

भारत के कर्नाटक राज्य में खूबसूरत मैसुरु शहर, राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है. यह नगर राजधानी बेंगलूरु से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दक्षिण में केरल राज्य की सीमा पर स्थित है. मैसुरु जिले को पर्यटकों का स्वर्ग भी कहा जाता है. यहां पर मैसुरु का दशहरा उत्सव, मैसुरु महल, जगनमोहन पैलेस, चामुंडी पहाड़ी, सैंट फिलोमिना चर्च, आदि स्थित है. मैसुरु से थोड़ी दूरी पर ही हमें कृष्णराज सागर डैम, वृंदावन गार्डन, जैसे मनमोहक स्थल देखने को मिलते हैं. इसके अतिरिक्त यहां पर केंद्रीय विद्यालय संगठन का शिक्षा एवं प्रशिक्षण आंचलिक संस्थान भी है. सोमनाथपुर के मंदिर के अलावा यहां पर चंदन का साबुन, रेशमी वस्त्र, खूबसूरत कलात्मक वस्तुएं भी तैयार की जाती है.

मैसुरु महल, मैसुरु जिले की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करता है क्योंकि यह शानदार महल भारत के सबसे बड़े महलों में से एक है. यहां की छत कांच से बनी हुई है, दीवारों पर लगी खूबसूरत तस्वीरें व स्वर्णिम सिंहासन इस महल की खासियत है. इस महल में मैसुरु के राजा वडियार रहा करते थे. मैसुरु का दशहरा भी अन्य दशहरों से अलग है क्योंकि यहां न राम भगवान होते हैं और न हीं रावण का पुतला जलाया जाता है बल्कि देवी चामुंडा द्वारा राक्षस महिषासुर का वध करने पर दशहरा धूमधाम से मनाया जाता है. सदियों से चली आ रही इस परंपरा में मैसुरु महल को रोशनी से सजाकर अनेक तरह के धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं. मैसुरु का चिड़ियाघर विश्व के सबसे पुराने चिड़ियाघरों में से एक है. इस चिड़ियाघर में लगभग चालीस से भी अधिक देशों से लाए गए जानवरों को रखा गया है. शेर यहां के आकर्षण का केंद्र है.

- प्रवीण कुमार
स्टा. म. वि., बेंगलूरु

Karnataka Shines

- Purandara Dasa is known to be the main pillar of Carnatic Music. In fact, Pandit Bhimsen Gururaj Joshi who is the father and pillar of Hindustani Classical Music also belongs to Karnataka.
- Karnataka has the most number of waterfalls in India. The state is known to harbour in excess of 35 waterfalls.
- Have you heard of the Karanji Lake in Mysore? Do visit, it's a great place. It is surrounded by the Butterfly Park and has the biggest "walk-through aviary" in India.
- The beautiful and extremely serene village of Mattur or Mathur, uses Sanskrit as a language for communication. It is called Sanskrit Village.
- Karnataka, produces the largest amount of coffee. The first plantation was cultivated in Chikmagalur centuries ago. Karnataka is the largest exporter of coffee.
- Rani Chennamma, the Queen of Princely state of Kittur was the first women to lead an army against the British.
- The city of Mysore was the first to publish a weekly newspaper in Kannada language in the year 1859.
- The Karnataka Khadi Gramodyoga Samyukta Sangha or KKGSS is the only division in the whole country with the permission to sew and supply the 'Flag of India.'
- Lalbagh, Bangalore's botanical garden has the oldest rock formations on the earth which is around 3,000 million years old originated before the dinosaurs.
- Built in the year 1891, the Oriental Library, located in Mysore is the oldest library in India.
- The Bangalore Palace belongs to the Mysore Royal Family, is known for its architectural splendour.
- Bangalore resonates as a "Rocking City". Innovative start-ups are popping like daisies every other day. Its GDP is projected to grow at a massive 8.5% till 2035 and will retain its position for the next 15 years.
- The State boasts of two thermal plants - Raichur Thermal Power Station and the Bellary Thermal PowerStation
- The Kolar Gold Mine used to be one of the largest Gold Mines of our nation.
- The State has the highest population of Elephants and the Second largest population of Tigers.
- The first private radio station was set up by Professor MV Gopalaswamy in Karnataka in the year 1935.
- Karnataka is a producer of black ink that is used in elections.
- The Jog Falls is the second highest plunge waterfall in India. Located in Sagar taluk of Shimoga district, The falls drop down from a height of 253 m (830 ft).
- This statue of Bahubali is 58 feet tall and is the largest monolith statue in the world. Carved out from a single block of granite. It is situated at Shravanabelagola.
- The hilly region of Ramanagara is the village of the legendary villain "Gabbar Singh" from the movie 'Sholay.' Ramnagara is located just 60 km away from Bangalore.
- The oldest surviving and fabled manuscript written by Chanakya or Kautilya, the Arthashastra can be found in the Oriental Research Institute. It was originally set up as the Mysore Oriental Library in the year 1891.
- The Bangalore Club has revealed an interesting and odd fact about former British Prime Minister, Winston Churchill, that he owes INR 13 to the club in unpaid bills.

- J Subramaniam
STC Bengaluru

FLORA AND FAUNA OF KARNATAKA

Karnataka is a land of diverse flora and fauna. Out of the total geographical area of the country, about approx. 23% is covered under forests. Many of the fauna species prevalent in the state have been recognized as an endangered species. Tourists visiting the state of Karnataka are mesmerised by the wild life flourishing in the lap of nature in this state. Karnataka is endowed with magnificent forests ranging from majestic evergreen forests of the Western Ghats to the scrub jungles of the plains. The Western Ghats of Karnataka are one of 25 global priority hotspots for conservation. Several precious species such as Sandalwood, Rosewood, Teak, White cedar grow naturally in these forests. Its forests are endowed with rich wildlife, harbours 25 per cent of Asiatic elephant population and 10% of tiger population. There are 5 national parks and 21 sanctuaries comprising about 17% of total forest area as protected area for biodiversity and wildlife. The state ranks 4th among all the states and union territories in respect of area covered under forest.

Endangered are fauna that can be spotted in Karnataka: Gyps indicus (The Indian Vulture) and two species of frogs (Indira gundia) found only in gundia range, Sakleshpur and (Micrixalus kottigeharensis) found only near kottigehara, Chikkamagaluru district, tiger, Indian elephant, lion-tailed macaque, turtle and dhole, the Indian white dog. Karnataka is one of those places in India where one can visit fish sanctuaries as well.

There are six fish sanctuaries in Karnataka, which are home to 289 types of fish. More than 35 fish sanctuaries have been reported, and new are being set up by local communities.

National Parks of Karnataka

Name of national park	Park area (sq. km)	District	Best time to visit
Anshi National park	250	Uttara Kannada	November to June
Bandipur National Park	874	Mysore	June to October
Kudremukh National Park	600	Chikmagalur	December to May
Nagarhole National Park	643	Kodagu	September to March
Bannerghatta National Park	104	Bengaluru North	All seasons

These national parks of Karnataka are amongst the best national parks in India. All these parks are blessed with varied landscapes and diverse species, which make it one of the best places for photographers, conservationists and explorers. No other place in India has an organised flora & fauna like Karnataka. Anshi national Park is one of the least explored national parks and to one's astonishment the place is home to around 200 bird species.

Wildlife and Bird sanctuaries

With eighteen wildlife and three bird sanctuaries, Karnataka is the ultimate wildlife destination of India. In these sanctuaries, some of the threatened species are sheltered. There are three bird sanctuaries in Karnataka-Attiveri Bird sanctuary, Gundavi Bird Sanctuary and Ranganthittu Bird sanctuary that attracts migratory birds from Australia, Siberia and even North America. Painted Stork, Asian open bill stork, Common spoonbill, Woolly-necked stork, Black-headed ibis, Lessor whistling Duck, Indian Shag and Stork-billed kingfisher are the famous species of birds, seen in the bird sanctuaries of Karnataka.

Wildlife & bird sanctuaries in Karnataka

Adichun-changiri Peacock Sanctuary, Arabithittu Wildlife Sanctuary, Attiveri Bird Sanctuary, BRT Wildlife Sanctuary, Bhadra Wildlife Sanctuary, Brahmagiri Wildlife Sanctuary, Cauvery Wildlife Sanctuary, Dandeli Wildlife Sanctuary, Daroji Bear Sanctuary, Gudavi Bird Sanctuary, Mookambika wildlife Sanctuary, Pushpagiri wildlife sanctuary and Talakaveri Wildlife Sanctuary

Tiger reserves : Tiger reserves of Karnataka is a popular tourist destination as it takes pride in housing the highest tiger population in India. According to a census in 2014, there

are about 406 tigers living unperturbed in Karnataka. There are six tiger reserves and these reserves portray nature at its ultimate best. Bandipur, a prime tiger destination is prone to poaching. To restrict such activities and for proper forest management, an android application Hejje is launched. Karnataka was the first to harness this technology.

Fish Sanctuaries in Karnataka

Multi-hued fish, sea turtles and dolphins- Welcome to the underwater world of Karnataka. The tropical waters are teaming with marine life so clear that one can see fish hiding in the corals and swim across in sight. There are 289 type of fish, which are spotted in the fishing sanctuaries of Karnataka, out of which 41% are extinct. Mahaseer, Puntius, pulchellus, long finned albino, Tiger barbes, labeo fimbriatus, Bagarius yarrelli are some of those species. Native freshwater fish in India are declining rapidly. Efforts are on to set up a dedicated institute and society on fish conservation.

When it comes to a destination and blissful natural diversity and to get ourselves connected to that supreme power God, we can find that in the flora and fauna. Only thing is that we have to spare some time from our hectic lifestyle and by that we can channelize our mind, body and soul towards that reservoir of energy known as nature.

- Ankur Narula
STC Bengaluru

हमें गर्व है

एक सलाम, संपादक मंडल का 'संपादक' के नाम

अपने शब्दों से, जो हमसे-आपको और आपको-हमसे, दिल से जोड़े.
जो अपने संपादन में कोई कसर ना छोड़े..
शब्दों का ऐसा भंडार, मानो समंदर में हिलोरे...
हमारी आपकी, प्यारी संपादक डॉ. सुलभा कोरे..

हम पत्रिका को स्तरीय बनाने के लिए अक्सर नए-नए सुझाव देते रहते हैं परंतु पत्रिका को उन मानदंडों पर खरा उतारने के लिए जो अपना सर्वस्व झोंक देती है, जो पत्रिका प्रकाशन की रीढ़ हैं, उन्हें हम नजरंदाज कर देते हैं.

जी हाँ, आज हम बात कर रहे हैं हमारी, आपकी, हम सभी की पत्रिका की संपादक, डॉ. सुलभा कोरे जी की. डॉ. कोरे की तारीफ में कुछ कहना शायद सूरज को दीया दिखाने जैसी बात होगी. जितनी आप सहज हैं, उतनी ही वस्तुनिष्ठ! आपका स्वभाव जितना सरल है, निर्णय लेने की क्षमता उतनी ही तथ्यपरक.

आप अपने लेखों के चयन, संपादन एवं रचनात्मकता के इंद्रधनुष निचोड़ कर दोनों पत्रिकाओं को सतरंगी कर देती हैं, चाहे वह 'यूनियन धारा' हो या 'यूनियन सृजन'.

आपको केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 के लिए हिंदीतर भाषी लेखक पुरस्कार प्राप्त हुआ है. यह पुरस्कार आपको आपकी हिन्दी काव्य संकलन 'तासीर' के लिए मिला है, जिसके अंतर्गत ₹1 लाख की पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ हैं.

साथ ही, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से आपको वर्ष 2019-20 के लिए रवींद्रनाथ टैगोर फ़ेलोशिप/ स्कॉलरशिप भी प्राप्त हुई है. यह स्कॉलरशिप आपको 'शिव और शिवालय - ज्ञात से अज्ञात तक' इस अनुसंधान कार्य हेतु प्राप्त हुई है.

पत्रिका का संपादक मण्डल, प्रकाशन मण्डल एवं संपादकीय सलाहकार समिति की ओर से आपको अनेकानेक बधाई! आप आगे भी इसी प्रकार भाषा की सेवा में जुड़ी रहें, शब्दों के मोती पिरोकर नई रचनाएं हमें परोसती रहें एवं स्वयं के साथ-साथ बैंक का भी नाम रोशन करें, ऐसी हमारी कामना है. आपको हमारी अनंत शुभकामनाएं.

- सावन सौरभ
राजभाषा कार्या. विभाग, के. का.

कर्नाटक की विभूतियां

किसी भी राष्ट्र की विभूतियाँ स्वयं की आंतरिक शक्तियों का उपयोग करते हुए अपनी दूर दृष्टि द्वारा राष्ट्र निर्माण में सहयोग देती है. वैसे यह एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ विशिष्ट व्यक्ति राष्ट्रीय चेतना को विकसित करते हैं. राष्ट्र के प्रति मन, वचन, कर्म से संवेदनशील होना, सजग होना, राष्ट्रहितार्थ अपनी निजता को त्यागकर सर्वस्व बलिदान करने की उनकी भावना राष्ट्र की सुरक्षा व स्वाभिमान को अक्षुण्ण रखती है. यही वह भावना है जो सभी देशवासियों को आपस में जोड़े रखने व राष्ट्रीयता के मूल तत्व को उजागर करती है. यहाँ हम कर्नाटक राज्य में जन्में कुछ ऐसे विभूतियों की चर्चा करेंगे जिन्होंने न केवल कर्नाटक वरन नये भारत के निर्माण की नींव मजबूत की.

राजा वीरा मदकरी नायक: कर्नाटक में मदकरी नायक (1742-1782) को साहस एवं वीरता का प्रतीक तथा कर्नाटक की शान माना जाता है. बारह वर्ष की आयु में चित्रदुर्ग के सिंहासन पर बैठने वाले मदकरी नायक चित्रदुर्ग के अंतिम नायक के रूप में जाने जाते हैं. चित्रदुर्ग के शत्रुओं ने जब उन पर आक्रमण किया तो बेदा वाल्मीकि राजाओं ने अपनी वफादारी दिखते हुए राज्य की रक्षा की. वर्ष 1759-60 में रायदुर्ग, हरपनहल्ली और सवनूर के एक संयुक्त मोर्चे ने होसकेर के निकट आक्रमण किया जिसमे वीर मदकरी नायक विजयी हुए. मदकरी नायक के समय में चित्रदुर्ग दक्षिण का एक शक्तिशाली राज्य बन चुका था जिसके कारण हैदर अली और पेशवा जैसी कुछ प्रमुख शक्तियों ने एक दूसरे के खिलाफ उसकी सहायता प्राप्त करने की कोशिश की. नायक ने पहले बांकापुर, निजगल, बिदनूर और मराठों के खिलाफ हैदर अली के अभियान में उसकी मदद की. इसके बावजूद वर्ष 1777 में हैदर अली ने चित्रदुर्ग पर चढ़ाई कर दी. लेकिन महीनों तक चली घेराबंदी असफल साबित हुई. उसके बाद एक समझौता हुआ जिसके तहत नायक को तेरह लाख मुद्राओं (पगोडा) का जुर्माना अदा करना पड़ा. मराठा अभियान के समाप्त हो जाने पर हैदर ने एक बार फिर चित्रदुर्ग पर चढ़ाई की, लेकिन कई महीनों तक उसे सफलता नहीं मिली. पालेयगार के सेवा में कार्यरत कुछ विश्वासघाती मुसलमान अधिकारियों की सहायता से चित्रदुर्ग पर 1779 में विजय प्राप्त कर ली गयी. मदकरी नायक और उनके परिवार को कैदियों के रूप में श्रीरंगपट्टना भेज दिया गया और उनकी शक्ति को खत्म करने के इरादे से चित्रदुर्ग के 20,000 सैनिकों को श्रीरंगपट्टना (मैसूर) के द्वीप पर भेज दिया गया. इस विजय के बाद चित्रदुर्ग के राजकोष से हैदर को अपार धन संपदा प्राप्त हुई. बाद के वर्षों में टीपू सुल्तान द्वारा धोखा से नायक की हत्या कर दी गयी. दुर्भाग्य से भारत के इस वीर सपूत को इतिहास में वो जगह नहीं मिली जिसके वह हकदार थे.

नादप्रभु केम्पेगौड़ा: हिरिया केम्पेगौड़ा का जन्म येलहंका में हुआ था. उनके पिता का नाम वोक्कालिगा केम्पानंजे गौड़ा था जो विजयनगर साम्राज्य के येलहंकानाडु प्रांत के प्रधान थे. केम्पेगौड़ा बचपन से ही अपने नेतृत्व कौशल के लिए विख्यात थे. इन्होंने प्रारंभिक नौ वर्षों तक हेसरघट्टा के पास ऐवरुकंदपुरा (ऐगोंडापुरा) के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की. तदनंतर, वर्ष 1513 में अपने पिता से प्रधानता ग्रहण की. ऐसा कहा जाता है कि एक बार जब केम्पेगौड़ा अपने मंत्री वीरन्ना और सलाहकार गिद्दे गौड़ा के साथ शिवनासमुद्र (हेसरघट्टा के पास) की ओर शिकार अभियान के लिए गए थे, उसी दौरान उन्हें भविष्य के एक बड़े नगर के निर्माण की दृष्टि मिली. उन्होंने प्रस्तावित शहर में किला, छावनी, टैंक (जलाशय), मंदिर और सभी व्यवसायों के लोगों के रहने की कल्पना की. उन्होंने बेंगलूरु पुणे राजमार्ग पर 48 किलोमीटर दूर शिवगंगा रियासत को जीत लिया. इसके बाद उन्होंने डोम्लूर पर भी कब्जा कर लिया. इस विशाल वन क्षेत्र के भीतर विजयनगर सम्राट अच्युतराय की आवश्यक शाही अनुमति से उन्होंने 1537 ईस्वी में बेंगलूरु किले और शहर का निर्माण किया तथा अपनी राजधानी येलहंका से नए बेंगलूरु में स्थानांतरित कर दिया. इस दौरान उन्होंने कई कन्नड़ा शिलालेख भी बनवाए. केम्पेगौड़ा अपने समय के सबसे सुशिक्षित और सफल शासकों में से एक थे. उन्हें अपने सामाजिक सुधारों और मंदिरों तथा जलाशयों के निर्माण में योगदान के लिए भी जाना जाता है.

मध्वाचार्य (1238-1317): भारत में भक्ति आन्दोलन के समय के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिकों में से एक थे. वे पूर्णप्रज्ञ व आनन्दतीर्थ के नाम से भी प्रसिद्ध हैं. वे तत्ववाद के प्रवर्तक थे जिसे द्वैतवाद के नाम से जाना जाता है. द्वैतवाद, वेदान्त की तीन प्रमुख दर्शनों में एक है. मध्वाचार्य को वायु का तृतीय अवतार माना जाता है (हनुमान और भीम क्रमश: प्रथम व द्वितीय अवतार थे). इनका जन्म दक्षिण कन्नड जिले के उडुपी शिवल्ली नामक स्थान के पास पाजक नामक एक गाँव में सन् 1238 ई में हुआ. अल्पावस्था में ही ये वेद और वेदांगों के अच्छे ज्ञाता हुए और संन्यास लिया. शंकर मत के अनुयायी अच्युतप्रेक्ष नामक आचार्य से इन्होंने विद्या ग्रहण की और गुरु के साथ शास्त्रार्थ कर इन्होंने अपना एक अलग मत बनाया जिसे 'द्वैत दर्शन' कहते हैं. इनके अनुसार विष्णु ही परमात्मा हैं. रामानुज की तरह इन्होंने श्री विष्णु के आयुधों, शंख, चक्र, गदा और

पद्म के चिन्हों से अपने अंगों को अंलकृत करने की प्रथा का समर्थन किया. उडुपी में श्रीकृष्ण के मंदिर का स्थापन किया, जो उनके सारे अनुयायियों के लिये तीर्थस्थान बन गया.

हरिहर राय व बुक्का राय (1336-1377): हरिहर राय को महान विजयनगर साम्राज्य की स्थापना का श्रेय दिया जाता है. प्रारम्भ में वे और बुक्का राय राज्य की सेना सैनिक थे. जिनका जबरिया धर्मांतरण मुस्लिम आक्रमणकारियों ने करा दिया. इस बात से वे बुरी तरह क्षुब्ध थे. एक सन्यासी विद्यारण्य स्वामी की प्रेरणा और आशीर्वाद से हरिहर और बुक्कराय ने आक्रमणकारियों को युद्ध में हराया और तुंगभद्रा नदी के तट पर महान विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की. श्रृंगेरी मठ को दिए गए अनुदान से संबंधित सन 1346 के एक शिलालेख में हरिहर राय का उल्लेख पूर्वी एवं पश्चिमी समुद्रों के बीच स्थित संपूर्ण देश के शासक के रूप में किया गया है और इनकी राजधानी का वर्णन शिलालेख में विद्यानगर के रूप में किया गया है. हरिहर राय को एक केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था और सुव्यवस्थित शासन का श्रेय दिया जाता है, जिससे इनकी प्रजा को शांति, समृद्धि और सुरक्षा प्राप्त हुई. हरिहर प्रथम के उत्तराधिकारी बुक्का प्रथम थे, जो संगम राजवंश के पांच शासकों (पंचसंगमों) में सर्वाधिक लोकप्रिय हुए.

भारत रत्न सर एम. विश्वेश्वरय्या: ईंट, पत्थर, लोहे और सीमेंट से इमारत बनाने वाले इंजीनियर को सामाजिक शिल्पकार माना जाता है. इंजीनियरिंग कौशल के साथ यदि सामाजिक सरोकार भी जुड़ जाय है तो इंजीनियर महान बन जाता है. गुलामी के दौर में अपनी प्रतिभा से भारत के विकास में योगदान देने वाले सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या एक ऐसे ही युगद्रष्टा इंजीनियर थे. क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी बांध को ऊंचा किए बिना उसकी भंडारण क्षमता को कैसे बढ़ाया जा सकता है.

विश्वेश्वरय्या को पुणे के पास स्थित खड़कवासला बांध की जल भंडारण क्षमता में बांध को ऊंचा किए बिना भंडारण क्षमता बढ़ाने हेतु पहली बार ख्याति मिली थी. वर्ष 1883 में इंजीनियरिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या का पसंदीदा विषय सिविल इंजीनियरिंग था. सर विश्वेश्वरय्या एक कुशल प्रशासक भी थे. अँग्रेजी शासन काल के दौरान वर्ष 1909 में उन्हें मैसूर राज्य का मुख्य अभियंता व रेलवे सचिव नियुक्त किया गया. कृष्णराज सागर बांध के निर्माण के कारण मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या का नाम पूरे विश्व में सबसे अधिक चर्चा में रहा था. आज कृष्णराज सागर बांध से निकली नहरों से रामनगरम, कनकपुरा, मंड्या, मालवली, नागमंडला, कुनिगल और चन्नपटना तहसीलों की करीब सवा लाख एकड़ से भी अधिक भूमि की सिंचाई होती है तथा मैसूर एवं बेंगलूरु जैसे शहरों को विद्युत एवं पेयजल की आपूर्ति भी होती है. विश्वेश्वरय्या मैसूर राज्य में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिए मैसूर में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनवाया और लड़कियों की शिक्षा के लिए पहल की. समाज के संपूर्ण विकास में उनकी भागीदारी के कारण उन्हें कर्नाटक का भगीरथ भी कहा जाता है. उन्हें सन 1955 में भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया था.

एस. निजलिंगप्पा: सिधवनहल्ली निजलिंगप्पा (1902 - 2000) एक वरिष्ठ राजनेता और 1956 और 1958 के बीच तत्कालीन मैसूर राज्य के मुख्यमंत्री और 1962 से 1968 के बीच एकीकृत कर्नाटक के भी मुख्यमंत्री रहे. उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा कर्नाटक एकीकरण आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. निजलिंगप्पा का जन्म बेल्लारी जिले के एक गाँव में हुआ था. बसवेश्वर का जीवन और शंकराचार्य के दर्शन के साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और महात्मा गांधी की शिक्षाओं का उनके दिमाग पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा.

जनरल के.एस. थिमैय्या : जनरल कोडेंडर सुबैय्या थिमैया (1906-1965) भारतीय सेना के एक जाँबाज सैनिक थे, जिन्होंने 1962 में चीन के साथ संघर्ष के दौरान 1957 से 1961 तक भारत के सेनाध्यक्ष के रूप में कार्य किया. उस समय जनरल थिमैया एकमात्र ऐसे सैनिक थे जो द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इन्फैंट्री ब्रिगेड की कमान संभालने का अनुभव रखते थे. कोरियाई युद्ध के बाद थिमैय्या ने युद्ध बंदियों के प्रत्यावर्तन से संबंधित एक संयुक्त राष्ट्र इकाई का नेतृत्व भी किया था. सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्हें जुलाई 1964 से दिसंबर 1965 तक साइप्रस में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना का कमांडर नियुक्त किया गया था.

कर्नाटक राज्य की ऐसी और भी अनेक विभूतियाँ है, जिन्होंने वर्तमान भारत की समृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, परंतु उन सब का यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं है लेकिन उनकी कीर्ति सदैव इतिहास के पन्नों में अमर रहेगी.

- कुणाल कुमार,
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

कर्नाटक के दर्शनीय स्थान

कर्नाटक राज्य भारत के प्रमुख पर्यटक स्थलों और प्राचीन शहरों में से एक है. इसलिए यह राज्य दुनिया भर के इतिहास प्रेमियों और अन्य पर्यटकों को शानदार अनुभव प्रदान करता है.

कर्नाटक राज्य पर नन्द साम्राज्य, मौर्य साम्राज्य, सातवाहन, कदंब, पश्चिमी गंगा, बादामी चालुक्य राष्ट्रकूट साम्राज्य, पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य और चोल का शासन रहा है इसलिए कर्नाटक में इनके शासनकाल से संबंधित किले, मंदिरों, महलों जैसे प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों को देखा जा सकता है.

प्राचीन में कर्नाटक पर कई राजा, महाराजाओं ने राज्य किया है और कर्नाटक में उन राज्यों द्वारा निर्मित विभिन्न ऐतिहासिक स्थल मौजूद है.

कर्नाटक के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल :

1. **हम्पी** : हम्पी कर्नाटक राज्य का एक स्मारक शहर है जो कर्नाटक के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक है. हम्पी शहर अपने खंडहरों के लिए काफी प्रसिद्ध है, जिसकी वजह से इसे युनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा भी मिला है. हम्पी का प्रमुख निर्माण महत्वपूर्ण शासक राजा कृष्णदेव राय के शासनकाल के दौरान किया गया था. हम्पी अपने सुंदर और विशाल नक्काशीदार मंदिरों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है.

2. **बेलगाम किला** : बेलगाम किले का निर्माण 13वीं शताब्दी में जय राय द्वारा किया गया था जो बेलगाम शहर का गौरव है. सौन्दर्य और इतिहास के विभिन्न पहलुओं के साथ मिश्रित बेलगाम किला कर्नाटक के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारकों में से एक है. यह किला कर्नाटक के प्रमुख विरासत स्थलों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. इस किले के प्रवेश द्वार पर गणपति और दुर्गा के मंदिर है, जिनमें से एक अब खंडहर में परिवर्तित हो चुका है.

एक समय में बेलगाम किला के परिसर में 108 जैन मंदिर और 101 शिव मंदिर थे और आज भी इनमें से कुछ संरचनाओं से संबंधित पत्थर देखे जा सकते हैं. जैन और शिव मंदिर के अलावा किले के अंदर जामिया मस्जिद भी स्थित है, ये मस्जिदें मुगल और दक्कणी शैलियों में बनी है और इनमे मीनार गुंबद और मेहराब हैं.

3. **मैसूर पैलस** : कर्नाटक राज्य के मैसूर शहर में स्थित इसे अम्बा पैलस के नाम से भी जाना जाता है. मैसूर पैलस शाही परिवार का महल रहा है और आज भी इस महल पर उन्हीं का अधिकार है. इंडो-सारा सैनिक में हिन्दू, इस्लामिक आर्किटेक्चर शैली के साथ निर्मित यह तीन मंज़िला पत्थर की संरचना है, जिसमें संगमरमर के गुंबद की पाँच मंजिला मीनार है. महल एक बड़े बगीचे से घिरा हुआ है और पुराने किले के भीतर तीन प्रमुख मंदिर और इमारत है. मैसूर पैलेस ताज महल के बाद भारत के सबसे आकर्षित स्थलों में से एक है.

4. **बिदर किला** : कर्नाटक के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक बिदर किले का निर्माण 1428 में अहमद शाह बहमनी द्वारा लाल लैटराइट पत्थर से निर्मित किया गया था. इस किले में प्राचीन समय के कई स्मारक मौजूद हैं. जिनमें से चित्रित महल, तख्त महल, जामा मस्जिद और सोलह स्तंभ मस्जिद सबसे प्रमुख है. किले की असामान्य विशेषताओं मे से एक ऐतिहासिक जल आपूर्ति प्रणाली है, जिसे कारेज कहा जाता है.

5. **गोमतेश्वर प्रतिमा** : कर्नाटक के हासन जिले के श्रवणबेलगोला में एक पहाड़ी गोतमेश्वर प्रतिमा स्थित है. कर्नाटक का यह सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल हैं. यह प्रतिमा 57 फुट ऊंची है, जो दुनिया के सबसे बड़ी खड़ी प्रतिमाओं में से एक है. इसका निर्माण 10 वीं शताब्दी में गंगा वंश के राजा राजमल्ल के जनरल चामुंडराय द्वारा किया गया था. इस प्रतिमा के आधार पर तमिल और कन्नड में शिलालेख लिखे गये हैं.

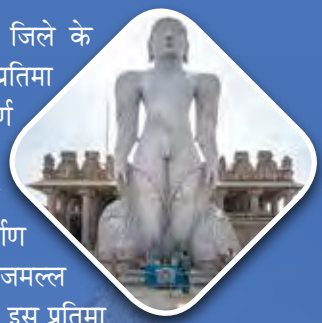

6. **गोल गुंबज़** : मोहम्मद आदिल शाह, उनकी प्रेमिका, रंभा और उनके परिवार का यह अंतिम विश्राम स्थल है. बीजापुर का सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है. यह गोल गुंबज़ विशेष रूप में दक्कन क्षेत्र में इस्लामिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका निर्माण फ्रांसीसी वास्तुकार काबुल के याकूत उर्फ दाबुल ने किया था. गोल गुंबज़ का निर्माण कार्य 1626 ई. में शुरू किया गया जो 1656 ई. में पूर्ण

हुआ और इसके निर्माण में 30 वर्ष का समय लगा कर्नाटक का यह ऐतिहासिक स्मारक पारंपरिक इस्लामिक या फारसी शैली के वास्तुकला के ट्रेडमार्क तत्वों से परिपूर्ण है.

7. **बैंगलोर पैलस :** बैंगलोर पैलस कर्नाटक के सबसे आधुनिक शहर बैंगलोर में स्थित है जो कर्नाटक में सबसे अधिक देखे जाने वाले आकर्षणों में से एक है. बैंगलोर पैलस का निर्माण सन्न 1944 में वाडीयार राजवंश द्वारा किया गया था. यह पैलेस शानदार लकड़ी के काम और त्युदर शैली की वास्तुकला से सुसज्जित है. राजा रामचन्द्र वाडियार ने लंदन के विंडसर कैसल से बैंगलोर पैलस के निर्माण की प्रेरणा ली. बैंगलोर पैलस विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, रॉक शो और विवाह के लिए स्थान भी उपलब्ध कराता है. यह महल दक्षिण भारत के सबसे शक्तिशाली राजवंशों में से एक है.

8. **चेन्नाकेशवा मंदिर :** होयसल शासकों द्वारा निर्मित भगवान विजय नारायण को समर्पित यह भव्य ऐतिहासिक मंदिर है जो विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक है. चेन्नाकेशवा मंदिर का निर्माण 1116 ई. में शुरू हुआ और पूर्ण होने में लगभग 103 वर्ष का समय लगा. मंदिर का निर्माण तलकाड की महान लड़ाई में चोलों पर होयसल की जीत की याद में किया गया था. कुछ लोगों का मानना है कि इस मंदिर का निर्माण तब हुआ था जब विष्णुवर्धन ने महान गुरु श्री रामानुजाचार्य के प्रभाव में वैष्णव धर्म अपनाया था. चेन्नाकेशवा मंदिर कर्नाटक में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्मारकों में से एक है और इस मंदिर में मुख्य मंदिर के अलावा कई छोटे मंदिर, मंडपम और अन्य संरचनाएं भी है.

9. **सोमेश्वर मंदिर :** हलासुरू के बाहरी इलाके में स्थित सोमेश्वर मंदिर कर्नाटक के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों और प्राचीन मंदिरों में से एक है. भगवान शिव को समर्पित सोमेश्वर मंदिर लगभग 1000 साल पुराना माना जाता है. इस मंदिर का निर्माण स्वर्गीय विजयनगर साम्राज्य काल में हिरिया केम्पे गौड़ा II के शासन में किया गया था. मंदिर के परिसर में कई उल्लेखनीय मूर्तियां, स्तंभ, मीनार, मंडप सहित अन्य कई प्राचीन कलाकृतियां भी देखी जा सकती है. सोमेश्वर मंदिर कर्नाटक का एक ऐसा ऐतिहासिक स्थल है जो पर्यटकों, श्रद्धालुओं के साथ साथ इतिहास प्रेमियों और कला प्रेमियों के लिए भी आकर्षण और आस्था का केंद्र बना हुआ है.

10. **बादामी गुफायें :** कर्नाटक के बागलकोट जिले में स्थित बादामी गुफाएँ कर्नाटक के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों में से एक है. बादामी गुफाओं का निर्माण छठी से आठवीं शताब्दी के दौरान पल्लव वंश के शासको द्वारा किया गया था. बादामी गुफाएं भगवान विष्णु को समर्पित हैं. यहाँ चार गुफाएँ हैं जिनमें से तीन हिन्दू धर्म से संबंधित और एक जैन धर्म से संबंधित है. द्रविड़ वास्तुकला की मिसाल के रूप में जाने जानेवाली बादामी गुफाएँ प्राचीन समय में चालुक्य राजवंश की राजधानी के रूप में थी.

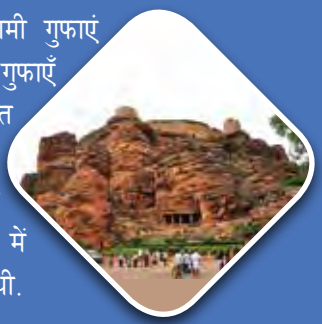

11. **पत्तदकल स्मारक परिसर :** युनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों और कर्नाटक के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में पत्तदकल स्मारक अपना एक अलग महत्व रखता है. इतिहासकारों के अनुसार इसकी स्थापना 7वीं और 8वीं शताब्दी में चालुक्य वंश के तहत की गई थी. पत्तदकल के ऐतिहासिक स्मारकों में नौ हिन्दू मंदिर और एक जैन मंदिर है. इन प्राचीन मंदिरों का महत्वपूर्ण केंद्र बिन्दु विरूपाक्ष का मंदिर है, जिसे रानी लोकमहादेवी द्वारा 740 के आसपास बनाया गया था. पत्तदकल का प्रत्येक मंदिर अपनी नक्काशीदार मूर्तियों और आकार के साथ एक सुखद शांति का अनुभव प्रदान करता है.

12. **राजा का मकबरा :** यह स्थान कर्नाटक के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशन मडीकेरी कूर्ग में स्थित है. राजा के मकबरे का निर्माण 1820 में किया गया था जिसे गद्दीग के नाम से जाना जाता है. इस मकबरें में वास्तुकला की एक महत्वपूर्ण इंडो-सारसेर्निक शैली को दर्शाया गया है. इसमें कब्र के अंदर भगवान शिव की पूजा करते हुये राजा को देखा जा सकता है क्योंकि राजा हिन्दू धर्म के थे, यह एक ऐसी विशेषता है जो कि इस मकबरें को दूसरे से अलग करती है. राजा के मकबरें के करीब दो बहादुर शाही अधिकारियों को भी दफन किया गया है.

कर्नाटक भारत के शीर्ष दस पर्यटन स्थलों में चौथे स्थान पर है. यह राज्य खूबसूरत परिदृश्यों को लेकर समृद्ध, सांस्कृतिक विरासत तक, शांत समुन्द्र तटों से लेकर शानदार भोजन और पर्यटन स्थलों से भरा हुआ है. मलयाली, तमिल, कोंकणी, कन्नडिगा के अलावा मुसलमानों और ईसाईयों ने कर्नाटक को अपना घर बना लिया है. यहाँ कुल पाँच राष्ट्रीय उद्यान और पच्चीस से अधिक वन्यजीव अभयारण्य है जिनमें बांदीपुर और नागरहोल राष्ट्रिय उद्यान सबसे प्रसिद्ध है.

- अफ्रोज़ा देहल्वी
क्षे. का. बेलगावी

कर्नाटक की खनिज संपदा: स्वर्ण खदानें

ईश्वर ने पृथ्वी पर जब मानव जीवन की कल्पना की तभी उनके जीवनयापन के लिए अनेक प्रकार के संसाधन भी प्रदान कर दिये. मनुष्य को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ यथा हवा, पानी, फल-फूल, अनाज, लकड़ी, कोयला आदि प्रकृति द्वारा मुफ्त में प्रदान किया जाता है. प्राचीन काल से ही खनिज संसाधन मानव सभ्यता एवं संस्कृति के आधारभूत स्तंभ रहे हैं. वर्तमान समय में भूगर्भ से निकलने वाले खनिज संसाधन किसी देश की अर्थव्यवस्था के मूल स्रोत बन चुके हैं. भारत के प्रत्येक राज्य में कोई न कोई खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है. भारत में कर्नाटक राज्य खनिज संपदा के मामले में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है. यहाँ उच्च खनिज भंडार वाली पूर्व कैम्ब्रियन युग की चट्टानें हैं जो कम से कम 57 करोड़ वर्ष पुरानी है. कर्नाटक क्रोमाइट का सबसे बड़ा उत्पादक व मैग्नेसाइट उत्पादन करने वाले भारत के चुनिन्दा राज्यों में से एक है. यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क, अभ्रक, ताम्र अयस्क, बक्साइट, रक्तमणि, तांबा, चूना पत्थर, एंटीमनी, सोना, चाँदी और संगमरमर का भी अकूत भंडार है.

भारत में सोने की खदानों की संख्या बहुत अधिक नहीं है. परंतु सोना सबसे अधिक खपत होने वाली धातुओं में से एक है. आज देश में परिष्कृत व आभूषणों के रूप में संग्रहित सोने का कुल भंडार 10,000 टन से भी अधिक है. आमतौर पर सोने की खदाने बहुत गहरी होती हैं. सोना निकालने की प्रक्रिया भी अत्यंत जटिल व कठिन होती है, इसीलिए सोना इतना कीमती होता है. भारत में सोने का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य, कर्नाटक है. यहाँ हट्टी गोल्ड फील्ड, रामगिरी गोल्ड फील्ड और कोलार गोल्ड फील्ड सबसे महत्वपूर्ण स्वर्ण खदाने हैं. ये खदाने कोलार (केजीएफ़), धारवाड़, हासन और रायचूर (हट्टी गोल्ड फील्ड) जिलों में स्थित है. यहाँ भारत के कुल उत्पादन का 88.7% सोने का उत्पादन होता है. हट्टी भारत में एकमात्र ऐसी कंपनी है जो स्वर्ण अयस्क का खनन व प्रसंस्करण दोनों करती हैं. हट्टी गोल्ड माइंस लिमिटेड (एचजीएम एवं एचजीएमएल) के दो प्लांट्स है जो हट्टी और चित्रदुर्ग में स्थित है.

हट्टी गोल्ड माइंस

हट्टी की खदान संभवत: दुनिया की सबसे प्राचीन धातु की खदानों में से एक है. एक अनुमान के मुताबिक मौर्य काल में अशोक के शासन के दौरान यहाँ पर खनिकों द्वारा 2300 फीट से अधिक की गहराई से स्वर्ण अयस्क निकला जाता था. यह संभव है कि उस समय चट्टान को 'फायर-सेटिंग' यानी चट्टान को पहले आग से गर्म कर अचानक उस पर पानी डालकर तोड़ा जाता होगा. वर्ष 1955 में ऑस्ट्रेलिया के भूवैज्ञानिक डॉ. राफ्टर द्वारा किए गए कार्बन डेटिंग के सर्वे के अनुसार यहाँ पाए गए कुछ नमूनों की आयु 1985 वर्ष से भी पुरानी थी. सतह से लगभग 1,100 मीटर नीचे खुदाई करने के बाद तकनीकी कठिनाइयों के कारण 1920 में इस खदान को बंद कर दिया गया.

सन 1937 में हैदराबाद की निजाम सरकार ने स्थानीय बेरोजगारी की समस्या से निजात पाने के लिए इस खान को पुन: आरंभ करने का निर्णय लिया. 1940 तक कुछ संतोषजनक परिणाम के बाद प्रतिदिन 100 मीट्रिक टन अयस्क की खुदाई के लिए संयंत्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया. लेकिन, संयंत्र आयात करने से पूर्व ही द्वितीय विश्व युद्ध के कारण इसका परिचालन स्थगित हो गया. वर्ष 1946 में युद्ध की समाप्ति के बाद इस परियोजना को पुन: शुरू कर वर्ष 1948 में प्रतिदिन 130 टन अयस्क खनन की दर से उत्पादन शुरू हुआ. 1972 तक यह दर बढ़कर 600 टन अयस्क प्रतिदिन हो गई. वर्ष 1956 में राज्यों के पुनर्गठन के बाद कंपनी को कर्नाटक राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया और हट्टी गोल्ड माइन्स लिमिटेड (एचजीएमएल) बना.

पिछले दशक में एचजीएमएल द्वारा लगभग 2100 किलोग्राम सोने का उत्पादन प्रतिवर्ष किया गया. अब इस खदान की गहराई लगभग 3000 फुट तक पहुंच चुकी है. अब तक हट्टी गोल्ड माइन ने लगभग 1700 टन सोने का उत्पादन पूरा कर लिया है. हाल के वर्षों में राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कुछ ऐतिहासिक व नए कदमों को देखते हुए इन आंकड़ों में और इजाफा होने की उम्मीद है.

कोलार गोल्ड फील्ड (केजीएफ)

अस्सी के दशक में सोने की तस्करी वाली फिल्में देख मेरे मन में सोने की महिमा अपने आप बढ़ गयी थी. ऐसे में जब भूगोल की पुस्तक में पहली बार कोलार स्थित सोने की खदान के बारे में पढ़ा तो जिज्ञासा और अधिक बढ़ गयी. चाहे अनचाहे उस स्थान को देखने की इच्छा भी कहीं न कहीं मन में बैठ गयी. दशकों बाद, बेंगलूरु क्षेत्र में पदस्थ होने पर ज्ञात हुआ कि कोलार शाखा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत ही आती है.

कहते हैं जहाँ चाह वहाँ राह. जनवरी, 2020 में क्षेत्र के सुरक्षा अधिकारी के साथ कोलार व गौनीपल्ली शाखाओं के निरीक्षण की योजना बनाई. इस यात्रा के दौरान हमें कोलार शहर से लगभग 30 किमी की दूरी पर स्थित कोलार गोल्ड फील्ड अर्थात केजीएफ जाने का भी सुअवसर मिल गया. केजीएफ़ की सभी खदाने आज बंद हो चुकी हैं. खदान क्षेत्र में हमें एक अजीब सी खामोशी पसरी मिली. जंगली झाड़ियों के बीच बीच में अंग्रेजों द्वारा बनवाये गए कुछ पुराने हवेलीनुमा भवन नजर आ रहे थे. उनमें से अधिकांश खंडहर बन चुके थे और कुछ में स्थानीय सुरक्षा गार्ड रह रहें थे. खदान देखने हेतु भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड (बीजीएमएल) के मुख्यालय से यहाँ के मुख्य सुरक्षा अधिकारी की अनुमति से अंदर जाने दिया जा सकता था. हम लोग बीजीएमएल मुख्यालय जाकर वहाँ के मुख्य सुरक्षा अधिकारी से मिले. बीएसएफ़ से डेपुटेशन पर नियुक्त मुख्य सुरक्षा अधिकारी ने हमें न केवल अंदर जाने की अनुमति प्रदान की वरन एक गाइड भी साथ में भेज दिया. गाइड वर्ष 2001 तक केजीएफ़ का कर्मचारी रह चुके थे. उनसे केजीएफ़ के बारे में जो जानकारियाँ प्राप्त हुई उन्हें यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ.

बेंगलूरु से लगभग 100 किमी दूर स्थित कोलार स्वर्ण क्षेत्र (कोलार गोल्ड फील्ड- केजीएफ) संभवत: भारत में प्राचीनतम स्वर्ण भण्डार है. कोलार की खानों से निकले सोने के प्रयोग के शुरुआती साक्ष्य दो हजार साल पुरानी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा संस्कृति में भी मिलते हैं. ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार यहाँ प्रथम शताब्दी में भी स्वर्ण की खुदाई होती थी. इसमें नौवीं व दसवीं शताब्दी के बीच चोल साम्राज्य और 16वीं सदी में विजयनगर साम्राज्य से लेकर 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में टीपू के काल तक की अवधि सम्मिलित है. सदियों तक केजीएफ़ से दक्षिण भारत के शासकों ने भारी मात्रा में स्वर्ण निकाला. कोलार के प्राचीन इतिहास पर नजर डाले तो पाएंगे कि 350-1000 ई. के दौरान कर्नाटक पर गंग वंश का शासन था और कोलार उनकी राजधानी हुआ करती थी. वर्ष 1004 में कोलार पर चोल वंश का शासन था. उस समय कोलार से निकाला गया सोना प्रसिद्ध बंदरगाह पूमपुहार लाया जाता था, जहां से उसे मदुरै के व्यापारियों और दूसरे देशों को बेचा जाता था.

अंग्रेज़ों के आने के पूर्व यहाँ के स्थानीय लोग छोटे-छोटे औज़ारों और तेल के दीयों की मदद से जमीन की सतह को खुरच कर सोना निकालने का प्रयास करते थे. सन 1799 में श्रीरंगपट्टनम के युद्ध में टीपू सुल्तान के मारे जाने के बाद अंग्रेज़ों ने उसके इलाक़े को मैसूर रियासत को सौंपने का फैसला किया. रियासत को सौपने से पूर्व सीमांकन हेतु जमीन के सर्वे के लिए 1802 ई. में ब्रिटिश पैदल सेना के कमांडर जॉन वॉरन को कोलार बुलाया गया. सीमांकन के दौरान स्थानीय खानों में हो रही गतिविधियों को देखकर वॉरन को हैरानी हुई. जांच पड़ताल के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि गांव वाले जिस तरीक़े से सोना निकाल रहे थे उससे हर 56 किलो मिट्टी से मात्र एक रत्ती सोना निकाल रहा है. उसने सोचा कि अगर इस काम में पेशेवर लोगों को लगा दिया जाय तो बड़ी मात्रा में सोना निकाला जा सकता है. तब से छह दशकों तक कई लोगों (ईस्ट इंडिया कंपनी सहित) ने सोना खोजने में अपनी किस्मत आजमाई. कई तरह की खोज व अध्ययन किये गये, लेकिन किसी को भी सोने का जखीरा नहीं मिल पाया.

सन 1871 ई. में तब एक बड़ा बदलाव आया जब अंग्रेज़ सेना से रिटायर हुआ आयरलैंड का माइकल फिट्ज़ गैराल्ड लावेले तत्कालीन बैंगलोर कैंटोनमेंट में बसने हेतु आया. न्यूज़ीलैंड के माओरी युद्ध के दौरान उसे खदानों में दिलचस्पी हो गई थी. जॉन वॉरन की पुरानी रिपोर्ट पढ़कर उसकी दिलचस्पी और बढ़ी. एक दिन बैलगाड़ी से सौ कि.मी. लंबा सफ़र तय करके वह कोलार पहुंच गया. अपने अनुभव के आधार पर लावेले ने स्वर्ण खनन के लिये कई स्थानों की पहचान की. दो साल से अधिक समय तक शोध करने के पश्चात उसने वर्ष 1873 में मैसूर सरकार को पत्र लिखकर खनन की अनुमति प्राप्त की. परंतु, कुछ आर्थिक कारणों से लावेले को वापस लौटना पड़ा.

उसके बाद वर्ष 1880 में लंदन की माइनिंग फार्म जॉन टेलर एंड संस ने कोलार की बागडोर संभाली और इतिहास बदल डाला. इस फर्म ने पहली बार यहाँ आधुनिक मशीनों से खनन शुरु किया और शीघ्र ही जखीरे तक पहुँच गये. इसके साथ ही कोलार के दिन भी बदल गए. एक समय तो ऐसा आया कि कोलार की खान दुनिया की सबसे गहरी और सबसे ज़्यादा सोना उत्पादन करने वाली खान बन गयी. इसी बीच कोलार गोल्ड फील्ड्स 1902 में बिजली की सुविधा पाने वाला सबसे पहला भारतीय व दूसरा एशियाई शहर बना.

आजादी के बाद 1956 में इन खदानों का राष्ट्रीयकरण हुआ और 1970 में भारत गोल्ड माइंस लिमिटेड (बीजीएमएल) ने इन खदानों का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया. लेकिन शुरुआती सफलता के बाद सोने की कीमतों में आई गिरावट व बहुत गहराई से ख़र्चीले उत्खनन के कारण प्राप्त सोने के मूल्य परिचालन लागत से कम होने लगे, जिससे कंपनी की हालत खराब होने लगी. वर्ष 1989 कंपनी को बीमार इकाई घोषित कर दिया गया. खर्च कम करने के लिए इसके स्टाफ की संख्या 8800 से घटाकर 3500 कर दी गया. लेकिन बात नहीं बनी और 2001 में इसे बंद कर दिया गया. आज करीब 13 हजार एकड़ में फैला कोलार गोल्ड फील्ड किसी भुतहा कस्बे जैसा नजर आता है.

कोलार में आधुनिक खुदाई का काल 1880 से 2001 तक लगभग 120 वर्षों तक रहा. वर्ष 1980-90 के दशक में यहाँ धरती की सतह से 3 किमी नीचे तक खुदाई होती थी. आज भी विश्व में केवल दक्षिण अफ्रीका की एक खदान ही इससे ज्यादा गहरी है. जॉन टेलर के नेतृत्व वाली ब्रिटिश खनन कंपनी बड़े गर्व के साथ यह दावा करती थी कि यहाँ धरती में एक किलोमीटर नीचे से सीधे लंदन कार्यालय में बात की जा सकती है. इतनी अधिक गहराई में खुदाई हेतु विशेष उपकरण की आवश्यकता होती है जो ब्रिटेन से ही आयात किए जाते थे. जॉन टेलर ग्रुप द्वारा प्रतिस्थापित अधिकांश मशीनें 100 साल से ज्यादा पुरानी होने के बाद भी 1990 के दशक तक ठीक-ठाक काम कर रही थीं. एक अनुमान के अनुसार अंग्रेजों ने इस खदान से करीब 850 टन सोना निकाल कर अपने देश भेजा. उस समय भारत सोने के उत्पादन के मामले में दुनिया में छठे स्थान पर था. तब कोलार में प्रतिवर्ष लगभग 20 टन सोने का उत्पादन होता था.

बंद होने के बाद भी केजीएफ का अस्तित्व अभी समाप्त नहीं हुआ है. माना जाता है कि कोलार में अभी भी काफी सोना मौजूद है. आज भारत दुनिया में सोने का सबसे बड़ा आयातक देश है. 2020 में भारत ने 34.6 अरब डालर का सोना आयात किया. सोने का आयात देश के लिए भुगतान असंतुलन की सबसे बड़ी वजह है. सोने के अत्यधिक आयात की वजह से भारत की जेब पर प्रति वर्ष करीब 2.6 लाख करोड़ रूपये का बोझ पड़ता है. कोलार की खदानों में फिर से उत्पादन शुरू होने पर इस बोझ में कुछ कमी आ सकती है. चूंकि, हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने कोलार में सोने की खुदाई पुन: आरंभ करने का आदेश पारित करते हुए स्वर्ण खदानों की नीलामी की अनुमति भी प्रदान कर दी है. इससे लगता है कि भारत के प्रथम विद्युतीकृत शहर का भाग्य एक बार पुन: बदलने वाला है. खनिज पदार्थ प्रकृति के अनमोल उपहार हैं. पृथ्वी पर इनकी उपस्थिति अनादि काल से है. अत: इन्हें न तो बढ़ाया जा सकता है और न प्रत्यारोपित किया जा सकता है. एक समय बाद यदि यह संपदा खनन द्वारा निकाल ली गई तो फिर इसकी प्रतिपूर्ति नहीं हो सकती. अत: हमें इनका उतना ही दोहन करना चाहिए जितना कि हमारे लिए अपरिहार्य हो.

- कृष्ण कुमार यादव,
क्षे.म.प्र.का., बेंगलूरु

कर्नाटक का गौरव : मुरुडेश्वर शिव मंदिर

मुरुडेश्वर शिव मंदिर हमारे अंचल के क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु की कुमठा शाखा से मात्र 40 किमी व मंगलूरु शहर से 165 किमी उत्तर पश्चिम दिशा में उत्तर कन्नड़ा जिले की भटकल तहसील के मुरुडेश्वर नामक कस्बे में अरब सागर के तट पर स्थित है. कंदुक पहाड़ी पर तीन ओर से सागर से घिरा यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है. इस मंदिर में भगवान शिव का आत्मलिंग स्थापित है, जिसकी कथा रामायण काल से जुड़ी हुई है. ऐसा माना जाता है कि अमरता पाने के लिए रावण शिवजी को प्रसन्न कर उनका आत्मलिंग अपने साथ लंका ले जा रहा था, तब रास्ते में इसी स्थान पर आत्मलिंग धरती पर रख दिये जाने के कारण वह वहीं पर स्थापित हो गया था. रावण ने आत्मलिंग उठाने की बहुत कोशिश की, परंतु असफल रहने पर गुस्से में इसे नष्ट करने का भी उसने प्रयास किया. इस घटना की पूरी कथा शिव पुराण में मिलती है.

इस मंदिर के बाहर बनी भगवान शिव की मूर्ति विश्व की दूसरी सबसे ऊंची शिव मूर्ति है, इसकी ऊंचाई 123 फीट है. इस मूर्ति को अरब सागर में बहुत दूर से ही देखा जा सकता है. इस मूर्ति का निर्माण स्थानीय निवासी श्री आर. एन. शेट्टी ने रु. 5 करोड़ की लागत से दो वर्षों में शिमोग्गा के मूर्तिकार श्री काशीनाथ व अन्य मूर्तिकारों से कराया. मूर्ति को इस तरह से बनाया गया है कि सूरज की किरणें हमेशा इस पर पड़ती रहे. सूरज की किरणें पड़ते ही यह चमकने लगती है. इस मंदिर के गोपुरा या राजगोपुरम (गोपुरा या राजगोपुरम जिसे विमानन भी कहते है, एक स्मारकीय अट्टालिका होती है. यह हिन्दू मंदिरों के स्थापत्य का प्रमुख अंग है. इसके ऊपर किरीट कलश शोभायमान होता है. यह मंदिर के चहारदीवारी में बने प्रवेश द्वार का काम करता है. गोपुरमों का इतिहास आरंभिक पल्लव वंश के निर्माणों एवं बारहवीं शताब्दी के पाण्ड्य शासकों द्वारा बनवाए गए प्रधान मंदिरों को माना जाता है.) को विश्व में सबसे ऊँचा गोपुरा माना जाता है, जिसकी ऊंचाई 249 फिट है तथा इसका निर्माण भी एक स्थानीय कारोबारी ने करवाया था. इसके द्वार पर दोनों तरफ सजीव हाथी के बराबर ऊँची हाथी की मूर्तियाँ भी देखी जा सकती है.

मुरुडेश्वर सागर तट, कर्नाटक के सबसे सुंदर सागर तटों में से एक है, पर्यटकों के लिए यहाँ आना दोहरा लाभ देता है. एक ओर जहां इस धार्मिक स्थल का दर्शन होता है तो वहीं दूसरी तरफ प्राकृतिक सुंदरता का आनंद भी मिलता है.

- डॉ. टी. प्रकाश
क्षेमप्रका, बेंगलूरु

Gudavi Bird Sanctuary, Shimoga

There are many beautiful siteseeing places in and around Shimoga city. One such place is the Gudavi Bird Sanctuary popularly known as Gudavi Pakshidama. It is located in Soraba Taluk, 114 kms away from Shimoga city near Sagar Town. Spread in 0.75 sq. kms. of area this picturesque and is a delight to visit. A special platform is built here for the bird watchers to have a closer look at the birds.

There are a minimum of 217 species of flora and fauna, belonging to 48 families in this sanctuary. The Gudavi Lake inside this sanctuary with a veriety of trees on its banks makes a beautiful sight especially during the monsoons. This Bird Sanctuary is a Hub of Migrant Birds from across the World. Variety of birds migrate to Gudavi for breeding during the monsoon. The trees and the natural lake provide shelter to these birds. The wide variety of birds includes Little Cormorant, Night Heron, Grey Heron, Waterfowl, Indian Shag, Bittern, White Headed Crane, Jungle fowl, White Ibis, Indian Pond Hero, Black-Headed Crane, Pariah Kite, Little Grebe, Darter, Brahminy Kite and many more. Gudavi Bird Sanctuary is an ideal picnic spot and a haven for weekends or vacations for bird watchers. Usually the post monsoon (Jun to Oct) season is the best time for visiting this place because all types of birds that can be seen. Inside the sanctuary there is a walking trail too.

- Prashanth Prabhu
RO, Bengaluru (South)

The Indian Colosseum- iconic Chinnaswamy Stadium, Bengaluru

One of the must-see places in Bengaluru, is the Chinnaswamy Stadium. Flanked by the picturesque Cubbon Park, Queen's Road, Cubbon and uptown MG Road, this five-decade-old stadium is situated in the heart of the city of Bangalore. This iconic stadium has been the witness to many famous encounters in world cricket. Some of them are - The high-fever 1996 World cup quarterfinal encounter between India and Pakistan which India famously won and 1987 India v/s Pakistan test which India narrowly lost. The stadium is also the home ground of the Indian Premier League franchise- The Royal Challengers Bangalore as well as the Karnataka State Ranji team.

The foundation stone of this beautiful stadium was laid way back in 1969. Intially, it was used as a venue for first-class matches from 1972-73 season and it finally became ready for hosting test matches from the 1974-75 season. The stadium was earlier known as K.S.C.A (Karnataka State Cricket Association) stadium and was later renamed after the former BCCI president and official of KSCA LT.Sh M.Chinnaswamy. The first test match was played here in November, 1974, a match better known as the debut match of West Indian champions Viv Richards and Gordon Greenidge.

The stadium has a seating capacity of 40000 people. Floodlights were first installed at this stadium for the 1996 Wills World Cup. It is the first cricket stadium in the world to use solar panels for electricity needed to run the stadium. The stadium is also the seat of the National Cricket Academy (NCA).

In the new trend, on twitter, the Chinnaswamy stadium was compared to the ancient stadium Colosseum.

Any tourist visiting Bengaluru must visit this historical stadium which lies in the heart of Bengaluru.

- Rishi Prakash
STC, Bhopal

भारत का तिब्बत-बैलकुप्पै

कई साल पहले मेरा एक ऐसी जगह तबादला हुआ जो भारत की संस्कृति से बहुत भिन्न था- बैलकुप्पे.

तिब्बत एक शांतिप्रिय देश है. तिब्बत के सर्वोच्च धार्मिक और राजकीय नेता हैं दलाई लामा. 1950 में जब चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया तब चौदहवें दलाई लामा तिब्बत के धर्मगुरु और शासकीय नेता थे. उन्होंने अपने साथियों के साथ भारत में शरण ली और भारत ने उन्हें और उनके साथियों को पनाह दी. तब कर्नाटक राज्य ने तिब्बतियों को अपनी घर-गृहस्थी बसाने के लिए मैसूर के पास बैलकुप्पै नामक एक गांव में 3000 एकड ज़मीन दे दी और तिब्बती लोग बैलकुप्पे में आकर रहने लगे. शुरुआत में इन लोगों ने परिवेश, माहौल को लेकर बहुत कष्ट झेले.

प्रारंभ में ये लोग खेती करते थे, बाद में उन्होंने व्यापार करना शुरू किया. भारत सरकार ने उनके लिए रहन-सहन की व्यवस्था की, बच्चों को पढ़ाने के लिए स्पेशल स्कूल खोले. बहुत से बौद्ध भिक्षु भी आने लगे और बौद्ध धर्म के अध्ययन हेतु मोनेस्टरी भी खोली गयी. बैलकुप्पै में मुख्य दो मठ हैं. एक सेरा मोनेस्ट्रिरी, दूसरी नामरोलिंग (Namroling) मोनेस्टरी. दोनों मोनेस्टरीज ने कुल मिलाकर 12000 से ऊपर बौद्ध भिक्षु रहते हैं और धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं.

सेरा-जे-मोनेस्टरी तिब्बती बौद्ध धर्म के गेलुप्पा परंपरा की है. इसी मोनेस्टरी (मठ) में हमारी बैलकुप्पा शाखा है. इसी बडी मोनेस्टरी में 6000 से ऊपर बौद्ध भिक्षु रहते हैं.

नामरोलिंग मोनेस्टरी को गोल्डन टेंपल भी कहते हैं. ये तिब्बती धर्म के निएग्मा (Nyagma) वंशावली से है. यहां 5000 से ऊपर बौद्ध भिक्षु रहते हैं. इसका मुख्य आकर्षण 60 फीट ऊंचे पद्मसंभव सुखयामि और अमितायुस के सुवर्ण लेपित विग्रह है. इसके चारों और बौद्ध भिक्षु के आवास स्थान है.

यहां के नए युवक अब ज़्यादातर भारत के बाहर विदेशों में काम करने लगे हैं. तिब्बती लोग इधर के लोगों के साथ घुल मिलकर रहते हैं और इसी वजह से बैलकुप्पै के इर्द गिर्द का व्यापार भी बढ़ा है.

दलाई लामा वर्ष में एक या दो बार बैलकुप्पै आते हैं और 5-10 दिन रहते हैं. उस शाखा में रहते हुए मुझे दो बार दलाई लामा से रूबरू होने का मौका मिला. ये एक मेरी ज़िन्दगी के यादगार पल हैं.

- कनकराजु सी
क्षेका, तिरुवनंतपुरम

SUGAR CITY MANDYA

Mandya a district in Karnataka located on the Bengaluru-Mysore highway. is called the Sugar City of Karnataka as sugarcane is a major crop and Sugar and Jaggery Industries contribute majorly to the economy of the district. Karnataka is one of the biggest producers of jaggery in the country, after Uttar Pradesh and Maharashtra. In the 2000s, Mandya district alone had close to 5,700 jaggery making units. Today, less than 600 of these units are still active, producing close to 10 lakh tonnes of jaggery every year. There are 6 sugar factories in Mandya district, one each in KM Doddi, K R Pet, Mandya, Pandavapura, Koppa and Nagamangala producing nearly 26 lakh tonnes of sugar.

According to the mythical story, the region is named after sage Maandavya. Since Mandya is located on the banks of the river Cauvery, agriculture is the predominant occupation and the single largest contributor to its economy. The main crops grown are paddy, sugarcane, jowar, maize, cotton, banana, ragi, coconut, pulses, and vegetables

The total geographical area of the district is 4,98,244 Hectares, out of which 2,48,825 Hectares forms the sown area. More than half of the total land area in the district is under agricultural.

Some of the notable persons from Mandya include Ambarish (Kannada film actor and Former Member of Karnataka Legistative Assembly), Anasuya Shankar (known as Triveni, a novelist in Kannada language), J. Jayalalithaa (Actress and 3 times chief minister of Tamil Nadu) Jayalakshmi Seethapura (folklorist and writer) S.M. Krishna (Former CM of Karnataka) Mandya Ramesh (film actor) Nagathihalli Chandrashekhar (filmmaker) H. L. Nagegowda (folklorist, writer, founder of the museum 'Jaanapada loka') P. T. Narasimhachar (poet) K. S. Narasimhaswamy (poet) Prem (film director) C S Puttaraju (Former Minister of Karnataka) B. S. Ranga (film maker) Ramya (South Indian actress and the youngest MP of India in the 15th Lok sabha) H. R. Shastry (actor) Vijaya Narasimha (Kannada film lyricist) and B.S.Yediyurappa (Karnataka's 25th chief minister).

Mandya is one of the most underrated districts in Karnataka though it has many attractions like Krishna Raja Sagar (KRS) Dam built across Kaveri river and world famous Brindavan Garden, Ranganathittu bird sanctuary, Shivanasamudra Hydel project which is first one of its kind in Asia. It has many temples like Melkote Cheluvanarayana Swamy Temple, Kikkeri Brahmeshwara temple, Hosaholalu lakshmi narayana swamy temple. Besides, it is also located between 2 prime cities in the state namely, Bengaluru (the capital city of Karnataka) and Mysuru (the cultural capital of Karnataka) and has good connectivity by road, rail and air.

- Akshatha HR
FGMO, Bengaluru

Coorg & Coffee

Kodagu also known by its former name Coorg is an administrative district and a hill station in southern Karnataka.

The original Kodavas were the earliest inhabitants. Being a warrior community they had their own tribal-chief.

The last king, ChikkaVeerarajendra, however, lost the support of his own people and brought it to an end. Thereafter, in 1834, a Coorg general named Apparanda Bopanna invited the British forces into the kingdom. The Britishers introduced coffee and started cultivation on a mass scale, capitalizing on the coffee beans.

The first coffee estate was established in Coorg in 1854 by an Englishman, John Fowler. Soon, almost every family in Coorg began to grow the infamous bean. The culture and tradition of coffee cultivation is carried through generations to present day and Coorg has acquired a nickname “the coffee cup of India.”

Coorg contributes around 40 percent of India’s coffee, and the local economy mainly depends on it.

Today, Karnataka yields 140,000 tons of coffee a year and is the largest producer of coffee in the country. 70% percent of India’s coffee is exported, and 30% is distributed and consumed domestically.

‘Poly-cropping’ – Farming of Coffee with Spices

Even though Coorg might be known as the coffee cup of India, the region has been renowned for its spices for centuries. Coorg pepper is particularly famous. Since ancient times, traders arrived at the Malabar Coast bordering Kerala to purchase the infamous black spice grown in the emerald hills of Coorg. Cardamom, cloves and kokum, among other spices, grow in abundance in Coorg.

February and March are the best months to find abundant coffee trees laden with small crimson and green berries

that hold inside them two green beans each. Coorg can often be found on the bucket lists of nature loving travellers for its tranquil setting, biodiversity, delicious Kodava cuisine and large-scale cultivation of Indian coffee.

There are two climates in Coorg - rainforest and dry, temperate forests - both of which are suitable for coffee cultivation. Over half of India's overall bird species can be found in the region, along with birds like White - cheeked barbet, Malbar barbet and Malbar grey hornbill.

Surrounded by a tall canopy and clear blue skies which are difficult to find in metros, travellers are greeted with the smell of flowering coffee shrubs and ripened coffee berries along the way. Few initiatives by the state government have developed sustainable,organic coffee growing, which is useful for increasing a region-wide awareness around responsible agro-tourism.

- Gajanan Patil
Staff College, Bengaluru

TOYS CITY- GOMBEGALA OORU CHANNAPATNA

Channapatna is famous for its wooden toys and Lacquerware. The city, situated between Bengaluru and Mysuru, is world famous as the "TOYS CITY". In Kannada, Toys are made of a specific wood, called as "Aale Mara or ivory wood". The small town streets of Channapatana are lined with the colourful unique wooden toys. The toys are coloured using vegetable dyes and are safe to use and environment-friendly.

Artisans who wish to work here are trained under a body known as the Artisan Training Institute. This institute also helps in the marketing of Channapatna toys.

Channapatna toys add a contemporary appeal to the purchaser's environment, beautifying the interiors and decor of their homes. Flexible forms and dazzling colours add to the versatility of these wooden carvings and sculptures. Hanging wooden carvings would splash a bit of antiquity into the buyer's home. These toys are a great indulgence for children during their play time.

It consists of beautiful wooden products shaped like toys, puzzles, key chains, wall hangings and other decorative art pieces including kitchenware. Initially, ivory-wood was used to make these products. Gombegala Ooru, gradually, with the evolution of the toy business, creativity expanded far and wide. Today, rubber, teak, rosewood, sandalwood, cedar and other kinds of wood are used in the manufacture of these intricate artefacts

The interesting fact about the Channapatna toy business is that it is small-scale business. The industry comprised of professional women and men carving out these gorgeous models in the vicinity of their homes.

Woods like pine, sandalwood, ivory-wood and teak are hunted down from all over the state.

Further on, the wood is seasoned and air-dried to reduce the moisture content; this process increases durability. The wood is then cut into desired shapes and sizes and later carved to perfection. Earlier, this was a manual process; today, machines do the tough work. The semi-finished product is checked for tiny protruding pieces that are smoothened out using sandpaper. The shaped artefact is further lacquered for a polished and glossy appearance.

The art pieces are then painted with vibrant natural dyes such as turmeric for yellow, Kumkum powder for red and other vegetable dyes to match required colours. Natural colours make the product eco-friendly, non-toxic and safe for children to play. The upscale of production and sale was carried out by government-owned handicraft stores selling toys in bulk. For product enhancement, the Lacquerware Craft Complex runs 32 lathe machines set up by the government.

The Karnataka State Government in collaboration with the Dutch Government, recently introduced the Viswa scheme, that finances artisans to a global pedestal.

Channapatna Toys gained absolute global momentum after President Barack Obama and his wife, Michelle Obama During their first Indian visit in 2010 showed immense interest in owning these adorable pieces of art. During their first Indian visit in 2010, the US President, along with the First Lady, visited the city and purchased these toys in delight. The American White House now houses shelves of Channapatna dolls increases Channapatna's recognition as the land of toys. Ever since tourists visiting South- India never fail to visit the city lined with these bright artefacts.

- Vidya R Kamat
CO-Annex Mangalore

Bangalore IT Hub of India

Bangalore, officially known as Bengaluru, is the Capital of the Indian State of Karnataka. Bengaluru has earned many nicknames over the centuries. viz the 'city of baked beans' (Bendakaluru), the 'garden city of India', the 'Silicon Valley of India' and now, the latest label is the 'global hub of technology start ups'.

History of the city becoming an IT Capital:

Bengaluru is home to a large number of education at and research institutions. Some institutes like the Indian Institute of Science (IISc), Indian. Institute of Management-Bangalore (IIMB), Institute of Bioinformatics and Applied Biotechnology (IBAB) and National Centre for Biological Sciences (NCBS) have their own Technology Business Incubators (TBIs) to nurture entrepreneurship.

Immediately after India's independence in 1947, policy makers promoted Bengaluru as a 'modern industrial city' by establishing many Public Sector Units (PSUs) such as HAL, ITI, HMT, ISRO, BEL, BHEL etc. The presence of PSU's gave ready access to manpower and opportunities for trial of newly developed software. With the announcement of new computer and software policies in 1984, imports and exports of hardware and software in India were liberalized. This laid the foundation for organizations like Wipro and Infosys to set up their head office in Bangalore and hire Indian programmers.

By offering advanced systems by Indian Software companies, ties were built with American companies. In return, Americans started capitalizing on the large talent pool and low operational costs by erecting software facilities and innovation centers on Indian soil. This paved the way for offshore relationship between East and West. Texas Instruments Inc. established an R&D centre in Bangalore, thereby becoming the first global technology company to set up such a facility. Other tech companies followed, transforming Bangalore into an outsourcing hub.

Government Policies:

Growth of any state cannot be without friendly Govt policies. Karnataka was the first state to have an Information Technology Policy in 1997 that heralded the growth of the IT sector. With the focus now shifting on start-ups, the government of Karnataka had launched an exclusive 'Karnataka Start-up Policy' aimed to make registering technology start-ups an easy, smooth and quick affair. The Karnataka government has taken an initiative and is creating centers of excellence for cyber security, AI, and data Science in Bengaluru and other IT hubs in the state to prepare for the technologies of the future

Bengaluru as IT Hub:

Bangalore's IT industry is made of three main groups i.e. Electronics City, International Tech Park, Bangalore and Software Technology Parks of India. It hosts a young population of digital natives who possess the business acumen and innovative vigour which is helping in the growth of the world's tech industry.

According to new research released in Jan, 2021 by London, Bengaluru has emerged as the world's fastest-growing mature tech ecosystem in the world since 2016, followed by the European cities of London, Munich, Berlin and Paris, with India's financial centre of Mumbai in sixth place. Bengaluru is also ranked sixth for the world's tech venture capitalist (VC) investments, on a global list topped by Beijing and San Francisco, New York, Shanghai and London making up the top five.

Bangalore's pleasant weather throughout the year adds another brownie point for the city to be liked by all.

There is no denying that the tech scene in Bengaluru is booming and has earned the city the well-deserved sobriquet of Asia's Silicon Valley. Government policies and the massive influx of investments have overhauled a city that used to be more popular among retirees to Technology Capital of India for over three decades now.

The most uplifting realization is that the most fruitful years for Bangalore lies ahead rather than behind. The city holds abundance of untapped potential of burgeoning revenue and growth for decades to come.

- Nabnita Banarjee
FGMO, Bengaluru

AN ICONIC HERITAGE MUSEUM

The Erstwhile Corporation Bank's (Now Union Bank of India) Heritage Museum was opened on 12 March 2011 i.e. on 106" Foundation day of the Bank. The Heritage Museum inaugurated by Shri Pranab Mukherjee, Former Hon'ble Union Minister for Finance. The establishment of Banking Heritage Museum at Udupi a symbolic gesture to remember and commemorate the human endeavour behind the creation of our great banking edifice. The Heritage Museum would remind the people about the path traversed by Banking in the costal District of Karnataka in general and Corporation Bank in particular by showcasing the evolution of Banking and related instruments, records, Ancient coins, Bank Notes and Currency. The Heritage Museum is developed by the Bank keeping in mind the tourists and pilgrims who visit the temple town and Lord Krishna, Udupi. The Heritage Museum is located at the ground floor of the Heritage Building. Main Objectives behind opening Heritage Museum are

1. To maintain and protect the Heritage Building, the residence of Corporation Bank's Founder President Shri Khan Bahadur Haji Abdulla Haji Kasim Saheb Bahadur, 122 years old building, Our Bank started its functioning in 1906.
2. To showcase money through the ages, from barter to digital to the present generation and evolution of Banking and related information in the costal district of Karnataka Corporation Bank Heritage Museum has now become a well known tourist destination. Today it is one of the 10 best tourist destinations at Udupi.
3. Haji Abdulla Memorial Corporation Bank Heritage Museum show cases ancient coins of India dating back to 500 BC to till date. Coins on display include Coins of Mahajanapadas (punch Mark coins), Cast copper coins, Die strike coins of ancient India, Coins of Chutu kings, Malayaman kingdom, Satavahanas, Guptha coinage, Kushanas, Chera Kingdom, Cholas, Alupas of Tulunadu, Hoysalas, Vijayanagar Kingdom, Bahamanis of Deccan, Bijapur Sultans, Travancore cochin, Mysore Kingdom, Portuguese India, British India coins, and Post independence Commemorative coins, regular coins and Currency notes. It also houses paintings of our Founder president, directors of Corporation Bank and photo frames depicting money through the ages.

CURATOR/GUIDE AT HERITAGE MUSEUM.

Mr. M. K. Krishnayya, has taken care of this museum as Curator since opening till 2019. He put all efforts to bring the name of the museum to the forefront and a major tourist attraction in Udupi. Shri M. Jayaprakasha Rao, present Curator of the Museum designed the display of the Museum.

- Ashok Kumar kotian
RO Udupi

Natural Resources of Karnataka

Natural resources can be defined as “stocks of materials that exist in the natural environment that are both scarce and economically useful in production or consumption, either in their raw state or after a minimal amount of processing”.

The resources that are available in infinite quantity and can be used repeatedly are called renewable resources. Example: Forest, wind, water, etc. are the resources that are limited in abundance due to their non-renewable nature and whose availability may run out in the future are called non-renewable resources. Examples include fossil fuels, minerals, etc.

Karnataka state has rich deposits of mineral wealth. These deposits contain asbestos, bauxite, chromite, dolomite, gold, iron ore, kaolin, limestone, manganese, ochre, quartz, silica sand, etc. It is the sole producer of felsite and leading producer of gold (84%), moulding sand (63%), and fuchsite quartzite (57%) in the country.

Gold: Karnataka has three major centers located at Kolar, Raichur and Chitradurga districts for gold mining.

Iron ore: Karnataka has very rich deposits of high grade iron and manganese to the tune of 1,000 million tonnes. Most of the iron ores are concentrated around the Bellary-Hospetregion whereas Chitradurga, Bagalkot and Tumkur districts also produce significant amount of Iron ore. The chunk of the iron ore is exported to be used in steel manufacture and pig iron and sponge iron plants.

Limestone: has Karnataka the largest limestone reserve in India. The districts of Gulbarga, Bagalkot, Belgaum, Shimoga and other Uttara Kannada districts are endowed with extensive high grade limestone

Granite: Karnataka is an extensive treasure house of Granite and supplies numerous varieties of the stone from Sparkling Black, Imperial Red, Queen Rose to Indian Juprana and multi-colored granites. The district of Mysore is famous for its black granite and the Bellary and Raichur is famous for its Pink version. Pink granite is also quarried at Uduvagere and Managalli in Magaditaluk of Bangalore district, KSMCL exports Granites and rough blocks to Taiwan, Singapore and Australia in the far East and to the United States, Germany and Italy in the West.

Felsite: Karnataka is the only Indian state where Felsite is produced. The large amount of occurrence of Felsite rocks are reported to have been found in Hosahalli, Kirangpur, Srirangapatanam and Mysore. Felsite is used in construction and medical industry. Felsite used in construction industry include Arrowheads, Cutting tool, Knives, Scrapers, Spear points. Uses of Felsite in medical industry include Surgery.

Manganese ore: Karnataka has large recoverable reserves of manganese ore in the country and is mostly found in the Chirtadurga, Shimoga and North Kanara districts as well as the Bellary, Tumkur and Mysore districts

Other minerals like Chromite, Dolomite and Bauxite are found scattered across the state. Chromite is found in altered ultabasic rocks in the districts of Chikmangalur, Chitradurga, Hassan, Mysore and Shimoga. There is a possibility of reserves of 1112 million tonnes of Dolomite deposit in the regions of Belgaum and Bijapur districts. Bauxite is found in the Chikmangalure district.

Karnataka is one of the few Indian states to formulate a progressive mineral policy as early as the year 2000.

Renewable energy resources of Karnataka

Karnataka is blessed with abundant renewable energy resources of all forms including Solar, Wind, Small Hydro, Biomass, Cogeneration, Waste-to-Energy, and Tidal.

The Karnataka Government has established Karnataka Renewable Energy Development Limited (KREDL) on 8th March 1996 registered under Company Act 1956 to promote non-conventional energy in Karnataka.

Solar Energy: Karnataka is a leading state in the installation of solar energy capacity in the country. As on December 2020, the installed capacity of solar energy in the state is about 7,366 MW which is highest among renewable rich states in India.Karnataka is home to one of the World’s largest solar parks “Pavagada Solar Park”with a capacity of 2,050 MW which is operational.

Wind Energy Projects: Karnataka is one of the leading states in development of wind energy capacity in the country. As on December 2020, the installed capacity of wind energy in the State is about 4,897 MW

Biomass, and Waste to Energy Projects: State has strong agricultural activities with vast biomass resources. The State has installed about 139 MW biomass projects as on December 2020. The State has issued NOCs to various Waste to Energy projects using Municipal Solid Waste (MSW).

Mini and Small-Hydro: Karnataka is endowed with hydro power potential which is estimated to be about 3,100 MW out of which the State has installed about 903 MW of small hydro capacity as on December 2020.

- Manish Kumar
STC Bhubaneswar

उच्च कार्यपालक वेतनमान VIII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

श्री सी. एम. मिनोचा
मुख्य महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

श्री जी. के. सुधाकर राव
महाप्रबंधक

श्री आलोक कुमार
महाप्रबंधक

नवनीत कुमार
महाप्रबंधक

श्री कबीर भट्टाचार्य
महाप्रबंधक

श्री संजय नारायण
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

श्री गणेश प्रसाद
उप महाप्रबंधक

सुश्री आर. जास्मिन
उप महाप्रबंधक

श्री वेद प्रकाश अरोड़ा
उप महाप्रबंधक

शिखर की ओर...

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

श्री गणेश तिवारी
उप महाप्रबंधक

श्री सुसरला अरविंद कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री सैयद जवाहर
उप महाप्रबंधक

श्री संजीव कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री प्रांजल बाजपेई
उप महाप्रबंधक

श्री सुशांत कुमार मिश्रा
उप महाप्रबंधक

श्री रामचंद्रन ज्योति कृष्णन
उप महाप्रबंधक

श्री दिलीप मिश्रा
उप महाप्रबंधक

श्री सुनील कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री सुजीत एस तारीवाल
उप महाप्रबंधक

श्री अक्षत तेलंग
उप महाप्रबंधक

श्री जितेंद्र नारायण सिंह रौतेला
उप महाप्रबंधक

डॉ. चेतना पाण्डेय
उप महाप्रबंधक

श्री प्रशांत कुमार साहू
उप महाप्रबंधक

श्री टी ए नारायणन
उप महाप्रबंधक

श्री टी कामेश्वर राव
उप महाप्रबंधक

श्री सिद्धार्थ किरन मजूमदार
उप महाप्रबंधक

श्री प्रभाष शंकर
उप महाप्रबंधक

श्री हेमराम शंकर
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं

Karnataka, the first state to implement National Education Policy (NEP 2020) and launch UUCMS (Unified University & College Management System) portal

Karnataka has officially become the first state in the country to implement National Education Policy (NEP-2020). The state has set an ideal example to other states of the country.

The primary and secondary education council will be established with the objective of transforming and empowering the knowledge landscape of Karnataka in line with new policy. If it is implemented successfully, the new policy would free the education system from vertical silos, compartmentalization, and a closed jacket structure of the teaching-learning process.

The NEP 2020 emphasized greater involvement of technology in education & creating a National Education Technology Forum (NETF) which would formulate policies under the NEP. The central government launched the National Digital Education Architecture (NDEAR), along the same lines. The UUCMS (Unified University & College Management System) at state-level is launched by Karnataka government.

What is the UUCMS?

The UUCMS unifies and integrates the functioning and the governance of all colleges and public universities in the state bringing all of them under one umbrella. Ensuring uniformity and unifying the General and Technical Higher Education Institutions (HEIs) will centralize the data availability on higher education from the grass-root level.

Currently, the policy will be implemented in Karnataka for higher education under which students will have the freedom to choose each of the three subjects where two subjects will be from the discipline: of Arts, Science and Commerce and one elective subject in any discipline. The students will have multiple entry and exit levels. The first year will be a certificate course, on completion of the second year, students will get a diploma and in the third year, they can get a degree. On completion of the fourth year, students will be given Honors Degree.

The state has also implemented Learning Management System (LMS) under which there will be smart classrooms that are internet enabled. Twinning programs at diploma level under partnership with two US based institutions are announced in cybersecurity and travel and tourism.

Highlights on National Education Policy (NEP) 2020:

The global education development agenda reflected in the SDG4 of the 2030 Agenda for Sustainable Development, adopted by India in 2015 - seeks to “ensure inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all” by 2030. Such a lofty goal will require the entire education system to be reconfigured to support and foster learning mandates revisit to existing policy.

The National Education Policy covers in four parts;

Part I : School education

Part II : Higher education

Part III. : ‘Other Key Areas of Focus’ such as adult education, promoting Indian languages and online education

Part IV : ‘Making it Happen’

It aims for universalization of education from pre-school to secondary level with 100 % Gross Enrolment Ratio (GER) in school education by 2030.

One of the salient features of the new National Education Policy is shifting from the decade-old current 10+2 system to a new 5+3+3+4 curricular and academic structure based on cognitive and socio-emotional formative stages of children: Foundational Stage (age 3-8 years): 3 years of pre-primary and Grades 1-2, Preliminary Stage (8-11 years): Grades 3-5, Middle Stage (11-14 years): Grades 6-8 and Secondary Stage (14-18 years): Grades 9-12.

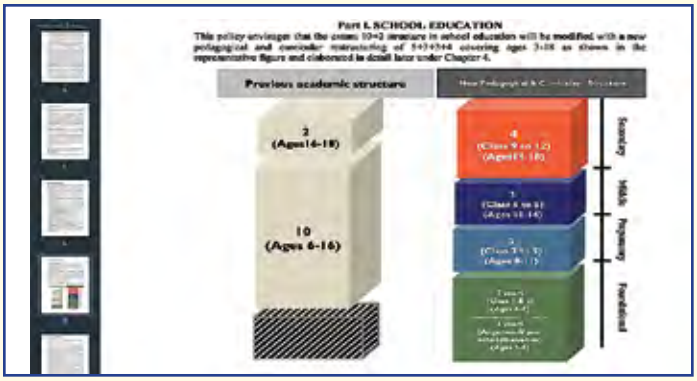

Pre-schooling emphasis on "Foundational Literacy and Numeracy" and aimed to achieve" in primary schools by 2025.

The medium of expression until grade five but preferably till grade eight or beyond shall be the student's mother tongue, or the local or regional language. The 'three-language formula' will continue to be implemented in schools, where two of the three languages shall be native to India.

The policy emphasizes on 'Higher Education Institutions' (HEIs) shall be multidisciplinary by 2040. By 2030, there shall be at least one multidisciplinary HEI in or near every district. The policy aims for the Gross Enrolment Ratio in higher education to increase to 50% by 2035 from 26.3 per cent in 2018. HEIs shall have the flexibility to offer Master's programmes of two years for those who have completed a three-year undergraduate programme, of one year for students who have completed a four-year undergraduate programme, or five-year integrated Bachelor's and Master's programmes.

The policy says that the Centre and States shall work together to increase public investment in education to 6% of the Gross Domestic Product (GDP), from the current 4.43%.

- Mohammad Ali Naguri
Staff College, Bengaluru

कर्नाटक की गतिविधियों का अन्वेषण

कर्नाटक चारों ओर से प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण अंचलों, वन्य जीव-जंतुओं, पारंपरिक स्थलों, ऐतिहासिक स्मारकों आदि से घिरा है. इस राज्य को 'एक राज्य, कई जगत' की उपाधि से सम्मानित किया गया है. यहाँ आकर पर्यटक यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कर शांति एवं ताजगी महसूस कर सकते हैं.

बेंगलूरू में माइक्रो फ्लाइट हवाई यात्रा : अब बेंगलूरु के जक्कुर हवाई अड्डे में बिना किसी लाइसेंस के पर्यटक हवाई जहाज़ (माइक्रो फ्लाइट) उड़ा सकते हैं. माइक्रो फ्लाइट, विमान चालक और प्रशिक्षार्थी /यात्री के लिए तैयार की गई दो सीटों वाली विमान है. लघु विमान संचालक लगभग दस से पंद्रह मिनट तक की उड़ान की अनुमति देता है. यहाँ वज़न प्रतिबंध लागू होता है एवं बच्चों को विमान उड़ाने की अनुमति नहीं दी जाती है. माइक्रो फ्लाइट विमान उड़ान की कीमत लगभग तीन हजार से पाँच हजार तक होती है.

बादामी चट्टान की चढ़ाई : बादामी स्थल का भ्रमण करते समय बादामी की चट्टानों की चढ़ाई करना पर्यटकों के लिए अत्यंत हर्ष एवं उल्लास का क्षण होता है. यहाँ की चट्टानें बलुआ एवं खड़ी होती है, जिसके कारण यह चढ़ाई के लिए उपयुक्त मानी जाती है. इसलिए इस क्षेत्र को 'चट्टान चढ़ाई का मक्का' के नाम से संबोधित किया जाता है. चट्टान पर चढ़ाई अभियान की अवधि लगभग दो से चार घण्टों की होती हैं.

चूंकि चट्टानें खड़ी एवं दुर्गम होती है, अत: सुरक्षा कारणों का ध्यान रखते हुए चढ़ाई अकेले करने के बजाय विशेषज्ञों की देख-रेख में करनी चाहिए. यहाँ अन्य पर्यटक स्थल बनशंकरी (5 कि. मी.) महाकूटा (6 कि.मी), अईहोल (35 कि.मी) आदि हैं. बादामी बेंगलूरू से 450 कि.मी. की दूरी पर स्थित है.

मंगलूरु के प्रसिद्ध केले के बन्स (मीठी रोटी) : यह तटीय कर्नाटक में काफ़ी लोकप्रिय है. इसे बनाने में पके केलों, मैदा एवं चीनी का प्रयोग किया जाता है. इस मीठी रोटी का सेवन आलू, गाजर एवं मसालों के मिश्रण से बने एक विशेष प्रकार की सब्जी के साथ किया जाता है. मंगलूरू, उडुपी कुंदापुरा, कार्कला आदि कर्नाटक के तटीय शहरों के होटलों एवं बेकरी में केले से बना यह आहार सरलता से उपलब्ध हो जाता है.

डांडेली : काली नदी में कर्नाटक वन विभाग द्वारा संचालित श्वेत पानी राफ्टिंग के कारण, डांडेली कर्नाटक का एक जनप्रिय आमोद क्रीडा स्थल है. डांडेली की काली नदी बारह किलोमीटर तक का राफ्टिंग विस्तार प्रदान करती है. नौकायान, डोंगी विहार, पक्षी अभयारण्य यहाँ के प्रमुख आमोद क्रीडा स्थल है.

- विजय राम दास
रानीबेन्नूर शाखा, शिवमोग्गा

FESTIVE KARNATAKA

Karnataka is the best destination in its local festivities. One can get a glimpse of the state's culture and can learn more about the significance of these festivals. If you have ever been to Karnataka, you should experience the glory and vibrancy of the state. Make sure that you attend some of the cultural and religious festivals when you come.

Festivals of Karnataka:

Exhibitions, performances, delicious dishes await you on your arrival in the state. You can enjoy various festivals such as :-

1. **Kambala Festival:** Kambala Festival is a buffalo race organised in Dakshin kannada and Udipi districts by the farming communities between November and March every year. This is a two day festival where hundreds of buffaloes are groomed and exhibited before participating in the race guided by the farmers in the specially designed tracks.
2. **Hampi Festival:** This festival is also known as "Vijaya Utsava", Hampi festival is a grandiose affair in South India. It is a cultural extravaganza organised in the village of Hampi near Bellari district, which is a famous tourist destination and heritage site. World famous artists and musicians attend this festival and showcase their marvellous talent and spirit. Stalls line in the streets of Humpi, selling handicrafts and little trinkets. This is definitely one of the most vibrant Cultural Festivals of Karnataka.
3. **Pattadakal Dance Festival:** This is one of the popular dance festival in Karnataka which attracts the attention of millions of tourists every year. This festival is organised in various temples of Pattadakal town since 7th century and is now recognised as world heritage sites by UNESCO.
4. **Makar Sankranti:** This is the biggest and most famous harvest festival of Karnataka. It is dedicated to the Sun God and celebrated across the country with different names with full festivities. Colourful decorations and beautiful rangolis are spotted everywhere.
5. **Ugadi:** is also known as Gudi Padwa, and marks the start of the New Year as per the Hindu calendar. According to Hindu Mythology, this is the day when Lord Brahma initiated the creation of universe. This festival is celebrated with fervour and special dishes are cooked. People believe that, this is an auspicious day for purchase of assets or starting new ventures.
6. **Vairamundi Festival:** In this festival, Lord Vishnu is adorned with jewels. During this festival the idol of Lord Vishnu is taken out from the temple and a colourful procession is a very special attraction which attracts more than 4 lakhs pilgrims every Year in Melkote city.
7. **Karaga Festival:** Karaga festival is the oldest festival and is held at the Dharmaraya swamy temple. This celebration lasts for 9 days and starts in March/April. A grand procession is held during which Karaga, an earthern pot decorated with flowers is carried on the head without touching it.
8. **Vara Mahalakshmi Pooja:** this Pooja is performed by the women in Karnataka. Varalakshmi Vratam is performed on full moon day and a thread is worn by married women and sweets are distributed among family and friends. Women also visit the temple to offer prayers for wealth and wisdom to their family.
9. **Shri Vithappa Fair:** This festival is organized every year on the 14th or 15th day of the month Aswija (Sravana Masa - usually comes in October). The three day fair has great religious and cultural importance and is visited by a large number of men and women from across the state. pooja is performed followed by a grand procession.
10. **Tula Sankramana:** Tula Sankramana is celebrated across India with different rituals. It is one of the famous festivals of Karnataka celebrated in the Coorg district. to enjoy the harvesting of rice fields. On the day of the festival, Goddess Lakshmi is worshipped and a bath in the sacred river is considered auspicious.
11. **Kannada Rajyotsava:** Karnataka Rajyotsava signifies the formation of the state and is another popular event. On this national festival of Karnataka, a holiday is declared among schools, colleges and offices for the festivities to take place. Traditional dances are

performed, and the state flag is hoisted every where and sweets are distributed.

12. **Groundnut Festival:** Groundnut festival is also known as Kadalekai parishe. You can attend this festival at Dodda Ganesha temple in Basavanagudi, Bangalore. On this festival, farmers offer their first groundnut produce to Lord Basava at the temple. Different kinds of groundnuts are available, and you can get the best quality by visiting the Dodda Ganesha Temple.
13. **Mahamastakabhisheka:** is a very important festival observed by Jains in the town of Shravana belagola in Karnataka. It is celebrated every 12 years and last in 2018. Devotees sprinkle holy water on people who participate in the festival, with gold and silver coins as offerings. The statue is bathed with liquids such as milk, saffron paste, and powder of vermilion turmeric. This festival is an important part of ancient Jain tradition.

Karnataka also celebrates Ganesh chaturthi, Gowri festival, Dussehra, and Deepavali with entire India. Each festival has his own significance and everyone in Karnataka follows all the traditions enjoying each moment.

- Satya Sudha Sista
RO Bengaluru (South)

KARNATAKA - The Seat of Carnatic Music

The State of Karnataka is home to (Vaggeyakaaras) music composers, classical musicians, scholars in classical music, in both - Carnatic and Hindustani styles of music. Saint Purandaradasa (1484-1564) is known to be 'Grandsire of Carnatic Music'. He was a prolific composer believed to have composed thousands of compositions. He codified the beginners' lessons and also prescribed a full-fledged syllabus to learn the art of Music. Though majority of his compositions were lost in political turmoil in Vijaya Nagara empire, - a few lyrics survived, which are now sung in various tunes by present day musicians. Kanakadasa (1509-1609) was also a great Saint and Haridasa, having composed Keertanas and Ugabhogas (verses in praise of Almighty), Devaranamas (devotional songs), compositions in Kannada, in Carnatic Music style. Dasa Sahitya has enriched Carnatic Music literature with the musical works of other Haridasas like Gopala Dasaru, Prasanna Venkata Dasasu, Vijaya Dasaru, Vyasa Rayaru et al. As the Composers of early centuries enriched Carnatic Music with their works in Sanskrit and Kannada, during the later centuries, Court Musicians, Saints like Yogi Nareyana of Kaivaram (in the present Kolar District of Karnataka) have contributed a lot to Carnatic Music through works in Kannada, Telugu. Though the principal characteristic of these compositions was Bhakti or devotion, many composers have taken the medium of music to instill traits of morality, humanity, kindness, simple living, in the minds of public. For many of them, music was a way of life, a passion, than any other thing.

The kingdom of Mysore Empire had evolved into an independent Empire by the end of 17th century with the decline of Vijayanagara Empire. Mysore and Music have a long bonding for each other. Many musicians and composers adorned the Royal Courts of Mysore Kings right from 16th Century. The Kings of Mysore were basically connoisseurs of fine arts, literature, culture and Classical Music. Umpteen number of musicians were associated with Mysore Kingdom from 18th Century - some of who are - Shonti Venkataramanaiah, Mysore Sadasiva Rao, Veena Seshanna, Mysore Vasudevachar, Bidaram Krishnappa, Dr Harikesanallur Muthaiah Bhagavathar, Mysore T Chowdaiah, Tiger Varadachariar, Mysore Doreswamy Iyengar. For many of them, the City of Mysore, the Capital of Kingdom has become their Surname. Jayachamaraja Wodeyar, the Last King of Mysore who merged the Kingdom with Republic of India in 1950 was a prolific music aficionado, a discerning music lover, an astounding composer and expert in three schools of music - Carnatic, Hindustani and western.

Karnataka will keep enthralling classical music lovers across the globe with its great lineage of music and passionate musicians who are taking forward the centuries-rich heritage and culture for posterity.

- B Bhanu Moorthy
RO, Bengaluru (North)

Folk Culture of Karnataka

"A nation's culture resides in the hearts and in the soul of its people"- Mahatma Gandhi

Folk culture and customs are the beliefs and traditions, within a group that preserves it's language, social order and ways of interpreting the world.

From its exuberant art and culture of multilingual ethnicity, astounding dance forms, mesmerizing music, sophisticated heritage, bright festivals, elegant clothing and delectable cuisine, Karnataka has a plethora of historical secrets, interwoven within a rich and varied culture. Being the home to various tribes like the unique Siddi community, many Tibetan refugees, anthropological enigma like Kovada community, the Lingayat community and others, the state is enriched in its unique culture.

- **Folk Dance:**

  Dance has been the form of expression for almost all the folk culture since ancient days. Holding a large number of dance forms, people from different parts of Karnataka are continuing the legacy through various forms like:

- **Dollu Kunitha (Drum Dance)**

  Dollu Kunitha, a popular folk dance associated with the worship of Shree Beeralingeshwara who is considered as an avatar of lord Shiva, originated in the rituals of Kuruba Gowda community of North Karnataka. Dollu, i.e drum, associated with lord Shiva who is believed to have made a drum out of the skin of demons he killed and danced. Thise dame is Performed in a group of 10-12 well built and strong men and women, in a circular or semi circular fashion beating the drums in rhythm. This dance form is a part of various religious festivals, cultural events, like Karaga festival procession, Mysuru Dassara, Jambu Savari, Bengaluru habba etc.

- **Huli vesha (Tiger Dance)**

  Huli Vesha, a unique dance form of coastal Karnataka is mainly performed by local youth during the Navaratri festival. to pay tribute to Goddess Durga. The performance involves a group of people dressed up in a tiger costume, tiger mask or painting, which can be seen in all the coastal towns like Mangaluru, Udupi, Kundapura, Moodubidiri, Karkala.

- **Kamsale Nrutya**

  Kamsale Nrutya is a popular folk dance from districts like Mysuru, Chamarajanagar and Mandya. Bessu Kamsale is another vigorous dance form closely associated with the rituals of Male Mahadeswara worship. 'Kamsale', a pair of small circular metal plates with a slight projection in the centre is often played in rhythm with the devotional songs exalting the glory of lord Mahadeswara. Men from Halu Kuruba tribe in Chamarajanagara district are well known for the dance. The said form, known to be in practice since centuries is part of a three day car festival of Male Mahadeswara Hill temple during Deepavali.

- **Dammami Dance (Siddi Shamal)**

  Dammami is a dance form of Siddi community that was initially performed by Siddis post hunting to honour the tribal God Siddhinas. While women sing repetitive song patterns, men usually play the dammam, made of wood and deerskin on the sides and set the rhythm.

- **Yakshagana (Dance Drama)**

Yakshagana is an elaborated dance drama unique to Karnataka. While 'Yaksha' means celestial and 'Gana' means music, Yakshagana itself is a blend of dance, music, song, scholarly dialogues and colourful costumes. It is said to be a five hundred year old dance drama form that is more popular in places like Udupi, south Kannada, north Kannada, Shimoga and western parts of Chikmagalur districts. Performed in a group of 15-20 actors and one Bhagavatha, Yakshagana is generally regarded as a form of folk theatre and has strong classical connections.

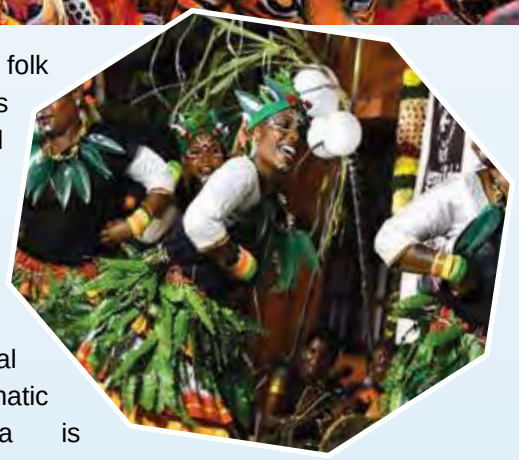

♦ **Folk Music:**

Being the homeland for Hindustani classical music and Carnatic music, Karnataka is enriched in its folk heritage also. Ballads or narrative folk songs are sung mostly in commemoration of some heroic deeds by the legendary men and women.

Sugama Sangeetha is another folk music genre in which poetry is set to music.

Janapada Geethe is yet another thriving music form of Karnataka, By combining elements of prose and verse, several folk epics have been created.

♦ **Folk literature:**

Karnataka holds its own treasure of folk literature. Mary Frere in her book 'Old Deccan Days' (published in 1868) had depicted beautifully about the folk lores and local life's stories of then Karnataka.

Popular playwright novelist Chandrasekhara Kambara has made the folk lores more popular with his adaptions of 'Siri Sampige', 'Singrravva Mattu Aramane', 'Kadu-kudure' and 'Sangya-Balya'.

The late Girish Karnad won international acclaim for his play 'Nagamandala' which was based on a folk story itself.

- Debleena Pramanik
RO, Bengaluru (South)

Founder of E-Corporation Bank
Khan Bahaddur Haji Abdullah Haji Kasim Saheb Bahaddur

Haji Abdullah belonged to a family that came from Junagad of Gujarath, as traders. Abdullah was born in 1882 and his father's name was Kasim Budan Saheb and his mother's name was Banu Bibi. He was just 19 years old when his father died.

Abdullah Saheb had his high school education in Udupi. He knew Kannada, Tulu, Urdu and English languages. He was a man who never exhibited the rich man's style or ego and he lived as a common man, even though he was the richest man in Udupi.

Young Abdullah continued his father's trade, dealing in sandal oil, rice and dry fish. Abdullah had the sole agency for Madras State, for then famous Vimco match boxes.

Richest man with helping hand:

After 1901, he built a house at Udupi, where Corporation Bank started. His bungalow at Udupi was palatial. It had marble and ceramic floorings, procured from Bombay. It was a very well provided house with all amenities.

Saheb's residence was at a calling distance from the Sri Krishna Temple area. The present government hospital area (Haji Budan Memorial Hospital) had a tennis court in which he played tennis. He would visit the temple, and pay his respects. On his death even the most orthodox Brahmins mourned.

Origin of Corporation Bank:- A Swadeshi Bank

The East India Company founded the Bank of Madras in 1843. Its Mangalore Branch started functioning in 1858.

Abdullah Saheb was motivated to start a Swadeshi Bank. The public notice issued by Haji Abdullah regarding the establishment of Canara Banking Corporation Ltd., said "The public are hereby informed that, at meeting of the principal residents of Udupi held, it has been decided to start an association styled "The Canara Banking Corporation (Udupi) limited".

Accordingly, Corporation Bank started functioning on 12.03.1906 in a room of the residence of Haji Abdullah, provided by him. Abdullah was a youthful corporate dreamer at the age of 24.

Corporation bank progressed carefully, with the Gandhian axiom Haji Abdullah resigned from the Presidentship of the Bank in 1929. As recorded in the silver Jubilee Souvenir he did so due to pressure of work of the legislative assembly and the Haji Committee. By then the plant he sowed, had grown into a big healthy tree, a 'Kalpavriksha'. Haradi Keshava Pai, Udupi succeeded Abdullah Saheb as President.

A great leader recognized by the British:

In 1909, the British government conferred the title "KHAN SAHEB" on Haji Abdullah. On July 25, 1909 he was given a public felicitation and the British Government published a report of the function making a note of all sections who had attended the function. King George V, participated in the Delhi Darbar which was arranged on 11-12-1911. Abdullah Saheb was an invitee to the Darbar where he was honoured with the Delhi Darbar Medal.

A great, honest, service oriented politician:

In 1917, he became the President of the Kundapura Taluk Board. He was often moved and saddened by the plight of the people. In 1918, he became the President of the Taluk Board Udupi. The Udupi Municipality started functioning in 1935. Abdullah Saheb became its first President.

Haji Abdullah was chosen by the Madras Government as a member of the West Coast and Nilgiris. Under the re-formulated system of 1921, he continued as a member of the Council. He was elected to the Madras Legislative Assembly, unopposed.

The land for Government Hospital (Ladies Hospital) on Kavi Muddanna Road in Udupi was donated by Abdullah. The VJU Club, Anjuman Urdu School, are all indebted to Abdullah Saheb for the land sites. Majority of govt. office premises and college premises were donated by him. He was a symbol of charity.

He was President of the Canara Banking Corporation Ltd. from its inception till 1929 when he had to relinquish his position. Then hard times overtook him and he went deeper and deeper into debt. Some believe that his generosity exceeded his wisdom.

On the morning of 12th August, 1935, Haji Abdullah Saheb was found lying unconscious in his bed. All efforts to revive him failed and after a couple of hours, he was pronounced dead. It was a sad end to a great life. At the time of his death, he was just 53.

- Dr H T Vasappa
RO, Udupi

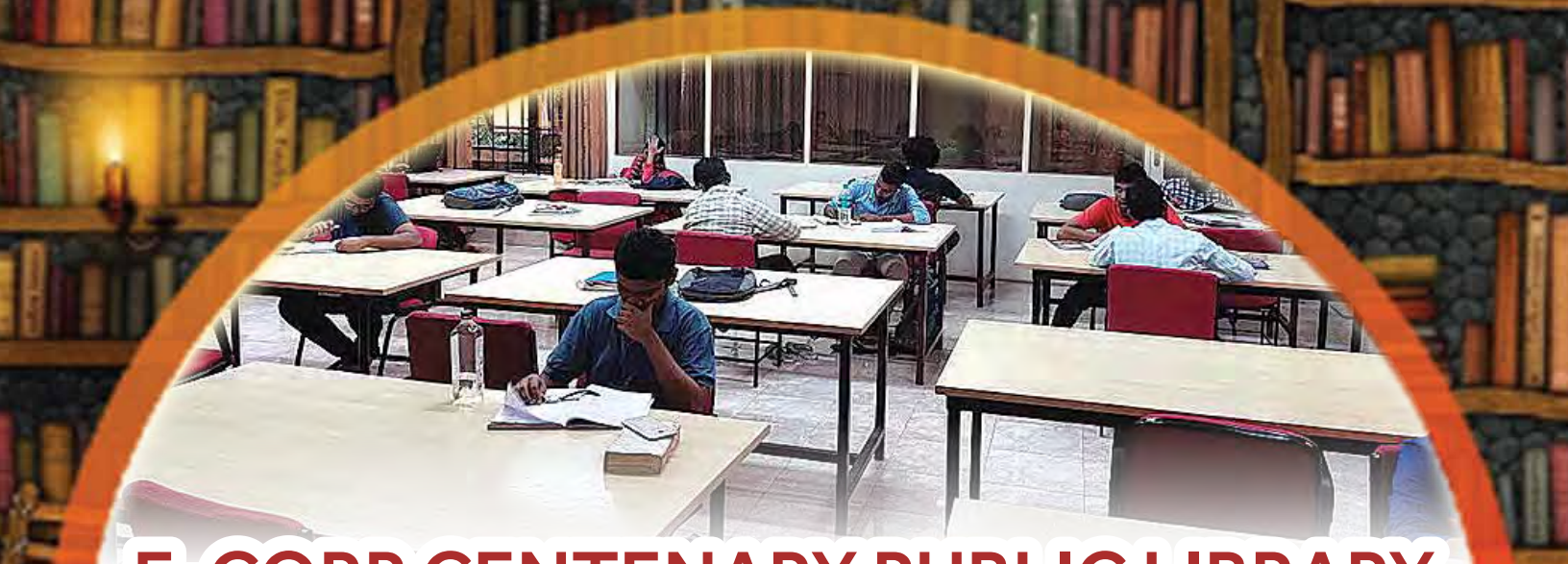

E-CORP CENTENARY PUBLIC LIBRARY

E-Corporation Bank Centenary Public Library is one of the prime institutions to the Public. As part of Centenary Year celebrations, a modern library was set up and dedicated to the Public at Mangaluru.

No other banks in India created the same. A sum of Rs.2.5 crore was spent on setting up a Public Library in Mangalore. Having three floors basement, ground and first floor with an area of about 3700 sq. ft. to 4000 sq. ft. on each floor. In basement having Internet section, Video Conferencing room and Book section. The ground floor comprised of Circulation of books i.e. Book issue/ return / renewal section, Newspaper/ journals section and admin wing. The first floor provides the reading room facility.

The Foundation stone of the library building was laid on 30th August 2005 by the then Chairman and Managing Director of the Bank Mr. V K Chopra. Library building was inaugurated on 12th March 2006 by the then Honorable Finance Minister Mr. P Chidambaram when the Bank's Centenary celebrations came to a conclusion.

The library provides the facilities of issuing/reference of books i.e. Banking, Commerce, Management, Engineering, Medical, Religion, Literature, fiction, Non-fiction, Self-development, competitive examination books etc.

Library subscribes to 19 daily newspapers viz; Kannada 09, English 08, Hindi 01, Malayalam 01, and 45 magazines weekly, fortnightly, and monthly.

1. Library comprises of Circulation counter, Book section, Newspaper section, Reading room section and children's book section
2. Total Collection of books are 18063 as on Aug.31.2021
3. The books are arranged on the basis of International Classification System named DDC (Dewey Decimal Classification system) from 000 to 999 with different subjects.
4. There are 200 visiters to the library for reading newspaper / journals / books issue and reading room section.
5. The library has a separate software i.e. New Gen Lib. for book issue / return and renewal. All documents of the library are stored in this software.
6. There is a ramp facility for the convenience of the physically handicapped and senior citizens.

For membership of the library an amount of Rs.400/- is to be paid per year. Reference books, Newspapers & Periodicals are free of cost for all to read. Membership validity is one year. The library is facilitated with separate childrens book section and reference books section.

The book section is having a good collection of books which are arranged as per International Classification System DDC (Dewey Decimal Classification System) which was prepared by Melvil Dewey who was Professor in Library and Information Science.

Books are arranged by Classification notations i.e. from 000 to 999. 000 includes Computer Science and General Knowledge books, 100 includes Philosophy, Logic and Ethics, 200 includes religious books, 300 includes Social Science, Economics, law etc., 400 includes language books, 500 includes Pure Science i.e Mathematics, Physics, Chemistry Biology etc., 600 includes Technology/ Engineering and Medical books, 700 includes Arts books i.e. Architecture, Drawing, Painting, sports etc., 800 includes Literatures books, 900 includes History, Geography and Travel books. The library is having a good collection of books which are very useful for General Public and School/ College Students and also Children and the same is appreciated by almost all members/public.

- Roopalekha
RO Mangalore

स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु का मुख्य द्वार

हमारा महाविद्यालय : हमारी शान

जब कोई कर्मचारी या अधिकारी प्रथम बार अपनी शाखा या कार्यालय में जाता है, तब वहाँ यह अनुभव करता है कि उसने अभी तक जो भी शिक्षा विद्यालयों, महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में प्राप्त की है, उसका यहाँ प्रत्यक्ष रूप में बहुत ही सीमित उपयोग है और यहाँ पर उसका कार्य विशेष प्रकार का है, जिसके लिए उसकी अब तक की शिक्षा अपर्याप्त है. यहाँ पर उसे अपने कार्यों को सुचारु रूप से संपादित करने के लिए कुछ विशिष्ट प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता प्रशिक्षण के माध्यम से पूर्ण की जाती है. बैंक में एक लिपिक या अधिकारी निश्चित सामान्य शिक्षा प्राप्त किए होता है, परंतु उसे कार्यालय में काम कैसे किया जाए, फाइलों में कागजों को कैसे रखा जाए, उन पर नोटशीट कैसे लिखी जाए आदि ज्ञान तो प्रशिक्षण के बाद ही प्राप्त हो पाता है. वस्तुत: प्रशिक्षण का अर्थ है कि काम के विषय में व्यावसायिक, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना. सरल शब्दों में यह कह सकते हैं कि संस्था के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य व्यावहारिक कौशल व ज्ञान प्रदान करना ही प्रशिक्षण है. हमारे बैंक में प्रशिक्षण की इस गरिमामई भूमिका का निर्वहन स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु बड़ी शिद्दत से कर रहा है.

प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त हमारे बैंक का यह मनमोहक परिसर वाला महाविद्यालय; बेंगलूरु रेलवे स्टेशन व बस स्टेशन मैजेस्टिक से लगभग 20 किमी की दूरी पर कलकेरे नामक स्थान पर बन्नेरघट्टा रोड पर AMC इंजीनियरिंग कॉलेज के सामने स्थित है. यहाँ पहुँचने के लिए यातायात के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं, यथा- बस, कैब, मेट्रो आदि.

उल्लेखनीय है कि इस हरे-भरे परिसर के निरंतर विकास में हमारे बैंक के उच्च प्रबंधन के साथ यहाँ पर सेवा देने वाले प्राचार्यों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है. अब तक इस भव्य महाविद्यालय में 25 प्राचार्य सेवा दे चुके हैं. वर्तमान में महाविद्यालय के प्राचार्य एवं उप महाप्रबंधक श्री हृषीकेश मिश्रा जी हैं. (वर्तमान प्राचार्य अपने शानदार हिन्दी लेखन के लिए हमारे देश के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार से भी पुरस्कृत किए जा चुके हैं, जो हमारे महाविद्यालय परिवार के लिए अत्यंत गर्व का विषय है.)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

वैसे तो यूनियन बैंक में प्रशिक्षण की एक समृद्ध परंपरा रही है. तथापि स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु के लिए भूमि की खरीद व इसकी स्थापना की एक दिलचस्प कहानी है. वस्तुत: अगस्त 1979 में हमारे बैंक ने बन्नेरघट्टा रोड, बेंगलूरु पर कर्नाटक जीसस सोसाइटी से लगभग 36.21 एकड़ जमीन 17,03,421.25 रुपये में खरीद ली. इस जमीन की खरीद में बहुत से कार्यपालकों के साथ श्री एल. सी. मिस्त्री का विशेष योगदान रहा जिन्होंने प्रशासनिक विभाग प्रमुख के रूप में प्रस्ताव के महत्व को समझा और इस विचार को उच्च प्रबंधन तक पहुंचाया. फलस्वरूप 2 अक्टूबर 1981 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु का उद्घाटन किया गया, जो आज बैंक का प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान है. उस समय 5 अन्य प्रशिक्षण केंद्र अहमदाबाद, अलुवा, बैंगलोर, बोर्डी और लखनऊ थे. वर्तमान में तीन बैंकों के एकीकरण के पश्चात कुल 9 अन्य प्रशिक्षण केंद्र लखनऊ, भोपाल, गुड़गाँव, पवई, कोलकाता, भुवनेश्वर, विशाखापट्टनम, हैदराबाद और मैंगलोर हैं, जहां पर लगभग सम्पूर्ण भारत में तैनात कर्मचारियों एवं अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है.

धरोहर:

अतिथि गृह: यहाँ पर स्थित अतिथि गृह का अपना गौरवशाली इतिहास है. सर मिर्जा स्माइल ने, जो 1926 से 1941 तक तत्कालीन मैसूर प्रांत के दीवान थे, इस भवन के बाएँ हिस्से को समर रिज़ॉर्ट के रूप में इस्तेमाल किया था. पार्क एवं गार्डेन की संख्या को उन्होंने बढ़ावा दिया. उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप बेंगलूरु और मैसूर को गार्डेन सिटी के रूप में जाना जाता है. उनकी याद में ही इस भवन के बाएँ भाग को रिक्रिएट किया गया है. वर्तमान में यहाँ उच्च कार्यपालक गण स्टाफ महाविद्यालय में आगमन पर ठहरते हैं.

ग्लास हाउस: इस परिसर में स्थित ग्लास हाउस मे भारत में बैंकिंग सुधारों व वित्तीय सेक्टर के सुधार के लिए बनी नरसिंहन समिति की प्रथम बैठक सम्पन्न हुई थी.

संरचना:

स्टाफ महाविद्यालय बेंगलूरु का प्रांगण बहुत मनमोहक है. यह प्रांगण आने वाले सभी आगंतुकों में सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है. इस प्रांगण के भीतर चन्दन, आम, चीकू, नारियल, अमरूद और बांस के पेड़ मौजूद हैं. यहाँ स्थित 3 भव्य छात्रावास कदंब, चालुक्य और होयसल, जिनका नामकरण दक्षिण भारत के तीन वैभवशाली राजवंशों के नाम पर किया गया है, इस हरे-भरे प्रांगण की शोभा में चार चाँद लगा देते हैं. इस गौरवशाली परिसर में प्रशासनिक भवन, स्टाफ आवास हेतु 3 विशाल भवन, प्राचार्य निवास भवन, 10500+ पुस्तकें, 34+ आवधिक पत्रिकाएं, 17 समाचार पत्र 745+ सीडी/वीसीडी और 357+ रिपोर्टों से युक्त पुस्तकालय, 5 क्लासरूम, ओपेन क्लासरूम, 102 की क्षमता वाला सम्मेलन कक्ष, 125+ की क्षमता वाला सभागार, तरणताल, व्यायामशाला, योगा कक्ष, इंडोर गेम हाल, टीवी रूम, 3 कैंटीन, ग्लास हाउस, शताब्दी दीवार, वॉटर हार्वेस्टिंग फाउंटेन, जॉगिंग ट्रैक, एक्यूप्रेषर ट्रैक, आनंदवन, शांति निकेतन, चिंतन कुटीर, धन्वन्तरि वाटिका, 3 बैटमिंटन कोर्ट, चन्दन वन आदि स्थित हैं.

कदंब छात्रावास

चालुक्य छात्रावास

होयसल छात्रावास

प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियां:

स्टाफ महाविद्यालय प्रशिक्षण के क्षेत्र में निरंतर नवाचार का समावेश करता रहा है, जो महाविद्यालय को विभिन्न मंचों पर प्राप्त होने वाले पुरस्कारों से प्रदर्शित होता है. विभिन्न नवाचारों में से ही एक 'यूनियन प्रेरणा' है. इस महत्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत प्रत्येक जॉब फ़ैमिली के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए गए हैं. इसमें जॉब फैमिली में आने वाले स्टाफ सदस्यों के लिए चार वर्षीय ग्रूमिंग प्लान तैयार किया गया है, जो कर्मचारियों को अपने चुने हुए क्षेत्रों में अपनी कुशलता और ज्ञान को निखारने का अवसर उपलब्ध कराएगा. अब तक महाविद्यालय द्वारा हजारों की संख्या में बैंक कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया है.

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि प्रशिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्राप्त होने वाला 'गोल्डेन पीकॉक नेशनल ट्रेनिंग पुरस्कार' अब तक हमारे महाविद्यालय को कुल 9 बार प्राप्त हो चुका है. इसी क्रम में यह भी उल्लेखनीय है कि अभी तक हमारे महाविद्यालय को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए भी कुल 20 पुरस्कार मिल चुके हैं.

प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त बन्नेरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क :

महाविद्यालय, बेंगलूरु से बन्नेरघट्टा रोड पर लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर 'बन्नेरघट्टा बायोलॉजिकल पार्क' स्थित है. इस पार्क का क्षेत्रफल लगभग 260.51 वर्ग किमी है. इसकी स्थापना 1970 ई. में हुई थी और 1974 में इसे राष्ट्रीय पार्क घोषित कर दिया गया था. यहाँ पूजा- अर्चना के लिए प्राचीन मंदिर भी स्थित हैं. पार्क परिसीमा के भीतर 6 ग्राम भी स्थित हैं जहां बकरी एवं पशुपालन किया जाता है. यह पार्क अन्वेषकों के लिए विविध वन्य जीवन की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करता है. वस्तुत: प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण के क्षेत्र में यह अपने आप में अद्वितीय स्थान रखता है. इस पार्क में सफारी के दौरान जंगल के राजा का दर्शन बहुत आश्चर्यचकित कर देने वाला होता है. यहाँ सफारी के अतिरिक्त बोटिंग, चिड़ियाघर, बटरफ्लाइ पार्क एवं वाइल्डर्नेस टूरिज़म विशेष रूप से दर्शनीय हैं.

किसी भी संस्था की निरंतर प्रगति व विकास में प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. हमारा स्टाफ महाविद्यालय बैंक व व्यक्तिगत विकास हेतु निरंतर सीखने की कला को प्रोत्साहित करने के मिशन के साथ बैंक को ऊंचाई के नए शिखर पर ले जाने के लिए प्रयासरत और कटिबद्ध यह महाविद्यालय, भौतिक, प्राकृतिक और एकेडमिक परिदृश्य में अपने आप में अनूठा है और आगंतुक का जिस तरह से बाँहें फैलाकर स्वच्छ हृदय से स्वागत करता है उसी प्रकार विदाई के समय नवीन ज्ञान, नया उत्साह और नयी अभिवृत्ति के साथ उसे विदा भी करता है.

- दीपक कुमार
स्टा.प्र.म. बेंगलूरु

हिन्दी और कन्नड़ भाषा का तुलनात्मक अध्ययन

भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है और इसका सबसे प्रमुख कारण यहाँ कई भाषाओं का प्रयोग व प्रचलन है और इसीलिए इसे बहुभाषा, भाषी देश के नाम से भी जाना जाता है. हिन्दी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है और यह 70% से अधिक जनसंख्या द्वारा सामान्य बोलचाल में प्रयोग की जाती है जबकि किसी न किसी रूप में हिन्दी का प्रयोग करनेवालों की संख्या 80% से भी अधिक है. आज भारत का शायद ही कोई ऐसा नगर, पर्यटन केंद्र या बाजार मंडी है जहाँ हिन्दी का प्रयोग धड़ल्ले से नहीं होता हो. यही कारण है कि हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है और आज यह पूरे भारत में इतनी लोकप्रिय हो गयी है कि जाने-अनजाने राष्ट्र भाषा एवं सम्पर्क भाषा के स्वरूप को प्राप्त कर लिया है. संविधान की अष्टम् अनुसूची में हिन्दी के अलावा जिन भाषाओं को शामिल किया गया है, उनमें एक प्रमुख कन्नड़ भाषा भी है. यह कर्नाटक की मान्यता प्राप्त भाषा है और पूरे कर्नाटक में प्रमुखता से बोली जाती है. इसकी गिनती भारत के प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है.

चूंकि उपरोक्त दोनों भाषाओं की जननी संस्कृत है, अतएवं दोनों भाषाओं में वर्णमाला, क्रिया रूप, शब्द निर्माण, शब्दावली, वाक्य निर्माण, व्याकरण, रस, अलंकार, छंद इत्यादि के दृष्टिकोण से कई समानताएं है. यहाँ तक कि लिपि में भी अत्यधिक सामानता है. यद्यपि लोकप्रियता (जनसंख्या) और क्षेत्र की व्यापकता (भू भाग) के दृष्टिकोण से हिन्दी के साथ कन्नड़ भाषा की तुलना नहीं की जा सकती है. किंतु उत्कृष्ट साहित्य भंडार, लिपि की वैज्ञानिकता, अर्थबोध, पद लालित्य, अर्थ बोध, वाक्य निर्माण, सशक्त शैली, पठनीयता, रोचकता, धारा प्रवाह, व्याकरण, काव्य गुण इत्यादि के विचार से कन्नड़ को न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व की एक सशक्त, सफल एवं वैज्ञानिक भाषा कहा जा सकता है. भाषा के उपरोक्त विभिन्न कसौटियों के आधार पर तुलना करने पर हिन्दी भाषा और कन्नड़ भाषा में हमें आश्चर्यजनक रूप से अत्यधिक समानता देखने को मिलती है और साथ ही कतिपय बिंदुओं में व्यतिरेक या अंतर भी!

लिपि : हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है जबकि कन्नड़ की लिपि को कन्नड़ ही कहा जाता है. प्रकारांतर से यह ब्राह्मी लिपि है. दोनों भाषाओं की लिपि में अत्यधिक समानता है. दोनों ही भाषाओं में वर्ण से अक्षर बनाने की विधि तथा स्वर और व्यंजन वर्ण में विभाजन की पद्धति लगभग एक जैसी ही है. स्वर और व्यंजन - दोनों प्रकार के वर्णों में प्रथम वर्ण की तुलना में द्वितीय वर्ण तथा तृतीय वर्ण की तुलना में चतुर्थ वर्ण अर्थात् ह्रस्व की तुलना में दीर्घ वर्ण का आकार अपेक्षाकृत बडा होता है. इसी प्रकार देवनागरी लिपि के अंतिम दो स्वरों की तरह कन्नड़ लिपि के योगवाह वर्णों को क्रमश: वर्ण में बिंदी और विसर्ग लगाकर लिखा जाता है. देवनागरी लिपि और कन्नड़ लिपि में सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि देवनागरी लिपि में वर्ण/ अक्षर के ऊपर शिरोरेख लगाया जाता है जब कि कन्नड़ लिपि में ऐसा नहीं किया जाता है. कन्नड़ लिपि में मूलत: वर्ण का प्रयोग किया जाता है जबकि देवनागरी लिपि में मूलत: अक्षर का प्रयोग किया जाता है और अक्षर को वर्ण में बदलने के लिए हलंत का प्रयोग किया जाता है. कन्नड़ लिपि में वर्ण सामान्यत: गोलाकार, अर्द्ध गोलाकार, चंद्राकार, अर्द्ध चंद्राकार और वर्ण के नीचे छोटी सीधी रेखा का प्रयोग किया जाता है. इसके विपरीत देवनागरी लिपि में वर्गाकार, गोलाकार, चंद्राकार, बिंदी, हलंत इत्यादि का प्रयोग देखने को मिलता है. दोनों लिपियों में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि देवनागरी लिपि में प्रयुक्त 'ऋ' के स्थान पर कन्नड़ में 'रु' का प्रयोग किया जाता है.

वर्णमाला : हिन्दी और कन्नड़ - दोनों भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत से ही हुई है और यही कारण है कि दोनों भाषाओं की वर्णमाला में अत्यधिक समानता देखने को मिलती है. वर्णों की संख्या और वर्णों का वर्गीकरण दोनों भाषाओं में एकसमान है. व्यंजन वर्णमाला को पांच वर्गों में क्रमश: कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग में सजाया गया है जबकि स्वर वर्णों को इसके नीचे दो पंक्तियों में सजाया गया है. दोनों भाषाओं में व्यंजन वर्णों को वर्गीय और अवर्गीय क्रम में संजाया गया है. देवनागरी लिपि की तरह कन्नड़ लिपि में भी कवर्ग के अंतर्गत क, ख, ग, घ; चवर्ग के अंतर्गत च, छ, ज और झ; टवर्ग के अंतर्गत ट, ठ, ड, ढ; तवर्ग के अंतर्गत, त, थ, द, ध और प वर्ग के अंतर्गत प, फ, ब, भ को सजाया गया है तथा इन सभी वर्गों का अंतिम या पाँचवा वर्ण अनुनासिक होता है. इसी प्रकार अवर्गीय वर्ण यथा: य, र, ल, व, श, ष, स, ह को वर्गीय वर्ण के नीचे और स्वर वर्णों के ऊपर अलग से रखा गया है. क्ष, त्र और ज्ञ को देवनागरी लिपि में वर्णमाला के रूप में रखा गया है जबकि ये सब कन्नड़ लिपि में संयुक्ताक्षर है. इसी प्रकार अनुस्वार और विसर्ग देवनागरी लिपि में स्वर वर्ण है जबकि देवनागरी लिपि में ये दोनों स्वर और व्यंजन से अलग योगवाह के अंतर्गत एक अलग वर्ग है. इस प्रकार देवनागरी लिपि में 36 और कन्नड़ लिपि में 34 व्यंजन वर्ण है. व्यंजन के समस्त 5 वर्गों में प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण को अल्पप्राण तथा द्वितीय और चतुर्थ वर्ण को महाप्राण कहा जाता है. देवनागरी लिपि में ऋ को मिलाकर कुल स्वर वर्णों की संख्या 13 है जबकि कन्नड़ लिपि में योगवाह को छोडकर स्वर वर्णों की संख्या 15 (प्रचलन में 13) है. इसका मुख्य कारण यह है कि देवनागरी लिपि में स्वर का दो रूप ह्रस्व और दीर्घ देखने को मिलते हैं जबकि कन्नड़ लिपि में स्वर के तीन रूप - ह्रस्व, दीर्घ और प्लूत देखने को मिलते हैं. स्वरों में यह अंतर उच्चारण में बलाघात के कारण बनता है जिसके फलस्वरूप दोनों भाषाओं के उच्चारण में स्पष्ट अंतर सुनाई देता है.

शब्दावली : जैसा कि हम जानते हैं, हिन्दी और कन्नड़ - दोनों भाषाओं की जननी संस्कृत है और यही कारण है कि दोनों भाषाओं के पदों और शब्दों में अत्यधिक समानता है और कम से कम आधे शब्द दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयोग किये जाते हैं. दोनों भाषाओं में तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत होता है. देह, मुख, पंक्षी, काग, मयूर, सिन्ह, व्याघ्र, मेष, मीन, नर, नारी, पुरुष, महिला, अलंकार, आभूषण, वस्त्र, लावण्य, सुंदर, मनोहर, शोभा, माधव, मानव, देव, दानव, स्थान, प्रवास, स्वर्ग, नरक, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, अमृत, देवालय, राज्य, राजन, राजेश्वरी, पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, तारा, नक्षत्र, ग्रह, दीप, सरोवर, जीवन, वय, कुटुम्ब, रक्त, पशु, नाग, गरुड, अर्थ, विषय, स्वागत, धन्यवाद, वंदना, सपना, कल्पना, अरुण, ईश्वर, पुण्य, आत्मा, अद्भुत, आश्चर्य, भय, नीरव, आत्मीय, सहोदर, पदार्थ, पुस्तक, यंत्र, उपकरण, कष्ट, चिंता, स्वास्थ्य, आरोग्य, ज्वर, आहार, वैध, नीला, दर्जी, तमाशा, मात्र, पूर्ण, असुर, विजय, वीणा, संगीत, नृत्य, कृत्य, दुष्कृत्य, क्षमा, नित्य, आनंद, इत्यादि अनेक ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग दोनों भाषाओं में समान रूप से किया जाता है. इसी प्रकार तदभव शब्द की संकल्पना भी दोनों भाषाओं में लगभग समान है और जहाँ कहीं अंतर भी है तो उसे मामूली कहा जा सकता है. संस्कृत का गौधूम, हिन्दी में गेहूँ और कन्नड़ में गौधी है. इसी प्रकार संस्कृत एवं हिन्दी - दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त शब्द दीपक, अन्न, कर्ण, सुमन और पौष कन्नड़ में क्रमशः दीपा, अन्ना, किवि, सुमा और पुष्य है. हिन्दी की तरह कन्नड़ में भी अर्थांतर अर्थात् अर्थोत्कर्ष या अर्थापकर्ष की स्थिति दिखाई देती है. यह अभिमान, वंदना, प्रशस्ति, प्रयत्न, आगम, अवकाश, सहोदर, नाग, आराम, बराबर, जंतु, पशु इत्यादि शब्दों में देखने को मिलता है. किंतु कुछ मामलों में यह अंतर अर्थ को बिलकुल बदल देता है. उपन्यास हिन्दी में बृहत गद्य विधा है जबकि कन्नड़ में व्याख्यान है. पारिवारिक सम्बंधों के संदर्भ में इस अर्थांतर को आसानी से समझा जा सकता है. हिन्दी में प्रयुक्त 'नाना' और 'दादा' के लिए कन्नड़ में एक शब्द 'ताता' तथा 'नानी' और 'दादी' के लिए 'अज्जी' का प्रयोग किया जाता है. इसी प्रकार साली और ननद के लिए एक ही शब्द 'नादिनी' तथा जीजा और साला के लिए एक ही शब्द 'भावा' का प्रयोग किया जाता है. इसके विपरीत हिन्दी में प्रयुक्त 'चाचा' के लिए कन्नड़ में डोडप्पा (बडे चाचा) और चिकप्पा (छोटे चाचा) तथा चाची के लिए डोडम्मा (बडी चाची) और चिकम्मा (छोटी चाची) का प्रयोग किया जाता है.

उत्पति एवं रचना के विचार से शब्दों के वर्गीकरण का नियम एवं प्रक्रिया दोनों भाषाओं में समान है. संस्कृत के मूल शब्द अर्थात् तत्सम, संस्कृत के अपभ्रंश या विकृत शब्द, देशज और विदेशज शब्द. तत्सम और तदभव शब्दों से दोनों भाषाएं समृद्ध है. धोती, तमाशा और लौटा जैसे देशज शब्द दोनों भाषाओं में है. इसी प्रकार कानून, कचहरी, स्कूल, टेलीविजन, मोबाइल जैसे शब्दों का दोनों भाषाओं में प्रयोग किया जाता है. तीन पुरुष, दो वचन और दो लिंग की संकल्पना दोनों भाषाओं में समान है.

क्रिया रूप : क्रिया रूप, क्रिया का वर्गीकरण और क्रिया का प्रयोग दोनों भाषाओं में एक समान किया जाता है. जिस प्रकार हिन्दी में क्रिया को अकर्मक एवं सकर्मक - दो रुपों में बांटा जाता है, उसी प्रकार कन्नड़ में क्रियापद को कर्त्तु पद एवं कर्म पद में बांटा जाता है. पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार क्रिया रूप का निर्माण होता है. हिन्दी में क्रिया की सबसे बडी पहचान शब्द के अंत में 'ना' का होना है. यथा करना, कहना, चाहना, देखना, जाना इत्यादि. इसी प्रकार कन्नड़ में क्रियापद की सबसे बडी पहचान उदु का होना है. यथा माडुउदु, हेलुउदु, वेडुउदु, नोडुउदु, होगुउदु इत्यादि. उपसर्गों और प्रत्ययों के प्रयोग द्वारा शब्दों की तरह क्रिया के रूपों का भी निर्माण किया जाता है. हिन्दी भाषा में 'जा' से जाओ, जाता है, जा रहा है, जाता रहा है, जाएगा, जा चुका होगा इत्यादि क्रिया रूप बने हैं, उसी प्रकार कन्नड़ में होग क्रियापद से होगु, होगाउदु, होगावरदु, होगुतेने, होगुत्तेने, होगुतारे, होगिद्धारे, होगुतिद्धेने, होगिला, होगुदिला, होगवन्नी, होगोणा, होगिद्धे, होगबहुदु जैसे शब्दों का निर्माण स्वतः होते चला जाता है. नकारात्मक क्रियावाचक के लिए हिन्दी में क्रिया के पहले नहीं लगाया जाता है जबकि कन्नड़ में इला क्रियापद के बाद लगाया जाता है. यथा हिन्दी में 'नहीं गया' के लिए कन्नड़ में 'होगिला' लिखा जाएगा.

वाक्य निर्माण : पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार क्रियावाचक शब्द को उसमें जोडकर वाक्य निर्माण किया जाता है. जब वाक्य कर्ता पद के अनुसार बनाया जाता है तो उसे कर्तृ वाच्य और कर्म पद के अनुसार बनाया जाता है तो उसे कर्म वाच्य कहा जाता है. वाक्य निर्माण के उपरोक्त दोनों सिद्धांत दोनों भाषाओ में समान रूप से लागू है. हिन्दी में, मैं भारतीय हूँ, मैं जाता हूँ, मैं जा रहा हूँ, मैं गया और मैं जाऊंगा के बदले कन्नड़ में क्रमशः नानु भारतीय, नानु होगुतेने, नानु होगुत्तेने, नानु होडेनु एवं नानु होगुवे का प्रयोग किया जाता है. इस प्रकार संज्ञा एवं सर्वनाम के साथ क्रिया लगाकर वाक्य निर्माण की विधि दोनों भाषाओं में समान है. हिन्दी की तरह कन्नड़ में भी कर्म पद का प्रयोग, कर्ता पद और क्रिया पद के मध्य किया जाता है. उदाहरण के लिए हिन्दी में प्रयुक्त 'मैं घर जा रहा हूँ' एवं 'मैं बाद में आऊंगा' को कन्नड़ में 'नानु मने होगुतेने' एवं' नानु आमेले बरुतेने' लिखा जाएगा. शब्द से वाक्य और वाक्य से अनुच्छेद (गद्यांश) और कविता (पद्यांश) का निर्माण होता है. गद्य और पद्य की रचना, प्रक्रिया एवं वर्गीकरण की संकल्पना दोनों भाषाओं में समान है. इसी प्रकार काव्य गुण, रस, अलंकार, छन्द की परिभाषा, रचना और विशेषता दोनों भाषाओं में लगभग समान है.

निष्कर्ष : अस्तु, हिन्दी और कन्नड़ - दोनों भारत की अत्यंत समृद्ध और लोकप्रिय भाषाएं हैं. लिपि की वैज्ञानिकता, प्रचुर शब्द भंडार, शब्दों का तार्किक वर्गीकरण और निर्माण, व्याकरणिक विशेषता, क्रियाओं का सटीक प्रयोग, वाक्य निर्माण की सरल, सहज और समुचित प्रक्रिया, रस, अलंकार, रीति जैसे काव्य गुणों का विवेचन एवं विपुल साहित्य भंडार- यही वे विशेषताएं हैं जो किसी भाषा को उन्नत, सर्वकालिक और सार्वजनिन बनाती हैं और ये बातें दोनों भाषाओं में देखने को मिलती हैं.

- ओम प्रकाश बर्णवाल
अं ले प का, रांची

Art and Artisans of Karnataka

Karnataka, the largest state in south India and the sixth largest state in India is renowned for its magnificent and abundant legacy in the field of arts. The rich and varied tradition of arts of Karnataka is influenced and enriched by its diverse linguistic and religious ethnicities and embracing culture. The creativity, imagination and versatility involved in the various performing and fine arts of Karnataka is unparalleled and any endeavour to comprehend them is equally captivating.

Handicrafts of Karnataka

The traditional handicrafts of Karnataka is renowned for its intricate craftsmanship, designs and compelling ingenuity and has thrived across many generations and still flourishes in grandeur. Much of the knowledge and skill of these handicrafts has been bequeathed from older generations and preserved and practiced with great reverence.

1) Wood Carving : Carved wood has been extensively used in religious and secular architecture in Karnataka. Processional chariots attached to temples were carved out of wood and decorated with exquisite wood sculptures of deities. The royal courts, temples and dwellings used to be embellished with finely carved pillars, decorative doors, door-frames, brackets and panels. Kalaburgi in North Karnataka is still the production centre for these objects.

Teak cradles with panels depicting scenes from the Mahabharata and Ramayana and painted with eco-friendly vegetable dyes is a craft still practised in Kalghatgi in Dharwar District. Gokak in Belagavi District is well known for its wooden fruits and vegetables painted in natural hues and Sirsi in Uttar Kannada for its wood animals and birds.

2) Sandalwood Carving : Sandalwood a precious wood because of its distinctive fragrance, restricted availability and high price has religious significance as it is used in the rituals for worship. Gudigars, the hereditary crafts persons in the districts of Shivamogga and Uttara Kannadaare are known for carving exquisite figurines of gods and goddesses from sandalwood.

3) Wood Inlay : Wood inlay which is primarily done in rosewood which is the process of decorating the surface of wood by setting in pieces of material such as ivory, bone, plastic, or wood of different colours. Furniture items like dining and living rooms sets, decorative doors and wall plaques of pastoral scenes and landscapes are made by the craft communities mainly in Mysuru and Bengaluru.

4) Wood Lac Turnery : Channapatna, the main production centre for lacquered wooden toys. It flourished under the royal patronage of Tipu Sultan in the 18th century. Toys, the signature craft product of this area are made from the close-grained hale wood. They are later decorated with bright hued lacquer. The use of vegetable-dyed lacquer makes it eco-friendly and safe for children.

5) Painted Wood ware : Kinhal, located in the Koppal District of Northern Karnataka is home to painted woodware. It is believed that this art dates back to the mural and sculpture traditions of Vijayanagar Empire of the 16th century. Hereditary artisans called Chitragaras produce a range of products such as painted murals and wall hangings on themes of Hindu epics such as Dasavataras, Navagrahas, Ashtadikapalakas etc.

Artisans here also make idols in light polki wood for the temples, mounts and palanquins for ceremonial processions to carry the deities. With the influence of the Rajasthani community in Kinhal, utilitarian objects like eight legged stools are made as well.

6) Bronze Metal Casting : Bronze casting using the cire perdue or lost wax process is used to make religious idols in bronze which is meant for use in temples and household shrines. The icons are crafted in accordance with the measurements and principles of the ancient treatises on iconography. The temple town of Udupi and Nagamangala in Mandya district are important centres of bronze metal casting.

7) Bell Metal Casting : Bell Metal casting is another method of metal work that is prevalent in Dakshina Kannada. Bell metal is an alloy of copper and tin which is used for making household utensils, temple bells and lamps.

8) Bidri Metal Work : Bidar in North Karnataka is a well-known centre for the Bidri metal craft that owes its origin to the Bahmani rulers who brought it down from Persia over four centuries ago. Molten liquid of an alloy made of zinc and copper is poured into a mould over which designs are etched. Silver wire is hammered into the grooves and the product is immersed into a liquid which contains a blackish soil from the Bidar Fort which gives a lustrous black and silver look.

9) Stone Carving : Stone carving in Karnataka has a distinctive style that traces its origins to the Hoysala style of temple architecture. Shivarapatna in Kolar District is well known for its sculptures of deities in soft stone and naga stones as well as carved stone sculptures for temples. Artisans of Karkala in Udupi District specialize in sculpture

in black granite. Contemporary work in stone is also being done in all centres.

10) Natural Fibre Crafts : Handicrafts made from banana stem fibre have become a leading natural fibre craft in Karnataka. Production centres that are run mainly by NGOs in Mandya, Hiriyur in Chitradurga district and Anegundi in Koppal District have gained expertise in making products like table mats, bags, file covers, stationery and mats for floor coverings. Vijapura is a main jute craft centre specialised in making shopping bags, designer bags etc. Bowls and cups created out of areca nut palm leaves are made in Sirsi, Uttar Kannada and Mangaluru and are widely used as disposable utensils. The core of the shola plant is used to make delicate products like hair ornaments, garlands and wedding decorations in Udupi and Kundapur in Dakshin Kannada.

11) Puppetry : In Karnataka gombeyatta or puppetry has existed in villages since ancient times entertaining rural folk with stories from mythology. The main puppet forms are string, rod and leather. Salakki Gombeatta is a rod-stick puppet play that had distinct origins in the temples of Magadi and Ramnagara. The leather puppets are made from translucent goat skin and painted with vegetable dyes. They are used in shadow play.

12) Silk : Karnataka is renowned for its silk industry. Tipu Sultan the 18th century ruler of Mysore founded the silk industry in Karnataka by establishing 21 centres in his dominions to rear silk worms. The State contributes around eighty per cent of India's production of mulberry silk. The silk regions in Karnataka are Ramanagara, Channapatna, Kanakapura and Magadi in Ramnagara district, Kollegala in Chamrajnagar district and Mysuru.

Molkalmuru in Chitradurga District is considered as the silk capital of Karnataka. The distinguishing features of the Molakalmuru saree that is woven in pure silk is its rich zari-pallu or the end piece and contrasting broad zari borders woven in the korvai or interlocking technique.

13) Irkal : Irkal, a town in the Bagalakot District of Northern Karnataka bordering the state of Maharashtra is home to the Irkal saree. Migration of weavers from Maharashtra and patronage from the chieftains of Ballari led to the growth of this industry. Irkal sarees are woven in cotton, cotton silk, pure silk and art silk in rich colours. Irkal sarees are traditionally worn with blouses made from khannas a brocade like material woven in Guledgad, a neighbouring town.

14) Kasuti Embroidery : In Karnataka the clothes and bonnets of infants are patterned with kasuti embroidery. An important part of a bride's trousseau is a couple of sarees embroidered with kasuti and embroidered blouses. One such saree is the Chandrakali an indigo-black and red Irkal silk dyed in vegetable and mineral colours and adorned with exquisite kasuti embroidery that is given to a bride on the occasion of the Sankranti festival. The main clusters for kasuti are in Dharwar and Hubballi Districts.

15) Banjara Embroidery : Lambanis Banjara living in community groups known as tandas are engaged in making products based on their indigenous craft. Sandur, Raichur, Vijapura and surrounding tandas have production clusters making embroidered cushions, bedspreads, table runners, wall hangings, handbags and apparel.

16) Durries : Navalgund Durries, also known as jamakhanas are floor coverings woven in cotton with striking patterns and vivid colours. Navalgund is a town located near Hubballi. and means 'hill of peacocks' and the motif of the peacock finds expression in the durries set within geometric patterns.

17) Paintings : Paintings in Karnataka has a long and illustrious history The distinct school of Mysore painting evolved from the paintings during the reign of the Vijaya Nagara Kings.

Mysore Paintings are characterized by delicate lines, intricate brush strokes, graceful delineation of figures and the discreet use of bright vegetable colours and lustrous gold leaf. The painting technique used is known as gesso where a mixture of plaster and glue also has a tradition of miniature painting of mythological themes known as Surpur Paintings.

- Indu PR
FGMO, Bengaluru

CULTURAL LEGACY OF KARNATAKA

The culture of Karnataka is as vast as its history. Scholars have estimated that people from the Deccan plateau where Karnataka is situated have had links with the Indus valley civilization dating back to more than 5300 years. Originally known as Mysore State until 1973, Karnataka is the largest South Indian State where post-Independence, all the Kannada speaking regions in the South of India combined to form the State. The word 'Karnataka' is said to have originated from the Kannada word "karu naadu" or the land of black soil. Unofficially, the State also has a Flag which is yellow and red in horizontal stripes and signifies peace and courage.

Karnataka was home to some of the most successful and powerful empires of ancient and medieval India like Nandas, Mayurians, Satavahanas, Kadambas, Gangas, Pallavas, Chalukyas, Rashtrakootas, Hoysalas, Yadavas and the Wadiyars. Due to the influence of various rulers, Karnataka is enriched with a distinctive rich and varied culture and values. Each part of this State has something to reveal, some known and many unknown.

Heritage of Karnataka: It was during the long legacy of strong rulers that art, architecture, culture and traditions flourished in the region. These dynasties built temples and monuments of great importance in different styles of architecture and the prominent features of architecture in Karnataka are the 'Shikaras' (dome), cave temples, intricate sculptures. Hindu and Jain Kings ruled the maximum period over the history, which is evident in the legacy left behind them, while the Muslim Sultanates also had control over the land. Thus, Indo-Islamic architecture is also prevalent. Below are few of the famous architectural wonders in Karnataka:

- The grandiose of the Vijayanagara empire which lasted for 300 years can now be found in Hampi - a UNESCO World Heritage Site. Vijayanagar empire also created a barrier against invasion by the Mughals and fostered Hindu philosophy and Sanskrit language. Hampi is also famous for "Hampi Utsav"- the most popular festival, among many, held during the month of November.
- Another revered place is the Gomateshwara, the 10th century stone idol of Bahubali and Jain pilgrimage site; situated in the town of Shravanebelagola is the largest monolithic statue in the world (carved out of a single block of stone) standing at 57ft.
- Temples at Belur, Halebidu, Badami, Pattadakallu, Aihole are world famous for their intricate carvings, cave temples.
- The Saavira Kambada Basadi, a Jain temple in Moodabidri noted for its 1000 pillars is full of rich and intricate carvings.

Culture and Languages of the people of Karnataka: Due to the kings of yore who showed much tolerance towards all faiths, harmony amongst all religions is maintained well in the State. While Hinduism is the major religion, Jainism, Islam and Christianity is also widely followed. Within the confines of Hinduism, there are sects worshipping Lord Shiva- referred to as Lingayats, which were popularized by the Veera Shaiva movement and other factions worshipping Lord Vishnu. Minor population of Tibetan Buddhists also live here.

The diversity of the State is not just in art, architecture and culture but also in the languages spoken. Kannada is one among the 6 classical languages and one of the oldest languages in India. While Kannada is the major language spoken in the State, it is also home to Tuluvas, Kodavas and Konkanis. The village of Mattur in Shimoga district is famous for its usage of Sanskrit for day to day communication. The State is also home to around 50 tribes like the Soligas, Yeravas, Todas and Siddis and each have their own traditions and customs. The diverse linguistic and religious ethnicities combined with their long histories have contributed immensely to the varied cultural heritage of the state.

Dress attire: Saree is the traditional dress of women of Karnataka. The women in Coorg have a distinct style of draping the same. Whereas for men, it is the Dhoti also known as panche is the traditional dress Karnataka. The Mysore peta is the traditional headgear in southern part of the State and pagadi is preferred in the northern area. The distinctive sarees are the Ilkal saree, is having a 1,000-year-old tradition of weaving by hand and thousands of localities are still promoting this craft. Another is the Mysuru silk sarees, which are extremely soft in texture and involves the art of weaving pure silk and pure gold threads.

Society and Education: Early historians have accounted that Joint family system was prevalent in the state. Position of women in Karnataka as compared to other provinces in India or even to that of any country in the world was unique. They shone in the field of literature and assumed eminent positions. Horse riding, hunting, cock and ram fights were in vogue. Towns such as Belgavi, Aihole, Nargund, Begur, Arasikere were considered as small university centers. Primary education was imparted at temples.

Occupation: Nearly half the workforce in Karnataka is engaged in agriculture related activities. The remaining are indulged in various other sectors wherein the IT industry is booming and dominant mainly in the capital city of the State, Bengaluru which is nicknamed as 'Silicon city'.

"Our past helps strengthen our future" - Culture brings people together and the uniqueness of culture of Karnataka has welcomed people from across India to its many cities and towns. Karnataka is a fascinating place and every town has something unique to offer. The State has a vast culture and has handed over a rich legacy to our generation and now it is up to us to preserve it.

- Vibha P. Bhat
FGMO, Bengaluru

हम्पी–ऐतिहासिक आश्चर्य का शहर

हम्पी के खंडहर 25 किलोमीटर में फैले हैं और यहां 500 से अधिक स्मारक देखने को मिलते हैं. सबसे प्रमुख भगवान विष्णु को समर्पित विट्ठल मंदिर है. यह विजयनगर वास्तुकला का अदभुत नमूना है. इसके मुख्य हॉल में 56 स्तंभ हैं, जिन्हें थपथपाने से संगीतमय ध्वनियाँ पैदा होती हैं. हॉल के पूर्वी हिस्से में प्रसिद्ध शिला रथ है जो पत्थर के पहियों से आज भी चलता है.

रॉयल सेंटर में विजयनगर के शासक रहते थे. इसके मूल में अलंकृत हजारा राम मंदिर है, जिसकी दीवारों पर हाथी, घोड़े, संगीतकार और योद्धाओं के सांस्कृतिक जुलूसों की मूर्तियाँ हैं .

तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित ऐतिहासिक महत्व एवं सुंदर वास्तुकला वाला प्राचीन विरूपाक्ष मंदिर शिव के 'विरूपाक्ष' रूप को समर्पित है. इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में शामिल किया गया है. प्राचीन परंपरागत पानी की टंकियाँ

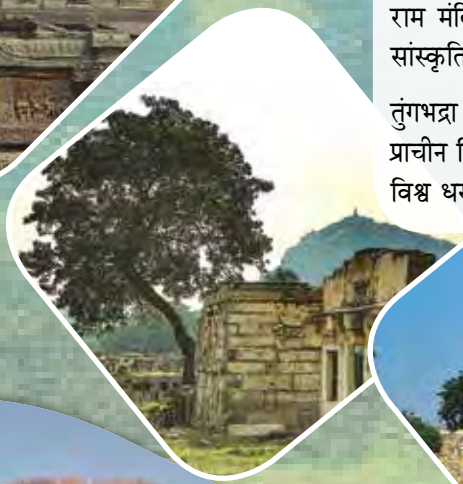

और सीढ़ीदार कुएं पूरे शहर में पानी लेकर चलते हैं.

हेमकूट पर्वत की तलहटी पर स्थित ससिवेकलु गणेश मंदिर भी प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है. सरसों के बीज से मेल खाती गणेश की 8 फुट ऊंची मूर्ति को स्थानीय लोगों ने 'ससिवेकलु गणेश' का नाम दिया है.

ऐसे कई स्थान हैं जिन्हें सूची में शामिल किया जा सकता है. हम्पी का हर पत्थर अपनी एक कहानी, एक एहसास या भावना को बयां करता है. सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है. हम तो सिर्फ यहां बैठकर अपने इतिहास के चमत्कारों का आनंद ले सकते हैं.

- प्रशांत एम
के का-अनेक्स, मंगलूरु

कर्नाटक का लोकसंगीत 'यक्षगान'

भारतीय नृत्य संगीत मानवीय अभिव्यक्तियों का एक रसमय प्रदर्शन है. यह एक सार्वभौम कला है जिसका जन्म मानव जीवन के साथ ही हुआ है. बालक जन्म लेते ही रोकर व अपने हाथ पैर मार कर अपनी भावाभिव्यक्ति करता है कि वह भूखा है. इन्हीं आंगिक क्रियाओं से नृत्य की उत्पत्ति हुई है. यह कला देवी देवताओं, दैत्य दानवों, मनुष्यों एवं पशु-पक्षियों को अति प्रिय है. भारतीय पुराणों में यह दुष्ट नाशक एवं ईश्वर प्राप्ति का साधन मानी गई है. अमृत मंथन के पश्चात जब दुष्ट राक्षसों को अमरत्व प्राप्त होने का संकट उत्पन्न हुआ, तब भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर अपने लास्य नृत्य के द्वारा ही तीनों लोकों को राक्षसों से मुक्ति दिलाई थी. भगवान शंकर स्वयं नटराज कहलाए. उनका तांडव नृत्य सृष्टि की उत्पत्ति एवं संहार का प्रतीक भी है. भगवान विष्णु के अवतारों में सर्वश्रेष्ठ एवं परिपूर्ण कृष्ण नृत्यावतार ही है. नृत्य कला को देवी देवताओं का प्रिय माना गया है. कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म अनादिकाल से ही नृत्यकला को धर्म से जोड़ते आया है. पत्थर के समान कठोर व दृढ़ प्रतिज्ञ मानव हृदय को भी पिघलाने की शक्ति है, इस कला में! यही इसका मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है, जिसके कारण यह मनोरंजन के साथ साथ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष व स्व-परमानंद प्राप्ति का साधन भी है. अगर ऐसा नहीं होता तो यह कला पुराणों, श्रुतियों से होती हुई आज तक अपने शास्त्रीय स्वरूप में, धरोहर के रूप में हम तक प्रवाहित न होती. इसी प्रकार की एक आध्यात्मिक व शास्त्रीय नृत्य शैली है, यक्षगान. यक्षगान का तात्पर्य उन गणों अर्थात् लोगों से है जो यक्ष अर्थात प्रकृति आत्माएं हैं. यह कर्नाटक की अद्भुत व जन प्रिय कला है.

यक्षगान कर्नाटक प्रदेश की एक पारंपरिक नाट्य व नृत्य मिश्रित शास्त्रीय शैली है जो दर्शकों के हृदय में सहज ही रसानुभूति कराती है. दृश्य व श्रव्य दोनों होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठता से संबद्ध होता है. यक्षगान में नाटक के तीन अंगों अर्थात गायन, वादन व नृत्य का समामेलन होता है. इस विधा के विभिन्न स्वरूपों का विकास कर्नाटक के तटीय क्षेत्रों यथा दक्षिण कन्नड़ा, उडुपि, उत्तर कन्नड़ा, शिमोग्गा व चिकमगलूर आदि जिलों में हुआ. यक्षगान को दक्षिण कन्नड़ा से तुलु नाडु क्षेत्र कासरगोड तक 'थेन्कू थिट्टू' तथा उत्तर की ओर उडुपि से उत्तर कन्नड़ा तक 'बडागा थिट्टू' कहा जाता है. परंतु, इसके दोनों रूप सम्पूर्ण क्षेत्र में समान रूप से लोकप्रिय हैं. यक्षगान की कहानियाँ रामायण, महाभारत, भागवत तथा हिंदू व जैन धर्म की प्राचीन परंपराओं से ली जाती हैं. यक्षगान पारंपरिक रूप से गोधूलि (शाम) से प्रारम्भ होकर भोर तक प्रस्तुत किया जाता है. इसके अभिनेताओं के मंच पर आने से एक घंटे पूर्व तक अबारा या पीटिक की प्रस्तुति होती है जो रचनाओं की प्रारंभिक धड़कन होती हैं. इसके अभिनेता दैदीप्यमान वेशभूषा में चेहरों पर गहरा रंग लगाते हैं.

यक्षगान प्रदर्शन करने वाले समूह को 'मेळा' कहते है. एक मेळा में 50 से 60 लोग होते है. मेळा को तीन विभागों यथा हिम्मेळा (जो गायन और वादन करते हैं) मम्मेळा (जो वेषभूषण पहनकर अभिनय करते हैं) और सहायकवृंद (जो उनकी सहायता करते है) में वर्गीकृत किया जाता हैं. मेळा मंदिरों द्वारा चलाया जाता है. केटील, धर्मस्थला, मंदआर्थी आदि कर्नाटक की प्रमुख मेळाएँ हैं. यक्षगान प्रदर्शन की तैयारी 'चौकी' में होती है. हर मेळा के भगवान को चौकी में रखा जाता है और प्रतिदिन तीन बार उनकी पूजा की जाती है. शाम को पूजा के बाद यक्षगान का प्रदर्शन आरंभ होता है जो पूरी रात चलता है. प्रदर्शन समाप्त होने के पश्चात सुबह की पूजा होती है. मेळा प्रतिदिन नयें नयें स्थानों पर जाकर प्रदर्शन करते हैं. यक्षगान का प्रदर्शन रंगमंच पर होता है जिसे 'रंगस्थळा' कहते है. हिम्मेळा और मम्मेळा इन रंगस्थळा पर अपना प्रदर्शन करते हैं. हिम्मेळा में 'भागवत' 'मृदंग' और 'चंदे' वादन के साथ किसी महाकाव्य के प्रसंग का गाकर वर्णन करते हैं. भागवत निर्देशक होता है और प्रसंग के प्रदर्शन की जिम्मेदारी भी उनकी ही होती है. भागवत कथाओं का भावार्थ अभिनय, संवाद और नृत्य द्वारा मम्मेळा कलाविध से प्रस्तुत करते हैं. मम्मेळा कलाविधों के अभिनय में भावना और भाषा की शुद्धता अपने उत्कर्ष पर होती है. प्रसंग के अनुसार कलाकार राजा, स्त्री, राक्षस या ऋषि आदि पात्रों का किरदार निभाते हैं. सशक्त संगीत ज्ञान और मजबूत कद काठी यक्षगान कलाकार की पहली आवश्यकता होती हैं. इसके अतिरिक्त उनमें हिन्दू धर्म का गहन ज्ञान भी आवश्यक है. यक्षगान की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें पहले से कोई अभ्यास या आपसी संवाद का लिखित रूप से उपयोग नहीं किया जाता है, जिससे यह अत्यंत विशेष हो जाता है.

समान्यतया: यक्षगान का प्रदर्शन गणेश वंदना से शुरू होता है. यक्षगान के सभी घटक अर्थात संगीत, नृत्य व संवाद तात्कालिक होते हैं. अभिनेताओं की क्षमता और विद्वता के आधार पर नृत्यों के साथ साथ संवाद की मात्रा में भी भिन्नता होती है. अभिनेता चरित्र से बाहर निकले बिना दार्शनिक बहस में भी शामिल होते हैं. विदुषक का पात्र अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. इस पात्र की भूमिका निभाने वाले को प्रत्येक विषय की जानकारी रहती है और वह किसी भी पात्र की भूमिका निभा सकता हैं.

यक्षगान वेशभूषा में किरीता या पगड़ा जो सिर को सजाता है, कवच

जो छाती को सजाता है, भुजा कीर्ति (बांह) जो कंधों को सजाता है, और बेल्ट (डबू) आदि सभी हल्की लकड़ी से बने होते हैं और सुनहरे पन्नी से ढ़के होते हैं. इन गहनों पर दर्पण भी लगा होता है जो शो के दौरान प्रकाश को प्रतिबिंबित करने और वेशभूषा में अधिक रंग जोड़ने में मदद करता है. शस्त्र बनियान पर ही पहने जाते हैं जो शरीर के ऊपरी आधे हिस्से को ढ़कने का भी कार्य करते हैं. शरीर का निचला हिस्सा जिस कपड़े से ढ़का होता है वह लाल, पीले और नारंगी रंग के चेक के अनूठे संयोजन से बनता है. कपड़े के नीचे भारी पैड का उपयोग किया जाता है, जिससे अभिनेताओं के शरीर का अनुपात सामान्य से अलग हो जाता है. 'बन्नाड वेशा चरित्र' राक्षसों को चित्रित करने के लिए प्रयोग किया जाता है. इसमें अक्सर चेहरे का विस्तृत मेकअप शामिल होता है, जिसे पूरा करने में तीन से चार घंटे तक लग जाते हैं. पारंपरिक यक्षगान में पहले पुरुष ही महिला की भूमिका निभाते थे, परंतु, आजकल यक्षगान ने महिला कलाकार भी अभिनय करती हैं. वर्तमान समय में यक्षगान की अनेक शैलियाँ कर्नाटक व सीमावर्ती राज्यों के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं.

मूडलोपया शैली मुख्य रूप से कर्नाटक के पूर्वी क्षेत्रों जैसे हासन, मांड्या, तुमकुर, चित्रदुर्ग और उत्तरी कर्नाटक जिलों में प्रचलित है. पादुवलोपया शैली का विस्तार कर्नाटक के पश्चिमी भागों यथा कासरगोड, दक्षिण कन्नड़, उडुपि और उत्तर कन्नड़ जिलों में है. तेनकुटिट्टू शैली का विकास कासरगोड, मेंगलोर, उडुपि, सुलिया, पुत्तूर, बेलथांगडी, करकला आदि क्षेत्रों में हुआ है. तेनकुटिट्टू यक्षगान शास्त्रीय नृत्य पहलुओं के साथ मिश्रित लोक कला से अधिक प्रभावित है. तेनकुटिट्टू में रंगों के तीन प्रतिष्ठित सेट यथा राजबन्ना, कातबन्ना और श्रीबन्ना का उपयोग किया जाता है. तेनकुटिट्टू में नृत्य शैली 'धींगिना' या 'गुट्टू' द्वारा दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है. कलाकार अक्सर धिगिनास अर्थात हवा में घूमते हैं. कई बार तो एक बार में ही सैकड़ों बार तक घूम जाते हैं. बडागुटिट्टू शैली उडुपि से कुंडापुरा क्षेत्र तथा उत्तर कन्नड़ जिला में विशेष प्रचलित है. बडागुटिट्टू शैली में चेहरे के भाव, मटुगारिके (संवाद) और प्रसंग में चित्रित चरित्र के लिए विशेष नृत्य पर अधिक जोर दिया जाता है. बडागुटिट्टू शैली को शिवराम कारंत के 'यक्षगान मंदिर' काव्य द्वारा लोकप्रियता मिली थी, जिसे सर्वप्रथम दक्षिण कन्नड़ के सालिग्राम गांव में आधुनिक रूप के रूप में प्रस्तुत किया गया था.

थेन्कू थिट्टू और बडागा थिट्टू के अलंकरण में भी काफी अंतर होता है. बडागा थिट्टू में ज्यादातर कच्छे जैसे वस्त्र धारण करते हैं और थेन्कू थिट्टू में लहंगा जैसे वस्त्र का प्रयोग होता है. पात्र के अनुसार शरीर व चेहरे पर रंग लगाया जाता है और वस्त्रधारण किये जाते हैं. पात्रों के अनुसार मुकुट और आयुध भी धारण किए जाते हैं. यक्षगान के अधिकतर प्रदर्शन कन्नड़ भाषा में ही होते हैं. परंतु, आजकल यह तुळु, हिन्दी, अंग्रेज़ी व संस्कृत में भी किया जाने लगा है. यह प्रदर्शन वेषभूषा के बिना भी किया जाता जिसे 'ताळा-मद्दळे' कहते हैं.

बडाबादगुटिट्टू शैली का उत्तर कन्नड़ के उत्तरी भाग कन्नदटिट्टू क्षेत्र में विस्तार हुआ. 1910-15 की अवधि के दौरान दक्षिण कन्नड़ के बसरूर, बरकुर, गोकर्ण, मुदाबिद्री आदि स्थानों पर यक्षगान कठपुतली मंडलियों का गठन हुआ था. यक्षगान शैली में कठपुतली की प्रस्तुति अत्यधिक शैलीबद्ध है. इस शैली में यक्षगान के मानदंडों और मानकों का कड़ाई से पालन किया जाता है. यक्षगान कठपुतली की सामग्री भी मुख्य रूप से प्राचीन महाकाव्यों से ही ली गई है.

यक्षगान में मुख्य रूप से मदाले, ताल व चंदे नामक वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है. मदाले एक ताल वाद्य है, जिसे मृदंग की तरह ही बजाया जाता है, जबकि ताल, घंटी या झांझ एक विशेष मिश्र धातु (पारंपरिक रूप से पांच धातु) से बनी उंगली की घंटियों की एक जोड़ी होती है. इन्हें भागवत की आवाज के स्वर में फिट होने के लिए बनाया गया हैं. गायकों के पास एक से अधिक ताल के सेट होते हैं. चंदे एक प्रकार का ढोल होता है जो मदाले के साथ एक महत्वपूर्ण लयबद्ध संगीत प्रदान करता है.

प्रारंभिक यक्षगान कवियों में अजपुरा विष्णु, पुरंदरदास, पार्थ सुब्बा और नागीर सुब्बा का नाम आता है. राजा कांतिरवा नरसराजा वोडेयार (1704-1714) ने कन्नड़ा भाषा में 14 यक्षगान लिखे हैं. मुम्मादी कृष्णराज वोडेयार (1794-1868) व प्रसिद्ध कवि मुद्दन्ना ने भी अनेक यक्षगान प्रसंग लिखें हैं. यक्षगान के बारे में पहला लिखित प्रमाण कुरुगोडु जिले में लक्ष्मीनारायण मंदिर में 1556 ईस्वी के एक शिलालेख पर पाया गया है. चूंकि, अधिकांश यक्षगान मंडलियां मंदिरों से जुड़ी होती हैं, अत: इस कला का प्रशिक्षण मंदिर परिसर तक ही सीमित रहता है. उडुपि में स्थित एम.जी.एम. कालेज का गोविंदा पाई अनुसंधान संस्थान यक्षगान कला केंद्र चलाता है, जो इस प्राचीन नृत्य शैली में युवाओं को प्रशिक्षित करता है. यह संस्थान भाषा, रीति-रिवाजों और नृत्य कला रूपों पर शोध कार्य भी करता है. श्रीमाया यक्षगान कलाकेन्द्र, गुणवंते भी उल्लेखनीय यक्षगान गुरुकुल है जो यक्षगान छात्रों को प्रशिक्षित करता है.

वर्तमान परिदृश्य में यक्षगान न केवल भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय कला परम्पराओं में से एक है बल्कि आज इसे पूरी दुनिया में मान्यता दी जाती है. केवल कर्नाटक राज्य में ही 10,000 से अधिक यक्षगान प्रदर्शन प्रतिवर्ष किए जाते हैं. इतनी प्रभावशाली स्थिति को एक ऐसा प्रमाणपत्र माना जा सकता है जो यह दर्शाता है कि यक्षगान सदैव जीवित रहेगा.

- के. वी. प्रसन्ना
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

RO Bengaluru- South

हिमालय वेलनेस कंपनी

मेराज अलीम मनाल
अध्यक्ष

यूनियन बैंक के हिमालय कंपनी के साथ संबंध दशकों पुराने हैं. यूनियन बैंक के साथ हमकदम यह कंपनी आज वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान कायम कर चुकी है. वर्तमान समय में हिमालय बेंगलूरु महानगर में यूनियन बैंक के सबसे प्रमुख ग्राहकों में से एक है. यह कंपनी आम जन के सेहत को प्रमुखता देते हुए अपने समस्त उत्पाद लोगों को कम कीमतों पर उपलब्ध कराते है. इसीलिए हाल ही में इस कंपनी ने अपना नाम 'हिमालय ड्रग कंपनी' से बदल कर 'हिमालय वेलनेस कंपनी' कर दिया. हमारा बैंक भी इस संस्था से जुड़कर व उनकी विकास यात्रा का भागीदार बनकर गर्व का अनुभव करता है.

हिमालय का इतिहासः बीसवीं सदी के आरंभ में बर्मा के जंगलों में एक जिज्ञासु युवक ने देखा हाथियों के उत्तेजित झुंड को शांत करने के लिए स्थानीय ग्रामीणों ने एक बूटी की जड़ खिला दी और उन्हें शांत कर लिया. वह जिज्ञासु युवक और कोई नहीं बल्कि हिमालय कंपनी के संस्थापक श्री एम. मनाल थे. उस चमत्कारी बूटी का नाम राउवोल्फिया सर्पीना था. श्री मनाल वही जिज्ञासु युवा और आज की 'हिमालय' कंपनी के संस्थापक हैं. उनके द्वारा प्रकृति के रहस्यों की खोज का कार्य वर्ष 1930 में आरंभ हुआ था. उसी समय उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधानों के माध्यम से प्राकृतिक चिकित्सा को आम लोगों तक पहुंचाने का प्रण लिया. 'हिमालया' ने अपनी विकास यात्रा ऐसे समय पर शुरू की, जब हर्बल उत्पादों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था. श्री मनाल ने अपने सपने को पूरा करने के लिए अपनी मां की चूड़ियों को गिरवी रख टेबलेट बनाने की हस्तचालित मशीन खरीदी. उनकी योजना पारंपरिक भारतीय आयुर्वेद विज्ञान को समकालीन समाज में प्रतिस्थापित करने की थी.

उपरोक्त घटना से प्रेरणा लेते हुए मनाल ने वर्ष 1934 दुनिया की सबसे पहली प्राकृतिक एंटी हाइपरटेंसिव दवा 'सेरपिना' का उत्पादन शुरू किया. वर्ष 1955 में हिमालय ने लिव 52 टैबलेट लॉन्च कर चिकित्सा जगत में अपनी दूसरी सफलता प्राप्त की. बहुत जल्द ही यह टैबलेट हिमालय ब्रांड की पर्याय बन गयी. बाद के वर्षों में हिमालय ने सेप्टिलिन, साइस्टोन, बोनिसन और रुमलाय फोर्टे जैसे कई अन्य प्रतिष्ठित ब्रांडों की शुरुआत की, जिससे यह ब्रांड पूरे भारत के घर घर में मशहूर हो गया.

चूंकि, अब हिमालय के उत्पादों की पहुँच समाज के विभिन्न वर्गों तक हो जाने के कारण इन्हें रीब्रांडिंग कर फार्मास्यूटिकल्स, पर्सनल केयर, बेबी केयर, माताओं के लिए और पशु स्वास्थ्य आदि पोर्टफोलियो में विभाजित कर दिया गया है. आज, हिमालय 100 से अधिक देशों में 500 से अधिक उत्पादों के साथ एक अग्रणी वैश्विक हर्बल स्वास्थ्य और व्यक्तिगत देखभाल संगठन बन चुका है.

अपने विजन और मिशन के साथ आज हिमालय अपने समस्त हितधारकों तथा ग्राहकों की सच्चे मन से सेवा करने हेतु पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं. इस संगठन का प्रत्येक कर्मचारी और कारोबारी भागीदार आज इस कंपनी को सुदृढ करने में लगा हुआ है.

हिमालय द्वारा कर्मचारियों के अनुकूल कार्य संस्कृति विकसित करने का प्रयास सदैव चलता रहता हैं. प्रशंसा और पुरस्कार के माध्यम से यह कार्य चलता आ रहा है.

हिमालय अपने कर्मचारियों में रचनात्मक सोच और नवाचार को प्रोत्साहित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता हैं.

उत्कृष्ठ प्रदर्शन, बेहतरीन प्रतिभा प्रबंधन से ही यह संभव है. इस बात के मद्देनज़र हिमालय बेहतरीन प्रतिभाओं की भर्ती कर उन्हें समग्र विकास के अवसर प्रदान करता है. यहाँ की अनुभवी और प्रतिभाशाली प्रबंधन टीम प्रत्येक कर्मचारी की ताकत को पहचान कर उनके पेशेवर और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है.

सबसे पहले स्वयं की देखभाल, इस मूलमंत्र के साथ हिमालय अपने कर्मचारियों तथा ग्राहकों के कार्य जीवन व सामाजिक जीवन में संतुलन को अपना अभिन्न हिस्सा मानता हैं. आज उनका किसानों को सशक्त बनाने की दिशा में भी काम कर रहा है. आज नब्बे वर्षों बाद भी हिमालय अपने संस्थापक, श्री मनाल के सपनों को साकार करने में लगा हुआ है.

- **अनुभूति शर्मा**, कंटोन्मेंट शाखा, बेंगलूरु

Mr. Pradeep Kumar Kalkura, a true Mangalurian

Pradeep Kumar Kalkura is the founder of "Kalkura Arts", one of the leading and well-known advertisement agencies in undivided Dakshina Kannada District. The name "Kalkura" is synonymous with Udayavani, The Hindu and many other leading newspapers when it comes to advertisements. Kalkura is known for excellent and dedicated customer service and their creative arts in advertisement keep their customers glued to Kalkura for their advertisement needs.

The Mangalore Mr. Kalkura started hoarding advertisements, bus shelter hoarding concept, and outdoor publicity. Mr. Kalkura got himself involved and took active leadership role in various programs. He also got fascinated to the world of literature. and participated in Akhila Kannada Sahithya Sammelan, Gayatri Mahayaga at Kavu Panchalingeshwar Temple at Bajal, Mangalore. He also conducted Pejavara seers 60th Pitharohana Programme at Neharu Maidan.

Kalkura Foundation organizes Krishna Vesha competitions every year in the NGO Hall premises and it attracts more than 5,000 people. With this popular program, they have gained an international fame. They also felicitate achievers in various fields and honour them with Kalkura Prashasti awards. Kalkura Prakashan has published Kannada and Tulu Yakshagana books written by literary group. He is also the Proprietor of Kalkura Group of Concerns Sri Krishna Complex Kodialbail, Mangalore.

Mr. Pradeep Kumar Kalkura an active leader, is also very active for upliftment of Tulu language. He organized wonderful programmes for developing Kannada language and literature. He is a person with determination to protect the culture, language, and yakshagana- the folk art of Karavali. He is holds a prestigious position such as President, Vice President, Trustee in DK District Kannada Sahitya, Bharat Sevadala, Manglore, Akhil Karnataka Brahmana Mahasangha.

- Gopalakrishna B,
CO Annexe, Mangalore

RO Bengaluru-North

IEEE is the world's largest professional association dedicated to advancing technological innovation and excellence for the benefit of humanity. IEEE and its members inspire a global community through its highly cited publications, conferences, technology standards, and professional and educational activities. IEEE is the trusted "voice" for engineering, computing and technology information around the globe.

There are more than 421,000 IEEE members in more than 160 countries. The IEEE publishes a third of the world's technical literature in electrical engineering, computer science and electronics and is a leading developer of international standards that underpin many of today's telecommunications, information technology and power generation products and services.

IEEE India Council is the umbrella organisation which coordinates IEEE activities in India. Its primary aim is to assist and coordinate the activities of local "Sections", in order to benefit mutually, and avoid duplication of effort and resources. IEEE India Council was established on 20th May 1976 and is one of the five councils in the Asia Pacific Region.

IEEE has long banking relationship with our Bank through E-Corp Bank. Interacting with Union Dhara, Mr Harish Mysore, Sr. Director of India Operations lauded the personalised services being rendered by the present and past Branch Heads and their excellent team at our RT Nagar Branch, Bengaluru. He has all the appreciation for the timely help being extended to his organisation in financial management of the funds.

- Devkant Pawar, RO Bengaluru (N.)

Likith Agro Foods Private Limited

Processing Unit of Likith Agro Foods Private Limited is situated in Hoskote Industrial Area, at the outskirts of Bengaluru City. They are into manufacturing and processing of various agro products like Atta, Suji, Maida and other flours. They are in this business since 50 years. Dealing with our Bank since 2006 through our E-Corp Bank.

Mr Raghavendra Mailapur, the MD of Likith Agro Foods Private Limited is also a certified CA and President of Association of Karnataka Flour Mill Owners. They have taken various credit facilities from our Bank. Mr Mailapur has all the appreciation for the services rendered by our Bank. He fondly remembers loan granted to his unit in its formative years which helped the unit to grow stronger over the period. He is proud of our Bank and says prompt service is a distinctive quality of our Bank. He further added that due to the excellent services of our Bank he will continue to bank with us in future also inspite of various offers received from different financial institutions.

- Devkant Pawar, RO Bengaluru (N.)

क्षे.का. शिवमोग्गा

श्री आर. एस. मेल्गिरी हमारे बैंक के शिवमोग्गा क्षेत्र की ब्याडगी शाखा के साथ 15 वर्षों से अधिक समय से जुड़े हैं. उनका मिर्च का व्यापार है जो लगभग 75 वर्ष पुराना है. उन्हें यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से आरंभ में व्यापार करने के लिए 2 करोड़ ऋण प्राप्त हुआ. आगे चलकर बैंक के साथ संबंध और भी घनिष्ठ होते गये और दूसरी बार 5 करोड़, तीसरी बार 15 करोड़ और अंततः 20 करोड़ का ऋण प्राप्त हुआ. आज इनका व्यापार 20 करोड़ का है. उनके अनुसार अन्य बैंकों की तुलना में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की ऋण संबंधी सुविधा काफ़ी अच्छी है.

- ए. राजामणि, क्षे.का., शिवमोग्गा

RO Mangalore

Mangalore Minerals Private Limited was established in the year 1963 as a privately owned business by Mr.Shivaji Mendon in Kundapur, Mangalore. At its inception, it was in the business of mining and sale of unwashed industrial silica sand. The Company pioneered in setting up its first washing plant of Karnataka at Kundapur to process unwashed silica sand to washed silica sand. By adopting latest technologies in its mining processes and through maintaining strict quality checks, MMPL obtained the support and repetitive orders from many industries within a short period of time. It started its second washing plant in 1997 at Gudur in Andhra Pradesh. After the success in washed silica sand it pioneered into manufacture of Resin Coated Sand by setting up plants in Karnad (Karnataka) in 1998, in Solapur in 2004 and in Ankaleshwar (Gujarath) through it's subsidiary Company Mandovi Minerals Private Limited. Resin Coated Sand is used by foundries for producing a casting of precise dimensions, smooth surface and to avoid casting defect. In 2010, the Company pioneered into manufacture of reclaimed sand, by setting up a reclamation plant to recycle burnt sand and shell cores to deal with serious environmental issues due to disposal of burnt sand which is declared as a Hazardous waste by the Government.

In 2017 the Company set up the first ever green sand reclamation plant in the country to conserve the natural silica sand and recycling the used sand by reclaiming the burn sand, black sand, broken cores into reclaimed silica sand by using German technical knowhow meeting EU norms.

The Company is now in the process of commencing its operations in its new plant at Allahabad.

Union Bank of India (E-Corporation Bank) was the sole banker of MMPL and met all the banking needs of the company. With timely funding from E-Corporation Bank, the Company from its humble beginnings with an investment of Rs.15 lakhs into its first plant, has invested into 7 plants located in different parts of the country. The bank has provided financial solutions to the Company and has played a major role in the growth of the Company. The services provided by the Bank have been par excellence and it has been a great pleasure to be associated with Union Bank of India (E- Corporation Bank).

- K M Sudhakaran, pandeshwar Br., Mangalore

RO Belagavi

DR. PRABHAKAR BASAVAPRABHU KORE, Chairman, KLE, Society, Belagavi, Chancellor, KAHER (Deemed University), Belagavi, Chancellor, KLE Technological University, Hubballiis a Multi-faceted personality having served the country thrice as RajyaSabha MP has served with various committees of Central Govt. from Education and Healthcare to Urban Development, Planning, Agriculture, Skill Development, Tourism, etc.

Not only in Politics he has also contributed towards Industry, Cooperative Institutions, Agriculture and Farmer Welfare. Having spearheaded the Co-operative Movement along the border of Karnataka and Maharashtra with Doodha Ganga Krishna Co-operative Sugar Factory, Chikodi, Karnataka, he has played a vital role in establishment of the "Karnataka Suvarna Soudha", Belagavi, wherein the Winter Session of the Karnataka Legislature is conducted every year.

In the field of Education, Healthcare and Research, as Chairman of KLE Society, Belagavi since 1984, he has instrumental in the growth of KLE from 38 institutions in 1984 to 277 institutions. Over 55 percent of the institutions are based in rural areas.

Dr. Prabhakar Kore is dealing with Union bank of India since 2014 through his company accounts and supporting the bank in business ventures. He is known to all in Belagavi for the growth of the area, specially in village for his yeomen contribution for the welfare of people, household & society.

For his contributions, he has been awarded with various Awards and Recognitions which includes,

- Honorary Doctorate conferred by Karnataka University, Dharwad in 2008 and Rani Channamma University, Belagavi in 2013 for outstanding contributions to Education and Health Care
- Recipient of Karnataka Government 'Suvarna Karnataka Rajyotsav Award – 2006' for outstanding contribution in the field of education
- Honorary Doctorate in Education conferred by the University Sains Malaysia in 2015 for outstanding services and contributions.
- "Life Time Achievement Award", by "TiE – The Indus Entrepreneurs" – a Body of successful entrepreneurs and senior professionals of Silicon Valley, USA in 2013 at Hubballi.
- Honoured by Ms. Kathleen Sebelius, Secretary Health, USA for outstanding contribution in the field of Medical Education & Research in 2012.

- Ms. Pushpa Nand Kishor, RO Belagavi

RO Hubbali

PRN INFRATECH, Hubbali

PRN Infratech (erstwhile, P R Nayak Associates) is a partnership firm established in the year 1995 by the Nayak Group, which is one of the reputed and leading business houses in Hubballi is one of the prestigious clients of our NCM Hubballi Branch & Hubballi Zone & dealing since 1995. The family members of the partners of the firm are dealing with our Bank since 1970.

The firm is engaged in civil construction, mainly executing the contracts of public works department of various government organizations. The firm has pioneered the use of modern construction equipment & machinery bought from leading companies like Tata, L&T, Caterpillar etc. That results in saving of labour and energy besides boosting efficiency.

The Managing Partner, Sri Prakash R Nayak, is a Civil Engineer, with more than 20 years of experience in executing PWD Contracts. The other partner, Smt. Kalpana Nayak is an Architectural Engineer. The Partners are high net worth individuals having substantial income and are having vast experience in this line of activity. The firm is having required expertise and infrastructure to execute the works and the partners have good rapport with the contract awarding authorities.

Over the years, the firm has expanded its geographic reach to execute projects across other states like Goa,Maharashtra, etc.

Shri Prakash R. Nayak expressed that, with the small initial amount started his own business which has grown in size because of banking with (E- Corp Bank) Union Bank of India. Since 30 years in every stage of our growth and success the Bank has supported. We are very thankful to our Bank for this support and association.

- Prashanth Kithali, RO Hubbali

RO Mysuru

BNPM INDIA - BANK NOTE PAPER MILL INDIA PRIVATE LIMITED

Situated in Note Mudran Nagar, Mysuru, Bank Note Paper Mill India Private Limited is one of our most prestigious customers in Mysuru. This company is a Joint Venture between Security Printing and Minting Corporation of India Ltd which is a wholly owned Public Sector Undertaking of Government of India, and Bharatiya Reserve Bank Note Mudran Private Ltd. Which is a wholly owned subsidiary of Reserve Bank of India. It is engaged in production of Bank Note papers with a capacity of 12000 TPA.

- Ms. Siniba K., RO Mysuru

MD of BNPM with FGM Begaluru and other executives

JSS AHER - JSS ACADEMY OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH

Another premier customer for our bank is the JSS – AHER – JSS Academy of Higher Education and Research. Started in 1954 by Jagadguru Dr. Sri Shivarathri Rajendra Swamiji, today JSS AHER is one of the premier institutions providing quality education in the fields of Arts, Sciences, Management, Medicine, Pharmacy etc. It has set up more than 330 educational institutions in the states of Karnataka, Tamil Nadu and Uttar Pradesh accommodating over 60,000 students and 8000 faculty.

The Vidyapeetha runs 19 free hostels, 3 destitute homes, 1 hostel for the blind and 2 for the disabled. Apart from these, 23 hostels are attached to different teaching institutions and more than 4000 students are provided free food and shelter in these free boarding homes.

The institutions have collaborations with reputed universities, industrial and research organizations viz.

La Trobe University, Australia, Khon Kaen University, Thailand University of Southern Nevada, USA, Long Island University, USA, AIMST University, Malaysia, Howard University, Washington DC, University of Illinois, Chicago, USA, AlfaGene Biosciences Inc., USA, National Institutes of Health, USA, Oman Medical College, Oman, etc.

- Ms. Siniba K., RO Mysuru

SKDRDP BC Model

Shri Virendra Heggade

M/s. Shree Kshethra Dharmasthala Rural Development Project (R) a charitable trust popularly known as 'SKDRDP' is a NGO based in coastal districts of Karnataka and established in 1991. It is a non-profit – non-political organization registered as a Public Charitable Trust under Indian Charitable Trust Act, 1882. Author of the Trust is Shri D. Veerendra Heggade. He is the president of the trust conferred with prestigious "Padma Bhushan" award in the year 2000 for Social Service and Padma Vibhushan in 2015. SKDRDP has been conferred prestigious Ashden Gold Award popularly known as Green Oscar award for the year 2012, for its contribution to micro-finance and promotion of sustainable energy.

Dr. Heggade gave prominence to human efforts in the Rural Development Project (SKDRDP) conceived by him four decades back. He encouraged poor families to develop the bent of mind to improve their agricultural lands with own effort. When these people faced financial crunch for development, Self Help Group concept was introduced. People began learning the art of joint financial management when several like-minded people came together to manage finances by following organisational norms and discipline. The SHG movement started in Belthangady taluka of Dakshina Kannada district in 1991 has today spread across Karnataka state embracing over 48 lakh families and becoming an inseparable part of their life.

SKDRDP BC Trust is presently managing 6,00,000 Self-Help Groups (SHGs)/Joint Liability Groups (JLGs) consisting of total 48,70,000 members. SKDRDP is working as BC/BF of 6 commercial banks and the SHG/JLGs formed by the Trust are linked to these banks generally on geographical basis in the State of Karnataka. As Business Correspondent the SKDRDP BC Trust trains the SHG/JLGs to prepare their credit plans and avail credit from the bank. SKDRDP BC Trust is providing end to end solution in SHG/JLGs credit linkage programme. Identifying the deserving individual to form SHG/JLG, training and nurturing the group, linkage to respective Bank. Trust is maintaining whole system with NILL Bank NPA.

Grooming the mindset to repay the availed loan in weekly installments without fail by introducing financial discipline among the poor has been major achievement of the SKDRDP. The poor have come to believe that they can become economically empowered if they constructively utilise the availed funds and repay the same on time. Cumulatively, the 5,00,000 odd SHGs promoted by SKDRDP repay over Rs. 12,000 crore every year to banks at present. There are many examples wherein Groups conducted their weekly meetings even during the COVID-19 lockdown, received the weekly repayments from members and paid the same to banks when the lockdown was lifted. The "repayment culture" has come to stay among the poor which can go a long way in their banking transactions yielding positive results.

The self-help groups have been able to earn enhanced profits following savings by members as well as business transactions. The savings made by members get credited to the cash credit account of the Groups maintained in the bank. Groups conducting their business with discipline can expect good profits in this methodology. SHGs promoted by the SKDRDP have in their disposal about Rs. 2,000 crore of savings which is lent to the members earning up to Rs. 200 crore interest income annually. Profits get increased by lending even this additional income to members. SHGs also get marginal profit with the difference in the rates of interest on the loans availed by them through banks and the rates they charge to the members. SHGs in some districts also get interest subvention under the Union Government's National Rural Livelihood Mission (NRLM). They can expect to get Rs. 15,000 interest subvention from the government in a year. The SKDRDP has enabled the eligible SHGs to avail the interest subvention by uploading their data to the government portal.

Thus, the SHGs are earning profit with these transactions conducted by the poor for the poor. Dividends of these profits are available to members as SKDRDP has ensured proper management of the monies without there being any misuse including follow up and vigilance. Annual audit is done on the accounts of every SHG. Arrangements are made for distribution of the depending on the earnings of each SHG. As Sri Heggade says, "When the SHG conduct their transactions in a proper manner, they get profit just as milk cream is separated from boiling the milk and churning to get butter. When this butter is shared periodically, the members get money they need for immediate requirements".

According to Sri Heggade, greater happiness is felt among SHG members when they get a dividend for their savings. The money will help them to meet immediate emergencies. The SKDRDP had provided many facilities to SHGs and members during COVID-19 first wave. Reduced rates of interest for loans extended to members, extension of repayment period, not levying compound interest on overdue loans, COVID special loan, provision for additional funds for members and the like had helped people to recover from lockdown impact much before the expected time and set right their businesses. Now, during the COVID second wave SKDRDP has arranged for distribution of dividends earned by the SHGs to their members. About Rs. 620 crore surplus was accumulated in the SHGs in the last three years. Out of this Rs. 50 crore concession was granted by the SHGs to their members for enrolling them

to the group health insurance scheme in view of COVID pandemic. Currently the SHGs are distributing 80% of the surplus available amounting to Rs. 495 crore as dividend to the members. Members of Groups that have more savings and have availed more loans stand to get higher dividends. As many as 34 lakh members are getting the benefit from the distribution of dividends. The savings of Rs. 10 to Rs. 20 made by members of SHGs on weekly basis have today earned them hand some dividends. The SHGs are allowed the members to take away the dividends without adjusting the money for the overdue amounts of the members occurring due to COVID -19 second wave lock down. With every member poised to receive an average Rs. 2,000 dividend, the distribution exercise will perhaps be a record.

SKDRDP has a very long-standing relation with Union bank of India as BC / BF since 2011. Major portion of the BC model portfolio as a whole is with Union bank of India. As of now 45% of SKDRDP BC Trust managed total portfolio is with Union Bank of India. SKDRDP as BC/BF to Union bank of India, facilitating financial inclusion activities to SHG / JLG in 82 taluks of 16 District Karnataka and 1 Taluk of Kerala.

The dream of Sri Veerendra Heggade to empower the poor families through Self Help Group movement has been realised to a large extent in Karnataka state. The Rs. 10 saved per week bringing in a dividend of thousands of rupees is the success of the movement and SKDRDP. Perhaps there may not be any similar example where such a huge amount of dividend is getting distributed in the history of SHG movement of the country.

- Ms. Siniba K, RO Mysuru

RO Udupi

Abharan Jewellers

Abharan was born out of the entrepreneurial vision of late Sri Burde Sadananda Kamath, who started the first jewellery shop of Udupi - "Neo Jewellery Mart" - in 1935. Abharan's founder's son Sri Madhukar S. Kamath endeavoured to revive his father's dream.'Abharan Jewellers' was thus born in 1979. The real transformation of the business began as the fourth generation freshly minted graduates Mr. Satvik Subhas Kamath and Mr. Akarsh Mahesh Kamath.

Abharan Jewellers has emerged as the most popular homegrown jewellery brand in Karnataka with a retail network comprising 14 showrooms in the State and one in neighboring Goa too. Brand Abharan is loved by its legions of customers and renowned for its unmatched designs, craftsmanship and impeccable customer service.

It has been a story of continuous growth for Abharan.

- Abharan is the first to introduce Gold Saving Scheme way back in 1979.
- Also Introduced the Karatometer in 2004 for checking the purity of gold.
- Introduced hand held simputers for fast and easy billing process.

Rewards and Recognitions:

- 'Partner in Progress' award from Income Tax Department for Honest Tax Payer in Karnataka Region.
- Abharan was nominated for Best Retail Jeweller in the National Level Competition organized by the Retail Jeweller India Magazine.
- Life Member of All India Gem & Jewellery Domestic Council.
- Member of GJEPC of India and Udupi Chamber of Commerce & Industries and Udupi Jewellers' Association.

In a humble endeavour to give back to society, Abharan has set up the Abharan Foundation. This philanthropic arm of Abharan seeks to serve the underprivileged sections of the society in terms of medical assistance, children's education and takes-up community causes such as building toilets in Government Schools and providing free eye check-ups and treatment to destitute women.

- Gururaj H, Udupi Br., Udupi

Sagar group - Food and hospitality services private limited is banking with our Udupi branch since 1996 (E corporation bank) Sagar group has grown to be one of the leading catering and hospitality service provider across India serving over 1Lakh+ meals per day and hospitality management with over numerous clients in various sectors such as Manufacturing, Educational Institutes, Software Companies, and Hospitals and so on.

Qualified staffs bearing adequate experience and a dynamic team of field occurs who carefully consider all aspects of customer preferences, strive to ensure complaint-free, totally satisfactory service at all times. They offer services such as corporate catering, Industrial catering, school, college, hostel mess catering, meetings & get-together event catering, hospitality services, guest house management, gardening services and man-power services.

Their clients are Reliance, Tata, Infosys, Tech Mahindra, Aditya Birla group, Wipro, Jindal steel and power, Huawei, ITC limited, Nissin, Sports India, Vemana, MCF, Weg, Autoliv, Wistron, Sainik school, Makino, NSTY, and Flowserve. They have ISO 22000 and IDO 900-2008 quality management system certificate. They are delighted with our services and exclusively banking with us only.

- Gururai H, Udupi Br., Udupi

Popular Waterfalls in Karnataka

Waterfalls are a natural source of wonder and entertainment. They are a destination that we seek for a variety of reasons, and we all know of at least one of the five famous falls like: Niagara Falls, (North America,) Angel Falls and Iguazu Falls, (South America,) Victoria Falls, (Africa,) and Olo'upena Falls (Hawaiian Islands.) Besides their captivating appearance in nature, waterfalls have an important impact on the nearby ecosystem and economy, and they have been shown to improve mental and physical well being of people.

The sound of a waterfall is soothing, Watching it also aids in lowering stress levels, The mist cleanses and deposits natural minerals in the air, which means cleaner, healthier air to breathe.The most interesting health benefit of all involves the balancing of ions, which bodies tend to carry called cations. There cascades, carry an abundance of anions as it travels through the earth, and with the force of the water landing into the pool at the bottom of the fall, a lot of these negative ions are released, causing a spike in serotonin levels.

The important water falls in the State of Karnataka are.

1. JOG FALLS:-

Jog Falls on the Sharavati river located in the Western Ghats of Karnataka. is one of the most visited falls in south India and major tourist destination. It is the second highest plunge waterfall in India. with curvy roads, and a, dense jungle. Jog Falls, has been awarded the title of 'Niagara of India' It is ranked 36th in the list of free-falling waterfalls.

The best time to visit Jog falls is from June to Oct when you can take advantage of the various flora and fauna nearby Jog Falls.

Jog Falls are unique as the water does not stream down the rocks in a tiered fashion; it thunders down the slope losing contact with the rocks, making it the tallest un-tiered waterfall in India.

It is also called by alternative names of Gerusoppe falls, Gersoppa Falls and Jogada Gundi.

The Sharavati, flowing over a very rocky bed about 250 yards (230 m) wide, here reaches a tremendous chasm, 290 m (950 ft) deep, and the water comes down in four distinct falls. The Tourism Department has built steps from the viewpoint to the bottom of the hill. There are approximately 1400 steps built to reach the bottom of the hill.

2. IRUPU FALLS

The Irupu Falls (also called Iruppu Falls) are located in the Brahmagiri Range in the Kodagu district of Karnataka, bordering the Wayanad district of Kerala. It is a fresh water cascade and is situated at a distance of 48 km from Virajpet on the highway to Nagarhole. This Falls is also known as the Lakshmana Tirtha Fall, derived from the name of the tributary of Cauvery.

A forest trail leads from this fall to the Brahmagiri Peak in Southern Kodagu. a pilgrimage spot. A famous Rameshwara Temple is situated on the banks of the Lakshmana Tirtha River, en route to the Falls. This shiva temple attracts many pilgrims during the festival of Shivaratri.

3. ABBEY FALLS

Abbey Falls (also spelled Abbi Falls or Abbe Falls) is a waterfall in Kodagu, in the Western Ghats of Karnataka, India.

The waterfall is on the river Kaveri, located between private coffee plantations with stocky coffee bushes and spice estates and trees entwined with pepper vines. There is a hanging bridge constructed just opposite the falls.

The falls earlier called Jessi Falls, was named after a British officer's wife. However, the place was a thick jungle back then. Years later, the waterfall was discovered by

Mr. Neravanda B. Nanaiah who bought the place from the government and converted it into a coffee and spice plantation.

4. HEBBE FALLS

The Hebbe Falls is a wonderful waterfall located in the Chikmagalur district of Karnataka. It is one of the top Kemmanagundi tourist place, and the best place to visit near Bangalore. Situated inside the Bhadra Wildlife Sanctuary, the Hebbe Falls are surrounded by dense forests and coffee plantations. It cascades down from a height of 550 feet in two stages to form DoddaHebbe (Big Falls) and ChikkaHebbe (Small Falls). A pool formed by the waterfall is believed to be infused with herbs which can cure skin diseases.

5. SHIVANASAMUDRA FALLS

Shivanasamudra Falls is a waterfall in Chamarajanagar district of Karnataka. is situated along the river Kaveri, which is the boundary to the Chamarajanagar and Mandya district. This is a segmented waterfall. Segmented waterfalls occur where the water flow is broken into two or more channels before dropping over a cliff, resulting in multiple sides by waterfalls. It is a perennial waterfall.

6. UNCHALLI FALLS :-

Unchalli is yet another breath taking waterfall located in North Karnataka (near Sirsi). formed when water from river Aghanashini descends 380ft. The river flows down through a narrow water path that is surrounded by thick green forests on both sides. The width of the river gradually broadens as the water gushes down, eventually forming a wide and beautiful waterfall. The triangular shape of the waterfall is something that distinguishes Unchalli Falls from the rest. Unchalli Falls is also called as Lushington falls. The falls are sometimes called KeppaJoga because of the deafening sound they make.

7. SATHODI FALLS

Sathodi is a wonderful and picturesque rectangular shaped waterfall in Uttara Kannada in Yellapur district. The place is less packed with tourists, but indeed a beautiful waterfall to see. The water falls from a height of 15m and forms a pool beneath. The stream of water contains a jumble of rocks and is sometimes impossible to approach. The water flow is formed by the union of many other rivers that flow to Kallarmane Ghat, in Uttara Kannada region. The water that forms the waterfalls flows into the River Kali through the Dam Kodasalli. Sathodi Falls are not very approachable because of the rocks.

The rock formations around the waterfalls form a natural enclosure with the bountiful greenery and the clear and crystal water below. Being fed by multiple tributaries the waterfall always has water. One can enjoy the cool waters and swim through the clear water.

8. GOKAK FALLS

Gokak Falls is 6 km away from Gokak town and gets its name from the Goki trees found in abundance in these areas. It resembles the Niagara Falls due to its features like the fall, shape etc. The, River Ghataprabha takes a leap of 52 metres over the sand-stone cliff amidst a picturesque gorge of the rugged valley, making a beautiful sight. This place has the credit of generating electricity for the first time in the country in about 1887. A prime attraction of the Gokak Falls is the hanging 200-m-long bridge that lies 14 m above the bedrock. Tourists can also visit monuments on both sides of the rocky gorge which include temples of Goddess Durga, Lord Shanmukha and Lord Mahalingeshwara.

- Arvind HG
R.O., Kalaburgi

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा और उनके सेनापति क्रांतिवीर सांगोल्ली रायन्ना

रानी चेन्नम्मा कर्नाटक के कित्तूर प्रांत की महारानी थी. कर्नाटक के बेलगावी जिले के कित्तूर तालुका में प्रति वर्ष अक्टूबर के माह में 'कित्तूर उत्सव' मनाया जाता है. यहाँ के लोगों के लिए यह उत्सव बहुत मायने रखता है क्योंकि यह उनकी विरासत और संस्कृति का अमिट हिस्सा है. इस उत्सव की शुरुआत वर्ष 1824 में उस समय हुई थी जब रानी चेन्नम्मा ने घमासान युद्ध में अंग्रेजों को परास्त किया था. उन्होंने 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम से 33 वर्ष पूर्व ही अंग्रेजों के साथ युद्ध लड़ते हुए उनके दाँत खट्टे कर दिये थे.

20 अक्टूबर, 1778 को वर्तमान कर्नाटक के बेलगाम जिले के पास एक छोटे से गाँव काकती में लिंगायत परिवार में चेन्नम्मा का जन्म हुआ. बचपन से ही तलवारबाजी, तीरंदाजी और घुड़सवारी की शौकीन रही चेन्नम्मा की बहादुरी से पूरा गाँव परिचित था. उस समय काकती के पास ही कित्तूर नामक संपन्न साम्राज्य था जहां देसाई राजवंश के राजा मल्लसर्ज सिंहासन पर आसीन थे. एक बार उन्हें सूचना मिली कि काकती गाँव में नरभक्षी बाघ का आतंक फैला हुआ है. लोगों को इस बाघ से छुटकारा दिलाने के उद्देश्य से राजा गाँव में पहुंचे. जैसे ही उन्हें बाघ की आहट मिली उन्होंने तीर चलाया. बाघ घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा. राजा बाघ के पास गए लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो देखा कि बाघ को दो तीर लगे हुए हैं. इससे वह सोच में पड़ गए कि दूसरा तीर किसने चलाया? तभी उनकी नज़र सैनिकी वेष-भूषा में सजी एक लड़की पर पड़ी. उन्हें पता चला कि दूसरा तीर उस लड़की ने ही चलाया है. वह लड़की कोई और नहीं बल्कि चेन्नम्मा ही थी. चेन्नम्मा की हिम्मत और वीरता ने मल्लसर्ज को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने चेन्नम्मा के पिता से उनका हाथ मांग लिया. 15 वर्ष की चेन्नम्मा कित्तूर की रानी चेन्नम्मा बन गई. शीघ्र ही राजा मल्लसर्ज रानी चेन्नम्मा की राजनैतिक कुशलता से भी परिचित हो गए. आगे चलकर राजा मल्लसर्ज और रानी चेन्नम्मा को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम उन्होंने रुद्रसर्ज रखा.

वर्ष 1816 में एक अनहोनी में राजा मल्लसर्ज की मृत्यु हो गई. राजा की मौत के कुछ समय पश्चात ही उनके एकमात्र पुत्र की भी मौत हो गई. ऐसे में एक बार तो ऐसा लगा जैसे कित्तूर का भविष्य ही समाप्त हो गया. रानी चेन्नम्मा पर तो मानों दुख का पहाड़ टूट पड़ा पर उन्होंने अपना मनोबल नहीं टूटने दिया. उन्होंने कित्तूर की स्वाधीनता की रक्षा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया. इसी समय अंग्रेजों की टेढ़ी नज़र कित्तूर पर पड़ी और वे कित्तूर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने हेतु चालें चलने लगे. अपना सब कुछ खोने के बाद भी अपनी प्रजा और अपने विश्वासपात्र मंत्रियों एवं सेनापति सांगोली रायण्णा के साथ रानी चेन्नम्मा ने कसम खाई कि वह अपने जीते जी कित्तूर की आजादी से समझौता नहीं करेंगी.

अपने पुत्र की मृत्यु के पश्चात रानी ने एक अन्य बच्चे शिवलिंगप्पा को गोद ले लिया और अपनी गद्दी का वारिस घोषित कर दिया. लेकिन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी 'डोक्ट्रीन ऑफ लैप्स' यानि 'हड़प नीति' के तहत इसे स्वीकार नहीं किया. ब्रिटिश शासन ने शिवलिंगप्पा को निर्वासित करने का आदेश जारी किया जिसे रानी चेन्नम्मा ने नहीं माना. हड़प नीति के अलावा रानी चेन्नम्मा का अंग्रेजों की 'कर नीति' को लेकर भी विरोध था. रानी ने बॉम्बे के गवर्नर लॉर्ड एल्फिंस्टन को इस संबंध मे पत्र भी लिखा पर उसने भी रानी की प्रार्थना की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और इसे खारिज कर दिया. अंग्रेजों को लगा कि आज नहीं तो कल रानी चेन्नम्मा कित्तूर उन्हें दे देंगी पर उन्हें नहीं पता था कि यहीं रानी चेन्नम्मा भारत में उनके पतन की शुरुआत करेंगी.

ब्रिटिश सेना ने अक्टूबर 1824 में कित्तूर पर घेरा डाल दिया था. यह कित्तूर और अंग्रेजों के बीच पहला युद्ध था. अंग्रेजों ने लगभग 20000 सैनिकों और 400 बंदूकों के साथ हमला किया. रानी चेन्नम्मा और सांगोली रायण्णा इस तरह के हमले के लिए बिलकुल तैयार थे. उन्होंने अपनी सेना के साथ मिलकर पूरे जोश से युद्ध किया. सेनापति रायण्णा ने स्थानीय लोगों को भी संगठित किया और अंग्रेजों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया. कल्पनातीत इस युद्ध से ब्रिटिश सेना को भागना पड़ा. इस युद्ध में दो अंग्रेज़ अधिकारी मारे गए और दो अधिकारियों को बंदी बना लिया गया. इन दोनों अधिकारियों को इस शर्त पर रिहा किया गया कि ब्रिटिश सरकार कित्तूर के खिलाफ युद्ध बंद कर देगी और कित्तूर को शांति पूर्वक रहने दिया जायेगा. अंग्रेजों ने इस समझौते को माना भी लेकिन बाद में अपनी बात से वे मुकर गए.

दिसंबर, 1824 में ही अंग्रेजों ने फिर से कित्तूर पर हमला बोल दिया. इस बार भी रानी और उनकी सेना ने अपनी जान की बाज़ी लगा दी. रानी के दरबार के ही कुछ विश्वासघातियों द्वारा धोखा देने के कारण तथा अंग्रेजों की तोप और गोलो बारूद के सामने रानी की शक्ति कम पड़ गई और उन्हें बंदी बना लिया गया. सांगोली रायण्णा को ब्रिटिश सैनिक खुले युद्ध में पराजित नहीं कर सकें. वह भेष बदल कर अंग्रेजों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध को जारी रखे. परंतु उन्हें भी किसी अपने के विश्वासघात से 1830 में अंग्रेजों द्वारा पकड़ लिया गया.

रानी चेन्नम्मा को करीब 5 वर्षों तक बेलगाम के समीप बैलहोंगल के किले में बंदी बनाकर रखा गया. 21 फरवरी, 1829 को रानी चेन्नम्मा पंचतत्व में विलीन हो गयी. उनकी समाधि बैलहोंगल में है और आज भी संरक्षित है. सांगोली रायण्णा को अंग्रेजों ने मृत्यु की सज़ा सुनाई और 26 जनवरी, 1831 को बेलगावी जिले के पास ही नंदगढ़ से 4 किमी दूर एक बरगद के पेड़ से फांसी पर चढ़ा दिया.

रानी चेन्नम्मा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली सेनानी थी. अंग्रेजों को हराकर पूरे भारत के सामने उन्होंने यह उदाहरण पेश किया कि यदि अपने में एकजुट हो तो दुश्मन को देश से खदेड़ा जा सकता हैं. 11 सितंबर, 2007 को भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने भारतीय संसद परिसर में रानी चेन्नम्मा की मूर्ति का अनावरण किया. बेंगलूरु शहर के मुख्य रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर 'क्रांतिवीर सांगोली रायण्णा रेलवे स्टेशन' रखा गया है. सरकार ने रानी के सम्मान में उनकी मूर्तियाँ बेंगलूरु और कित्तूर में लगवाई है.

रानी चेन्नम्मा द्वारा जगाई गई आज़ादी के अलख का ही परिणाम था कि 1857 में स्वतंत्रता संग्राम आरंभ हुआ और लंबे संघर्ष के बाद 1947 में हम आजाद हुए.

- सौरभ श्रीवास्तव
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

परमवीर मेजर राम राघोबा राणे

दक्षिण भारत का एकमात्र 'परमवीर चक्र' विजेता

देशभक्ति के जज्बे से लबालब भरे थे राम राघोबा राणे, जिन्हें उनकी शूरवीरता के लिए वर्ष 1948 में भारत के सर्वोच्च शौर्य अलंकरण परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था.

मेजर राम राघोबा राणे का जन्म 26 जून, 1918 को कर्नाटक के कारवार जिले के हावेरी गांव में हुआ था. उनके पिता राघोबा पी. राणे कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले के चंदिया गांव में पुलिस कॉन्स्टेबल थे.राघोबा की प्रारंभिक शिक्षा विभिन्न जिला स्कूलों में हुई, क्योंकि उनके पिता का लगातार स्थानांतरण होता रहता था. बचपन से ही उनके मन में देशप्रेम की भावना घर कर चुकी थी, इसलिए अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वे कई आंदोलनो का हिस्सा रहे.

कुछ कर गुजरने की इच्छा के चलते वे सेना में भर्ती हो गए. 10 जुलाई, 1940 को उनके सैनिक जीवन की शुरुआत बॉम्बे इंजीनियर्स के साथ हुई. उन्हें सबसे पहले 26वीं इन्फैंट्री डिवीजन की इंजीनियरिंग यूनिट में तैनात किया गया, जो उस दौरान बर्मा बॉर्डर पर जापानियों से लोहा ले रही थी. उन्होंने यहां अदम्य साहस का परिचय दिया जिसके चलते उन्हें जल्द ही सेकेंड लेफ्टिनेंट के रूप में पदोन्नत कर दिया गया.

सेकेंड लेफ्टिनेंट राणे की जम्मू और कश्मीर में तैनाती सन 1947 में उस समय की गई जब जम्मू और कश्मीर के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध जोरों पर था. अब तक भारतीय सेना ने दुश्मन सेना को करारी मात देते हुए नौशेरा की जीत हासिल कर ली थी और आक्रामक रुख अख्तियार करते हुए बनवाली रिज, चिंगास और राजौरी पर कब्जा करने के लिए नौशेरा-राजौरी मार्ग में आने वाली भौगोलिक रुकावटों और दुश्मन की सुरंगों को साफ करना बेहद जरूरी था. इस बेहद जरूरी और अत्यंत जोखिम भरे कार्य की जिम्मेदारी सेकंड लेफ्टिनेंट राणे को दी गई. उन्हें उस टुकड़ी का मुखिया बनाया गया, जिसे नौशेरा-राजौरी मार्ग पर दुश्मन द्वारा बिछाई गयी लैंड माइन और रोड ब्लॉक को साफ करना था.

पहले दिन सुबह जैसे ही राघोबा व अन्य सैनिकों ने लैंड माइन साफ करने का कार्य शुरू किया, पाकिस्तानी सैनिकों ने उनके ऊपर भारी गोली बारी शुरु कर दी. इस गोलीबारी में उनकी टीम के दो सैनिकों की मौत हो गई, चार सैनिक घायल हो गए और वह खुद भी बुरी तरह जख्मी हो गए. परंतु उन्होंने अपने जख्मों की परवाह किए बिना अपनी टीम को पुनर्गठित किया और टैंकों के लिए रास्ता साफ करने का कार्य प्रारंभ कर दिया. पूरे दिन दुश्मन सेना की मशीन गन और मोर्टार से फायरिंग जारी रही परंतु इन सबके बीच राणे और उनकी टीम अपनी सेना और टैंकों के लिए रास्ता साफ करती रही जिसकी बदौलत अपराह्न तक भारतीय सेना ने बनवाली रिज पर कब्जा कर लिया. राणे जानते थे कि रिज क्षेत्र अभी पूरी तरह दुश्मनों से मुक्त नहीं हुआ है फिर भी उन्होंने अपनी टीम के साथ रात के अंधेरे में और दुश्मन सेना की भारी गोलीबारी के बीच आधी रात तक रास्ता साफ करने का कार्य किया. तथा टैंकों को आगे बढ़ने के लिए डायवर्जन तैयार किया.

सबसे आगे वाली बख्तरबंद गाड़ी पर सवार हो राणे आगे बढ़े. करीब आधा मील के बाद पूरा रास्ता चीड़ के घने पेड़ों से ब्लॉक था. राणे व उनकी टुकड़ी ने कुछ पेड़ों को टैंक से ब्लास्ट कर उड़ा दिया और कुछ को उखाड़ कर आगे बढ़ें. आगे की सड़क सांप की तरह पहाड़ियों के इर्द-गिर्द घूम रही थी. इतना कठिन रास्ता, ऊपर से इतनी लैंड माइन, रोड ब्लॉक और दुश्मन की भारी गोलाबारी. अगला रोड ब्लॉक दुश्मन सेना द्वारा ध्वस्त की गई एक पुलिया थी. राघोबा टैंक से उतर पुलिया की मरम्मत करने में लग गए. इससे पहले वह काम शुरू कर पाते दुश्मन ने अपनी मशीनगन और मोर्टार के साथ मोर्चा खोल दिया और अंधाधुंध गोलियों और बमों की बारिश शुरु कर दी. लेकिन राणे ने शानदार साहस और नेतृत्व के साथ एक मोड़ बनाकर सेना को आगे बढ़ाया. रास्ते में कई और रोड ब्लॉक आए लेकिन राणे सभी अवरोधों को नष्ट करते हुए आगे बढ़ते रहें. रास्ते में पांच बड़े चीड़ के पेड़ों का एक बहुत बड़ा रोड ब्लॉक आ गया जो चारों तरफ लैंड माइन से घिरा हुआ था. साथ ही दुश्मन की मशीनगन से भारी गोलीबारी जारी थी. ऐसे में राणे ने अपनी जान की परवाह किए बिना लैंड माइन और पेड़ों को हटाना शुरू कर दिया. परंतु अत्यधिक अंधेरे की वजह से कार्य को सुबह तक स्थगित कर दिया गया.

तीसरे दिन सूर्योदय से पूर्व अंधेरे में ही राणे ने अपनी टुकड़ी के साथ दुश्मन की मशीनगन और मोर्टार की गोलीबारी के बावजूद अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से सूर्योदय तक उस रोड ब्लॉक को साफ करने में सफलता हासिल की और आगे बढ़े. वहाँ दुश्मनों ने पहले से ही लैंड माइन बिछा रखीं थी. परंतु सेकंड लेफ्टिनेंट राणे ने घायल होने के बावजूद सड़क से न केवल लैंड माइन साफ किया वरन उसे सेना के गुजरने लायक भी बना दिया. सेना आगे बढ़ी और दोपहर तक चिंगास पहुंच कर वहाँ के पोस्ट पर अपना कब्जा जमा लिया. लेकिन अभी भी राजौरी पोस्ट पर कब्जा बाकी था. सेकेंड लेफ्टिनेंट राणे बिना भोजन और बिना आराम के लगभग आधी रात तक आगे का रास्ते साफ करते रहें.

चौथे दिन राणे ने दोपहर तक चिंगास राजौरी का रास्ता साफ किया. आगे के आधी रात्रि तक कार्य करते रहें और अंतत: राजौरी की पोस्ट पर सेना का कब्जा हो गया. सेकेंड लेफ्टिनेंट राणे ने अपने जीवन की परवाह किए बिना अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुए लगातार चार दिनों तक भारतीय सेना और टैंकों के रास्ते में पड़ने वाले अवरोधों और लैंड माइन का सफाया कर एक सुरक्षित रास्ता उपलब्ध कराया. इसी दिलेरी के परिणामस्वरूप भारतीय सेना को एक बड़ी जीत हासिल हुई.

सेकेंड लेफ्टिनेंट राणे की इस वीरता के लिए उन्हें 08 अप्रैल, 1948 को सेना के सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. राणे 1968 में भारतीय सेना से मेजर के रूप में सेवानिवृत्त हुए. राणे अपने काम और देश के प्रति समर्पित शूरवीर थे. वर्ष 1994 में 76 वर्ष की आयु में मेजर राम राघोबा राणे पंचतत्व में विलीन हो गए.

- अभिषेक कुमार
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

कर्नाटक की वीरांगना रानी अब्बक्का देवी

पुर्तगालियों से लोहा लेने वाली रानी अब्बक्का चौटा को भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी माना जाता है. उनकी शासन व्यवस्था में समस्त धर्मों और जातियों की भागीदारी होने से यह सिद्ध होता है कि वे अपने समय में काफी लोकप्रिय शासक रही होंगी.

अभया रानी अब्बक्का चौटा का जन्म कर्नाटक के उल्लाल नगर के चौटा राजघराने में हुआ था. चौटा वंश मातृवंशीय परंपरा का पालन करता था. ज़ाहिर है कि मातृवंशीय परंपरा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें परिवार की स्त्रियों का ओहदा प्रमुख होता था और संपत्ति व शासन का हक बेटों के बजाय बेटियों को दिया जाता था. इसी परंपरा के मुताबिक अब्बक्का के मामा तिरुमला राय ने उन्हें उल्लाल नगर की रानी घोषित किया. साथ ही उन्हें युद्ध लड़ने और शासन व्यवस्था संभालने का प्रशिक्षण भी दिया गया.

उनके शासन काल में सभी धर्मों के लोग समान रूप से रहते थे. उनकी सेना में भी सभी धर्मों, जातियों और समुदायों के लोग थे. लोककथाओं की मानें तो वे एक न्यायप्रिय रानी थीं और इसी कारण उनकी प्रजा उन्हें बहुत पसंद भी करती थी. ऐसा भी माना जाता है कि रानी अब्बक्का लड़ाई में अग्निबाण का उपयोग करने वाली आखिरी शख्स थीं. उनकी अच्छाइयों और वीरता के कारण ही उन्हें 'अभया रानी अर्थात ऐसी बहादुर रानी जो किसी से नहीं डरती' भी कहा जाता था.

रानी अब्बक्का के मामा तिरुमला राय ने उनका विवाह मेंगलूरु की बंगा रियासत के राजा लक्षमप्पा अरसा के साथ करवाई. लेकिन शादी के कुछ ही समय बाद रानी अब्बक्का अपने पति से अलग हो गईं और वापस उल्लाल आ गईं. उन्हें शायद अंदाज़ा भी नहीं था कि आने वाले समय में उनके पति लक्षमप्पा इस बात का बदला लेने के लिए उनके खिलाफ लड़ाई लड़ने में पुर्तगालियों का साथ देंगे.

वर्ष 1525 में पुर्तगालियों ने दक्षिण कन्नड़ के तट पर हमला किया और मेंगलूरु के बंदरगाह को तबाह कर दिया. लेकिन वे उल्लाल पर कब्ज़ा नहीं कर पा रहे थे. रानी अब्बक्का की रणनीतियों से परेशान होकर पुर्तगालियों ने उन पर यह दबाव बनाने की कोशिश की कि वे उन्हें 'कर' (टैक्स) अदा करें. लेकिन रानी अब्बक्का ने समझौता करने से साफ़ इंकार कर दिया. इसके बाद वर्ष 1555 में पुर्तगालियों ने रानी पर हमला बोल दिया, लेकिन रानी अब्बक्का की रणनीति के समक्ष उनकी एक न चली औए वे बुरी तरह से पराजित हो गए.

वर्ष 1557 में पुर्तगालियों ने मेंगलूरु को लूटकर बर्बाद कर दिया. वर्ष 1568 में वे उल्लाल पर हमला करने के लिए आए लेकिन रानी अब्बक्का ने पुन: ज़ोरदार विरोध किया. पर इस बार पुर्तगाली सेना उल्लाल पर कब्ज़ा करने में सफल रही और राज दरबार में घुस आई. रानी अब्बक्का वहाँ से बचकर निकल गयी और उन्होंने एक धर्म स्थल में शरण ली. उसी रात करीब 200 सैनिकों को इकट्ठा करके रानी अब्बक्का ने पुर्तगालियों पर पुन: धावा बोल दिया. इस लड़ाई में पुर्तगाली सेना का जनरल मारा गया, अनेकों पुर्तगाली सैनिक बंदी बना लिए गए और बाकी पुर्तगाली सैनिक भाग खड़े हुए. इसके बाद रानी अब्बक्का ने अपने साथियों के साथ मिलकर पुर्तगालियों को मेंगलूरु का किला छोड़ने हेतु मजबूर कर दिया.

लेकिन, वर्ष 1569 में पुर्तगालियों ने न सिर्फ मैंगलुरु का किला दोबारा हासिल कर लिया बल्कि कुन्दपुरा इलाके पर भी कब्ज़ा कर लिया. इन सबके बावजूद भी वे रानी अब्बक्का को नहीं हरा सके. इस दौरान रानी अब्बक्का के पति लक्षमप्पा ने उनसे बदला लेने के लिए पुर्तगालियों की खुफिया तरीके से मदद की. गद्दार लक्षमप्पा की सहायता से पुर्तगाली सेना ने उल्लाल पर फिर से हमला बोल दिया. इस मुश्किल वक्त में रानी अब्बक्का पुर्तगालियों के धूर विरोधी अहमदनगर के सुल्तान और कालीकट के राजा के साथ गठबंधन कर मोर्चे पर डटी रहीं.

वर्ष 1570 में कालीकट के राजा के सेनापति ने रानी अब्बक्का की ओर से लड़ाई लड़ी और मैंगलुरु में पुर्तगालियों का किला तबाह कर दिया. परंतु, वहाँ से लौटते समय लक्षमप्पा के धोखे के चलते कालीकट का सेनापति पुर्तगालियों के हाथों मारा गया और रानी को कैद कर लिया गया. लेकिन, ऐसा कहा जाता है कि कैद में भी रानी ने जंग जारी रखी और लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुई.

उनके प्रभावशाली व करिश्माई व्यक्ति:त्व का ही परिणाम है कि आज भी लोक कथाओं और लोकगीतों में उनकी कहानियाँ सुनाई जाती है. कर्नाटक की पारंपरिक नाट्य शैली यक्षगान के ज़रिए भी रानी अब्बक्का की बहादुरी के किस्सों का बखान किया जाता है. स्थानीय पारंपरिक नृत्य शैली 'भूतकोला' के द्वारा भी रानी अब्बक्का को प्रजा हितैषी व इंसाफ की देवी के रूप में वर्णित किया जाता है.

आज भी रानी अब्बक्का देवी की याद में उनके गृह नगर उल्लाल में प्रति वर्ष 'वीर रानी अब्बक्का उत्सव' मनाया जाता है. इस उत्सव में क्षेत्र की प्रतिष्ठित महिलाओं को 'वीर रानी अब्बक्का प्रशस्ति' पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है. उनके सम्मान में वर्ष 2009 में भारतीय तटरक्षक बल के एक गश्ती पोत को रानी अब्बक्का नाम दिया गया.

रानी अब्बक्का जैसी महिला शासकों और वीरांगनाओं की कहानियां भी हमारे इतिहास की किताबों में एक अच्छी जगह की हक़दार हैं. ताकि 'रानी' शब्द सुनते ही सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई या रानी दुर्गावती ही नहीं बल्कि रानी अब्बक्का चौटा का नाम भी हमारे ज़ेहन में आएं, जिनकी कहानी फ़िलहाल इतिहास के पन्नों पर भी धुंधली हो चुकी हैं.

- दिव्या के.,
क्षे. म. प्र. का., बेंगलूरु

Singanalluru Puttaswamaiah Muthuraj - Dr. Rajkumar

Singanalluru Puttaswamaiah Muthuraj (24 April 1929 - 12 April 2006), better known by his stage name Dr. Rajkumar, was an Indian film actor and playback singer in Kannada cinema. Widely acclaimed as one of the greatest actors in the history of Indian cinema and a versatile actor, he is considered a cultural icon and holds a matinée idol status in the Kannada diaspora, among whom he is popularly adulated as Nata Saarvabhouma (emperor of actors), Bangarada Manushya (man of gold), Vara Nata (gifted actor), Gaana Gandharva (God of singing), Rasikara Raja (king of romance), Kannada Kanteerava and Rajanna / Annavru (elder brother, Raj).He was honoured with the Padma Bhushan in 1983 and also received several national and state awards. He is the only lead actor to win a National Award for singing. His films have been remade more than 50 times in various languages-33 movies have been remade 55 times in 7 languages. On the Centenary of Indian cinema in April 2013, Forbes included Rajkumar's performance in the film Bangaarada Manushya on its list of 25 Greatest Acting Performances of Indian Cinema. Upon his death, The New York Times had described him as one of India's most popular movie stars.

Rajkumar entered the film industry after his long stint as a dramatist with Gubbi Veeranna's Gubbi Drama Company, which he joined at the age of eight. He went on to work in over 205 films essaying a variety of roles and excelling in portraying mythological and historical characters in films such as Bhakta Kanakadasa (1960), Ranadheera Kanteerava (1960), Satya Harishchandra (1965), Immadi Pulikeshi (1967), Sri Krishnadevaraya (1970), Bhakta Kumbara (1974), Mayura (1975), Babruvahana (1977) and Bhakta Prahlada (1983).

Rajkumar made movies against perceived social evils throughout his career - right from his first movie till the last movie. His debut movie Bedara Kannappa (1954) spoke about social discrimination. It was observed that after 15 years into his career, in the mid-sixties, when new young filmmakers were searching for actors who were less theatrical, Rajkumar had to undergo a transformation in his acting style and succeeded in proving that he could handle roles which were subtle, mellow and soft without the need for theatrical histrionics. He went on to be known for portraying versatile roles with elan. He was also praised for his ability to integrate the virtues of an actor with the power of a superstar without letting one erase the other by acting as a gulf between the mainstream popular movies and the artistic cinemas. When Rajkumar completed 200 movies in lead roles in Kannada films, P. Lankesh edited a special issue of Lankesh Patrike in 1988 titled Innooru Chitragala Raja dedicating to him. Rajkumar trained in classical music when he was with Gubbi Veeranna's theatre troupe. Rajkumar has been credited for having sung across various genres and each rendition according to the mood of the scene in the film. In later years, he lent his voice to a few actors and sang background solos. Apart from performing in about 75 musical nights, he has sung 300 movie songs and about 200 folk and devotional songs - the proceeds of which were given away to charity. Rajkumar was known for being a highly disciplined man in both his personal and professional lives.

At the age of 24, Rajkumar married his 14-year-old cousin, Parvathamma, on 25 June 1953 in Nanjangud. They had five children; sons Shiva, Raghavendra and Puneeth, and daughters Lakshmi and Poornima. Having lived a 'hand to mouth existence' after marriage in a joint family that included 24 children in Madras, the family moved to Bangalore in 1972, after which Rajkumar began getting multiple film offers.

Abduction

On 30 July 2000, Rajkumar, his son-in-law Govindaraju and two others were abducted by Veerappan from the actor's palatial house at Gajanur. Veerappan demanded the release of his gang members who were being held in jail under a defunct anti-terrorism law. After a total of 108 days in captivity, Rajkumar was released unharmed on 15 November 2000.

Death

On 12 April 2006, Rajkumar. died from cardiac arrest. His death occurred 12 days before his 77th birthday. His eyes were donated to two visually impaired persons the same day.

Rajkumar's death triggered an outpouring of grief. There was major shutdown in the city of Bengaluru. An unofficial bandh was observed. Several people attempted suicide after hearing the news; most of them were rescued. The funeral cortège started from Sree Kanteerava Stadium to Kanteerava Studios a few minutes before 12:30 pm (IST), a distance of 14 kilometers the next day Around two million people followed his remains.

Rajkumar was awarded numerous State, National and International awards. He was a recipient of the Padma Bhushan, a doctorate from Mysore University and the Karnataka Ratna, the highest civilian honour of the State of Karnataka, recognising him as a Jewel of Karnataka State.

In 1985, he was honored with the Kentucky Colonel award by the then-governor of Kentucky, United States. He is the only Indian actor to have received this prestigious award. In 1995, the Dadasaheb Phalke Award for his outstanding contribution to the Kannada film industry.

Dr. RAJKUMAR had a profound impact on regional cinema in general and Kannada cine specifically. He is immortal in the hearts of millions of fans. His contributions continue to inspire the masses and the classes alike……

- Joy Ghosh
STC Bhopal

PRIDE OF UNION BANK
Padmshri Prakash Padukone

An All-England Champion, a Commonwealth Games gold-medalist and multiple-time national Champion, Prakash Padukone was undoubtedly the first superstar of Indian Badminton. Known for his graceful movement on the badminton court, he was considered one of the leading singles players in the world in the late 1970s and 1980s. Born on 10 June 1955 in Bengaluru, Prakash grew up at a time when India was not too enthusiastic about badminton. In fact, South India was more obsessed with a sport called ball badminton, which is similar to volleyball.

Prakash Padukone was introduced to "shuttle badminton" by his father Ramesh who played the sport as a recreational activity with his friends. Later on he went on to become a key member of the Karnataka state first association of badminton. In 1979 Prakash won his first major international title that of the Commonwealth Games. Prakash was ranked world no 1 in 1980. The same year he went on to became the first Indian to win the prestigious All England Open Badminton championship. He also won the London Master's open, Denmark open and Swedish open in his glittering career. He was awarded the Arjuna award in 1972 and the Padmashri in 1982 by the Government of India. In the year 1975 he joined UNION BANK OF INDIA as a probationary officer. At the age of 25 he was one of the youngest senior officers after two back to back promotions. He continued with Union Bank till late 1986 before quitting for focusing more on the game and coaching.

- Sujata Sanam
FGMO, Bengaluru

बधाई

कुमारी एनबीएस गीतिका, सुपुत्री श्रीमती एनवीएनआर अन्नपूर्णा, क्षे.म.प्र.का., विशाखापट्टनम को संगीत की क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रतिभा प्रदर्शन करने के लिए दि. 11.04.21 को विजयवाड़ा के स्थानिक सांस्कृतिक संस्थाएँ 'उगादि प्रतिभा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. श्रीमती एन लक्ष्मी पार्वती, अध्यक्ष, तेलुगू अकादमी; श्री मंडली बुद्ध प्रसाद पूर्व सभापति, आंध्र प्रदेश शासन सभा एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के अध्यक्ष से सम्मान प्राप्त करते हुए कुमारी गीतिका.

सुश्री मनदीप कौर पुरी, सुपुत्री श्री लखिन्दर सिंह पुरी, सहायक महाप्रबंधक (पीआरओ), क्षे.म.प्र.का., दिल्ली ने सीबीएसई कक्षा 12 वीं की परीक्षा में 98.8% अंक प्राप्त किए.

सुश्री सांभवी, सुपुत्री श्री पंकज कुमार मुख्य प्रबन्धक, जमशेदपुर शाखा, क्षे.का.राँची ने आईएससीई की कक्षा 12 वीं की परीक्षा में 91.20% अंक प्राप्त किए.

Karnataka with Indian Independence Struggle

When one speaks of freedom, one is sure to remember Karnataka rulers namely, Kadambas, Hoyasals, Chalukyas of Badami, Vijayanagar kings for their love and dedication for freedom. Every year, we celebrate Independence Day to express our deepest gratitude to all the freedom fighters who fought for the country's freedom. Karnataka has been known for many years as a land of brave people. When the British power slowly spread all over India, the people of Karnataka could not tolerate the Imposition of a foreign rule. So many decisive battles were waged by brave people of Karnataka like Rani Channamma of Kittur, Sangolli Rayanna of Bailhongal, Bheema Rao of Mundaragi and many others. Karnataka has played a vital role during the freedom struggle in India.

The Bedas of Halagali fought under the leadership of Balaji Nimbalkar against Britishers. They had great encouragement from Diwakar Dixit son of Chidambara Dixit of Murgod, but Nimbalkar was martyred in the struggle.

Mysore Dynasty: A very high level of resistance was put up by Haider and Tipu to the British to defend Mysore. Haider had a short-lived life, Tipu, the son of Haider, continued the fight with the British. In 1792, he fought with the British in order to drive them out of the country but Tipu could not succeed in his attempt. In1799, in the Fourth Mysore War, Tipu died fighting with great valor and courage. Thus, the father and the son protested and revolted against the Britishers.

Rani Channamma: Rani Channamma was the queen of Kittur. She was the first Indian woman who rose against the British well before the uprising of 1857. The credit of hoisting the freedom flag goes to Rani Channamma. The courageous spirited warriors like Sardar Gurusiddappa, Balappa, Sangolli Rayanna, Bicchugatti Chanabasappa, Gajaveer and others also helped Rani Channamma to fight against the British.

The Indian National Congress: The Indian National Congress came into existence in 1885. That time, northern Karnataka then comprising of districts of Belgaum, Bijapur, Dharwad and Karwar was part of Bombay province. People of Karnataka were inspired by the speeches of Bal Gangadhara Tilak published in his paper "Kesari".

The Home Rule Movement was also started by Bal Gangadhara Tilak. Foreign goods were publicly burnt down in Belgaum, Navalgund, Hanagal and Dhamad and in other places. Many of the notable Kannadigas such as Alur Venkat Rao, Mudaveedu Krishna Rao, Sakri Balacharya and others travelled in different parts of Karnataka and encouraged the people to participate in the Swadeshi Movement.

The Vangbangh (Partition of Bengal) Movement spread rapidly throughout India due to the division of Bengal in 1905. Then Tilak visited Karnataka and put forth his four principles which were: 'Swadeshi Prasar', 'Videshi Bahiskar', 'National Education' and 'Demand for Swaraj'. Deshpande Gangadhar Rao of Belgaum, Koujalagi Shrinivas Rao of Bijapur, worked as his trustworthy followers. Gangadhar Rao Deshpande is also known as 'Karnataka Shimha' (Lion of Karnataka) because of his impacting lectures.

Govindrao Yalagi of Belgaum was the main leader of a revolutionary organization established in Karnataka. The training in arms and ammunitions was imparted to the youth in the Mazzini Club which was established by Yalagi. The revolutionary center in Goa had contact with the revolutionaries like Veer Sawarkar, Senapati Bapat of Maharashtra, Barindra Ghosh (the brother of Yogi Aurobindo Ghosh of Bengal).

Impact of Gandhiji in Karnataka: The influence of Gandhiji in the freedom movement of Karnataka drastically changed the scene in the Indian National Movement. Gandhiji travelled throughout Karnataka in 1920 and propagated the Non-cooperation movement and also collected money for Tilak's Swaraj Fund. The Kannadigas contributed whole heartedly.

Ankola Satyagraha: In April 1930, Gandhiji started the Dandi March as a tax resistance campaign against the British salt monopoly. This march included many volunteers from Hubli and Belgaum, where Mylar Mahadevappa of Motebennur also took part. As a result of tax on salt, the people at Ankola broke the rule and prepared salt. The leaders, involved, were Mylar Mahadevappa, N.S. Hardikar, R.R. Diwakar, Talacherikar, Ramakrishna Kamath, Kamad Sadashivrao and others.

Civil Disobedience movement: The people of Karnataka participated in Civil Disobedience Movement which was started by Gandhiji in the year 1930 and thus the Karnataka State was being called by the name 'Gandhi Province'. Deshpande Ganga Dhar Rao was the first person of Dandi Satyagraha (6th April) to be arrested in the whole country.

Quit India movement: In 1942, Gandhiji was arrested because of the Quit India Movement. At the same time, this movement in Bombay Karnataka area was started

under the leadership of Chanabasappa Ambli of Bijapur, Ranganath Diwakar, D.P. Karmarkar and others. This movement was very violent in Bijapur, Dharwad, Belgaum, Bangalore and Mysore Districts. Thousands of people were arrested and imprisoned and hundreds were gunned down by the British.

Kodagu movement: The Kodagu Zamindar Association leaders were P.T. Kushalappa, Nidte Subbannayya, I.P. Belliyappa, C.N. Venkatayya, K.C. Kururribayya. This Association also joined the National Movement. The national leaders of Karnataka, like Gangadharrao Deshpande, Hanumanthrao Koujalagi, Karnad Sadashivarao, R.R. Diwakar, Dr.N.S. Hardikar had contacts with leaders of this Zamindar Association. These joined the Civil Disobedience Movement in 1930. In 1932, students and farmers participated in this movement and were jailed. The National paper called 'Kodagu', weekly, was banned by the British.

The Issur tragedy in Shimoga District: One incident, that happened in Issur, in the Mysore princely state, was very significant one during the Quit India Movement. The people of Issur joined the Movement and responded to the call Do or Die Mahatma Gandhi. The youth wore the Gandhi caps hoisted the tricolour flag on the Veerabhadreshwar temple. They also displayed placards, warning irresponsible officers of the government not to enter the village. Unarmed people were punished brutally by the police. On 9th August 1944, the underground leaders namely, Diwakar Rangarao, Bidari Vamanrao were also arrested. The movement continued for two years.

Karnad Sadashiva Rao: Karnad Sadashiva Rao from Mangalore founded Mahila Sabha to help widows and poor women. He is known to be the first one from Karnataka to volunteer for Gandhi's Satyagraha movement.

K.G Gokhale: Mr. Gokhale from Belgaum was an eminent journalist known for his political writing. He played a Pivotal role in inspiring people to contribute to the freedom movement through his inspiring and provoking articles.

N.S Hardikar: N.S. Hardikar from Dharwad was a graduate in public health who played an eminent role in the freedom movement of Hubli. Hardikar and his Hubli Seva Mandal gained national prominence after they refused to apologize to the British authorities to gain a commutation in their prison sentences.

Aluru Venkata Rao: Aluru Venkata Rao from Bijapur is known for the unification of Karnataka. He was an eminent historian, writer, and an Indian revolutionary. He is remembered for his efforts to bring together Kannada speaking people from Mysuru, Bombay Presidency, and the Nizam's Hyderabad.

Hardekar Mandapam: Hardekar Manjappa is widely known as the Gandhi of Karnataka. He along with his brother were involved in the Swadeshi movement. with over a thousand lectures on Satyagraha, patriotism, and nationalism.

R. S Hukkerikar: He started a newspaper called 'Dharamveer' to ignite the spirit of freedom among the people. His contributions to the unification of Karnataka is immense. Also, he was one of the pioneers of the no-tax movement in Karnataka.

Srinivasa Rau: Srinivasa Rau was a hardcore Gandhian who rigorously participated in the Indian Freedom movement. He provided shelter to leaders like Kamala Devi Chattopadhyay, R.R Diwakar, and others during Quit India movement.

Gangadhara Rao Deshpande: Mr. Deshpande was very instrumental in holding the 1924 congress session in Belgaum. It was a historic session which witnessed major decisions taken by Congress leaders.

Umabai: Umabai was a brave woman who simply came forward to sacrifice her life for Swadeshi movement and Satyagraha. During Quit India movement, many underground workers appeared at her Hubli house seeking food and financial help.

During the course of Swadeshi Movement in Bengal, Bal Gangadhar Tilak, like a victorious general, undertook a propaganda tour in 1906. Tilak covered the North Karnataka and delivered inflammatory speeches at Belgaum, Dharwad, Gurla Hosur, Pachchapur and Bijapur on boycott, Swadeshi, Swaraj and national education.

The State of Karnataka played a significant role in encouraging native press which fastened the cause of nationalism. Journalists like Alur Venkatrao, Hardekar Manjappa, Jayarao Deshpande, Gangadhar Rao Deshpande and others used Dharwad, Belgaum, Mangalore, Bijapur and Bangalore as centers of their activities and carried the nationalism through their papers. Eminent Marathi papers like Kesari, Kal, Navkal and Chitramayajagat were highly circulated in the northern Karnataka. During the Swadeshi movement the role played by Lokamanya Tilak was very significant, who was the guiding force of the time.

It was a time when India was under the brutal rule of the British. Time was so blatant that fighting for freedom had become a sheer necessity. People of Karnataka played an important role in the struggle for freedom. The 200-year long slavery and the immense suffering came to an end when India got its independence on 15th August 1947.

- Vineet Bhardwaj
STC, Bengaluru

KARNATAKA'S CONTRIBUTION TO NATION'S DEFENCE

Karnataka State has the unique distinction of being a destination for many defence establishments / organisations in its territory.

KARWAR (formely Carwar) is a city, taluk and administrative centre of Uttara Kannada district of Karnataka, which lies on the west coast of southern India at the mouth of the Kali river. INS Kadamba is an Indian Navy base located near Karwar in Karnataka. and is currently the third largest Indian Naval base and is expected to become the largest naval base in eastern hemisphere after completion of expansion phase IIB.

INS chapel (K94) was a chamak class missile boat of the Indian Navy which was commissioned on 04 Nov 1976 and decommissioned on 05 May 2005. The boat is now a museum ship on Rabindranath Tagore beach in Karwar. Mannequins dressed-up as captains, sailors, doctors etc are there inside the museum. Replicas of the missiles are also displayed inside the warship museum.

MYSURU has famous Central **Food Technological Research Institute (CFTRI)**. It is a constituent laboratory of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR). The research conducted is on food engineering, food biotechnology, microbiology, grain sciences, Biochemistry etc. It holds several patents and has published findings in reputed journals. India is the world's second largest food grain, fruit and vegetable producer and the institute is engaged in research in the production and handling of grains, pulses, oilseeds, along with spices, fruits, vegetables, meat, fish and poultry. It also has been immensely helping the farming community.

The **Defence Food Research Laboratory (DFRL)** is an Indian Defence Laboratory of the Defence Research Development Organisation (DRDO). Located in Mysuru, Karnataka, it conducts research and development of technologies and products in the area of food science and technology to cater to the varied food challenges for the Indian Armed Forces.

DFRL is organised under the life sciences Directorate of DRDO. Its Major Role includes Research and development in food science and technology. Production and supply of processed foods on a limited scale to the Indian Armed Forces and other bodies for national missions. Development of packed rations, and their quality assurance methods are done. Preservation and packaging methods for long distance transportation of perishable products and Studies in the development of convenience foods, preservation of foods, food safety, food packaging and studies in the spoilage of foods and safety of processed foods.

Air Force Selection Board – It is one of the 3 Selection boards in the country where the officers for the Indian Air Force get selected to serve the nation. The selection board is located in Mysuru. Various categories of officers like Pilots,

Ground Officers, Technical officers are selected in this board, where graduates come from across the nation.

BELGAUM officially known as Belagavi is a city in the Indian State of Karnataka located in its northern part along the western ghats. It is the administrative headquarters of the eponymous Belgaum Division and Belgaum district. Belgaum's salubrious climate, proximity to the coast and strategic position near Portuguese Goa commended it to the British as a suitable location for an army training centre and cantonment, which it continues to be today for the IAF along with an air force station of the IAF.

Belgaum houses the Maratha Light Infantry regimental centre (MLIRC). It also houses the commando training wing

which is a part of the infantry school, The commando course at Belgaum is mandatory for all infantry officers. Officers of other arms and services and even some foreign officers undertake the course. **Rashtriya Military School Belgaum** is one of the five military schools in India. Entrance tests for the military schools are held each year in December. About 70,000 to 80,000 students attend this test and around 350 students get selected. The schools are run by the Ministry of Defence for the Indian Government.

BENGALURU is the capital and the largest city of the Indian state of Karnataka. It is located in southern India of the Deccan Plateau. It is known for its pleasant climate throughout the year. The helicopters and other fighter Aircrafts technicians / Engineers are being trained in Bengaluru before they are deployed in the field across the nation.

HAL - **Hindustan Aeronautics Limited** (HAL) is an Indian state owned aerospace and defence company, headquarter in Bangalore. Established on 23 Dec 1940, HAL is one of the oldest and largest aerospace and defence manufactures in the world today. Over the years HAL has designed and developed several platforms like HF-24 Marut, The Dhruv, the LUH and the LCH. HAL also manufactures indigenous products with technology transferred from the DRDO in association with BEL for its avionics and Indian Ordinance factories for the onboard weapons systems and ammunitions.

ISRO - Indian Space Research Organisation The Indian National Committee for space Research (INCOSPAR) was established by Jawaharlal Nehru under the Department of Atomic Energy (DEA) in 1962, on the urging of Scientist Vikram Sarabhia recognising the need in space research, INCOPAR grew and became ISRO in 1969 within DAE. 1972, the Govt of India had set up a space commission and the Dept of Space (DOS) bringing ISRO under DOS. The establishment of ISRO thus institutionalised space research activities in India. ISRO built its first satellite Aryabhata which was launched by the Soviet Union on 19 Apr 1975.

The Indian Space Research Organisation (ISRO) is the national space agency of India headquartered in Bengaluru. It operates under the department of space (DOS) which is directly overseen by the Prime Minister of India, while chairman of ISRO acts as executive of DOS as well. It is one of the six government space agencies in the world which possesses full launch capabilities, deploys cryogenic engines, launches extraterrestrial mission and operates large fleets of artificial satellites. Apart from this there are many more training institutes housed in Karnataka for Defence forces i.e. for Indian Air Force, Army and Navy.

- Syed Fazalur Rehaman
RO Bengaluru (South)

लिंगायत समुदाय एवं संत बसवन्ना

'लिंगायत' शब्द आपने अनेक बार जरूर सुना होगा. यह एक समुदाय विशेष के लिए प्रयोग किया जाता है, जो कर्नाटक की आबादी का 18 फीसदी है और पास के राज्यों जैसे महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में भी इनकी अच्छी ख़ासी आबादी है. कर्नाटक, जिसे 'मठों का देश' भी कहा जाता है, यहाँ के 30 जिलों में छोटे-बड़े मिलाकर कुल 900 मठ हैं. इनमें से अधिकांश मठ लिंगायत समुदाय से हैं. लिंगायत कहाँ से आए, कब आए और कैसे आए? यह सवाल हमें इतिहास में 12वीं शताब्दी में लेकर जाता है. लिंगायत और वीरशैव कर्नाटक के दो बड़े समुदाय हैं. इन दोनों समुदायों का जन्म 12वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलन के फलस्वरूप हुआ. इस आंदोलन का नेतृत्व प्रसिद्ध दार्शनिक एवं समाज सुधारक 'बसवन्ना' ने किया था. लिंगायत समुदाय भगवान शिव जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चराचर जगत के उत्पति के कारक हैं उनकी स्तुति, अराधना करता है. लिंगायत शब्द की उत्पति कन्नड शब्द 'लिंगवंत' तथा संस्कृत के 'लिंग' शब्द एवं प्रत्यय 'आयत' से बना है. ऐतिहासिक साहित्यों में इन्हें लिंगवंत, लिंगडी, लिंगधारी, शिवभक्त, वीरशैव या विरशैव कहा गया है. 'लिंगायत' शब्द का सामान्य प्रयोग ब्रिटिश राज के दौरान किया गया था.

11वीं शताब्दी का 'शरणा आंदोलन' वीरशैव मत के उदय का प्रारम्भ माना जाता है. इस आंदोलन का आरंभ ऐसे समय में हुआ था जब कालामुख शैव मत का प्रभुत्व था, जो कि शासक वर्ग समर्थित था और जिनका मठों पर आधिपत्य था. देश में प्राचीन काल से हिंदुओं के पाँच संप्रदाय माने जाते हैं जिसकी गवाही वेद और पुराण भी देते हैं. ये पाँच संप्रदाय शिव को इष्ट मानने वाले शैव, विष्णु को इष्ट मानने वाले वैष्णव, काली-दुर्गा को आराध्य मानने वाले शाक्त, सिर्फ वेदों का अनुसरण करने वाले वैदिक और सभी में आस्था रखने वाले गृहस्थ स्मार्त हैं. इन पाँच संप्रदायों के कई उप संप्रदाय हैं, जिनमें से एक है वीरशैव. लिंगायत संप्रदाय इसी वीरशैव संप्रदाय से जुड़ा माना जाता है. लिंगायत समुदाय को दक्षिण भारत में 'जंगम' भी कहा जाता है. विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत 15 से 17वीं शताब्दी के दौरान लिंगायत वाद का पुनरुत्थान माना जाता है और विजयनगर साम्राज्य की सफलता में लिंगायत वाद को प्रमुख कारण माना जाता है.

इस समुदाय के लोग मुख्यत: महात्मा बसवन्ना की शिक्षा के अनुगामी हैं. इस समुदाय के अनुयायी अपने शरीर पर शिवलिंग की तरह इष्टलिंग धारण करते हैं, इसलिए इन्हें लिंगायत कहा गया. पेड़ को जैसे फल, फूल लगते हैं उसी प्रकार भगवान शिव से ही पूरे विश्व का निर्माण हुआ है, ऐसा इस समुदाय के लोग मानते हैं. 'ॐ नम: शिवाय' यह एकमेव मंत्र लिंगायत संप्रदाय ने स्वीकार किया है.

बसवन्ना, जिन्हें संत बसवेश्वर, महात्मा बसवन्ना के नाम से जाना जाता है, का जन्म 1131 ईसवी में संयुक्त बीजापुर जिले में स्थित बागेवाड़ी में हुआ था. बसवन्ना स्वयं एक ब्रहमण परिवार में जन्में थे परंतु उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व व्यवस्था का विरोध किया. 12वीं सदी के उस दौर में ऊंच-नीच और भेदभाव समाज में बहुत फैले थे, जिसे बसवन्ना ने अपनी छोटी उम्र में ही पहचान कर 8 साल की उम्र में अपना जनेऊ

त्याग दिया था. वे जन्म आधारित व्यवस्था के बजाय कर्म आधारित व्यवस्था में विश्वास करते थे. बसवन्ना कर्नाटक राज्य के जैन राजा बिज्जल के प्रधान मंत्री थे. वे योगी महात्मा ही नहीं थे बल्कि कर्मठ संगठनकर्ता भी थे, उनका लक्ष्य ऐसा आध्यात्मिक समाज बनाना था जिसमें जाति, धर्म या स्त्री-पुरुष का भेदभाव न हो. वे कर्मकांड संबंधी आडंबर के विरोधी थे और मानसिक पवित्रता एवं भक्ति की सच्चाई पर बल देते थे. संत के रूप में सुधारक बसवन्ना ने हिंदुओं में जाति व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन छेड़ा. उन्होंने मूर्ति पुजा को नहीं माना और कहा कि यह शरीर ही मंदिर है, तुम्हारे जो भी इष्ट हैं, वे शरीर में रहते हैं और इसी प्रतीक स्वरूप में लिंगायत समुदाय के लोग एक तरह से शैव मत से होने के बावजूद शिव की पूजा नहीं करते हैं. बसवन्ना ने अपनी कविताओं, जिसे 'वचन' भी कहा जाता है, के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाई. उन्होंने लिंग, सामाजिक विभेद, जातिवाद के साथ ही साथ पवित्र धागा पहनने की परंपरा को भी बदल दिया एवं इसके स्थान पर लिंग, जात, जन्म के विभेद के बिना सभी लोगों द्वारा 'इष्टलिंग' गले में धारण करने को प्रोत्साहित किया. महात्मा बासवेश्वर के अनुयायियों में बहुत से हरिजन थे और उन्होंनें अंतर्जातीय विवाह को भी बढ़ावा दिया. आज भी लिंगायत समुदाय के अंतर्गत 99 जाति के लोग शामिल हैं जिनमें से आधे से ज्यादा दलित या पिछड़ी जतियों से हैं.

लिंगायत परंपरा को मानने वाले पहले हिन्दू वैदिक धर्म का ही पालन करते थे परंतु इसकी कुरीतियों को मिटाने के लिए उन्होनें इस नए संप्रदाय की स्थापना की थी. इस परंपरा को मानने वाले लोग न तो वेदों में विश्वास रखते हैं और ना ही मूर्ति पूजा में, ये हिन्दू धर्म के भगवान शिव की पूजा नहीं करते लेकिन भगवान को उचित आकार 'इष्टलिंग' के रूप में पूजा करते हैं. इष्टलिंग अंडे के आकार की गेंदनुमा आकृति होती है जिसे धागे से अपने शरीर पर बांधते हैं. लिंगायत इष्टलिंग को आंतरिक चेतना का प्रतीक मानते हैं, निराकार परमात्मा को मानव या प्राणियों के आकार में कल्पित न करके विश्व के आकार में इष्टलिंग की रचना प्रदान करते हैं. लिंगायत पुर्नजन्म में भी विश्वास नहीं करते हैं, इनका मानना है कि एक ही जीवन में अपने कर्मों से जीवन को स्वर्ग या नरक बना सकते हैं. इस परंपरा में अंतिम संस्कार की प्रक्रिया भी अलग है, इस प्रक्रिया में शवों को दफनाया जाता है. लिंगायत मत को मानने वाले शाकाहारी होते हैं एवं मदिरा पान करना उनके लिए वर्जित है.

लिंगायत मत में अनुपालन किए जाने वाले पाँच सूत्रों का उल्लेख पंचाक्षर में किया गया है:

लिंगाचार : प्रतिदिन एक से तीन बार अपने इष्टलिंग की पूजा करना.

सदाचार : इसके अंतर्गत बसवन्ना द्वारा सात नियम बताए गए हैं: चोरी नहीं करो, किसी को न मारो, झूठ मत बोलो, स्वयं की प्रशंसा न करो, दूसरे की आलोचना न करो, क्रोध त्यागो, दूसरों के प्रति सहिष्णु बनो

शिवाचार : शिव को सर्वोच्च परमात्मा मानते हुए सभी मानव जाति को एक समान मानो

भृत्याचार : सभी जीवों के प्रति दया रखो

गणाचार : समाज एवं इसके सिद्धांतों की रक्षा करो

गुरु, लिंग, जंगम, पदोड़का, प्रसाद, विभूति, रुद्राक्ष, मंत्र आदि को अष्टवर्ण माना जाता है जो अनुयायियों का बाह्य आडंबर एवं वैश्विक जुड़ाव से रक्षा करते हैं. इनके भगवान शिव पर आधारित अपने कई पवित्र स्थल, मंदिर, मठ एवं धार्मिक ग्रंथ हैं. लिंगायत मत के अनुसार मानव शरीर एक मंदिर है, परंतु इसके बावजूद दक्षिण भारतीय शैली में परंपरागत शिव मंदिर और सामाजिक हॉल का निर्माण लिंगायत समुदाय द्वारा किया जाता है. इन मंदिरों में ब्राह्मण पुजारी के स्थान पर लिंगायत पुजारी को नियुक्त किया जाता है. कर्नाटक के कुछ भागों में ये मंदिर लिंगायत संतों के समाधि स्थल हैं, जैसे बेलगावी का वीरभद्र मंदिर - यह लिंगायतों का प्रमुख तीर्थस्थल है. लिंगायत समुदाय के लोग अपनी परंपरा के प्रमुख गुरुवों की जयंती के साथ ही साथ हिन्दू त्योहारों जैसे मकर संक्रांति, युगादि, नगर पंचमी, रक्षाबंधन, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दीपावली, सिद्धरामेश्वर जयंती, अल्लामप्रभु जयंती, महा शिवरात्रि, बासव जयंती आदि पर्व मनाए जाते हैं. इनके पवित्र तीर्थस्थलों में कुडालसंगम, बासव कल्याण, बसवन्ना बागेवाड़ी, इंगलेश्वर, सोलापुर, श्रीशैलम, उलवी, एन्नेहोल आदि शामिल हैं.

इस समुदाय में कुछ लोग इसे हिन्दू धर्म में एक पंथ के रूप में मानते हैं परंतु कुछ लोग इसे हिन्दू धर्म से अलग धर्म मानते हैं. एक पंथ यह मानता है कि बसवन्ना ने जाति व्यवस्था और वैदिक परम्पराओं का विरोध किया था, उनके आंदोलन का आधार प्रचलित हिन्दू व्यवस्था के खिलाफ था. वे यह मानते हैं कि इष्ट लिंग और भगवान बसवेश्वर के बताए गए नियम हिन्दू धर्म से बिलकुल अलग हैं. दूसरा पंथ यह मानता है कि बसवन्ना का आंदोलन भक्ति आंदोलन की तरह था जिसका मकसद हिन्दू धर्म की राह से अलग होना नहीं था. आम मान्यता यह है कि वीरशैव और लिंगायत एक ही होते हैं लेकिन लिंगायत लोगों का मानना है कि वीरशैव का अस्तित्व समाज सुधारक बसवन्ना के उदय से पहले भी था और बसवन्ना ने वैदिक अनुष्ठान और परंपरा को नकारा था लेकिन वीरशैव वेदों का पालन करते हैं, शिव की पूजा करते हैं, शिव की मूर्ति की पूजा करते हैं इसलिए वे इस समुदाय से भिन्न हैं.

- अखिलेश कुमार सिंह
क्षे. म. प्र. का., वाराणसी

The Mysore Silk – Pride of Karnataka

Silk fabric, is known as 'Paat' in East India, Pattu in South India and Resham in North India.It is a natural fibre produced from the cocoons of mulberry silkworm via a process called Sericulture. Today, India is the world's second largest producer of silk and is also the largest consumer too. In 1710, the East India Company introduced a new variety of mulberry silkworm in Bengal.

In 1896, Sir J. N. Tata established a Silk Farm with a filature attached to it in the Japanese pattern, in Bangalore, with the help of Sri. K. Sheshadri Ayyar, the Diwan of Mysore. He was helped with technical expertise from a Japanese couple Mr and Mrs Odzou. Mr. Odzu trained Sri. V. M. Appadhorai Mudaliar and Sri. Lutchman Rao for a period of one year on this farm. It got its strongest boost in 1902 when Tata Silk Farm was established in Bangalore, Sericulture and silk production increased under Maharaja Krishnaraja Wodeyar IV who set up a silk manufacturing unit in Mysore and bought 32 power looms from Switzerland to weave Mysore silk sarees. This unit remains till today and is run by the Karnataka Silk Industries Corporation (KSIC), a public sector company. It is India's oldest silk manufacturing unit.

Karnataka is one of the largest mulberry silk producers in the country. Today, 9000 metric tons of silk are produced in Karnataka alone. Ramanagara near Mysore is well known for its sericulture, and is nicknamed as Silk Town. KSIC buys about 650 kilograms of cocoons from sericulture farmers per day, most of which they procure from here. The cocoons are transported to a factory called TNarasipura where they are sorted for quality. Once sorted and boiled, they are placed in semi-automatic machines, which reel fine threads of about 27 denier out of them. One cocoon can produce up to 900 meters of yarn, but once the yarn is

reeled, only about 50% of it passes quality control tests for weaving purposes. Most of the silk yarn is twisted several thousand times as this is what gives the final woven fabric a crepe texture.

The Mysore silk sarees manufactured here have become one of India's fastest selling and most demanded handloom products. The vibrance in colour, subtle work, the sarees have a smooth texture, minimalist design and rich feel which make it an eternal favourite for weddings and traditional ceremonies.

Mysore silk sarees are first woven and then dyed. The weavers use either Dobby looms, which require machines feeding patterns into them, or jacquard looms, which tend to be more labour-intensive. Once the fabric is woven, it undergoes a process called "degumming," which is what gives it its smooth texture. After degumming, the fabric is put into fabric-cutting machines which measure 5.5 meters of fabric for the length of each saree. Finally, the sarees are embellished with zari border. Since the sari zari contains 65% pure silver and 0.65% of gold, it is one of the most expensive silk sari in India. Sometimes motifs are embroidered on to the pallus like floral and mango butis.

Each Mysore silk saree has a unique code embroidered in a corner, which gives you: The history of the saree, Details about its manufacturing, The hours spent on it, The wages that the weavers received for the saree and

That is one of the most telling signs and the easiest way to spot an original from a fake.

Mysore silk sarees are also now manufactured in keeping with some of the style demands of buyers. For this purpose, KSIC employs NIFT graduates to innovate and design these sarees based on the trends.The government has patented Mysore silk, and as a result only silk sarees woven in Karnataka can be called by that name.

- K G Sridhar
STC Bengaluru

GADBAD IS NOT JUST GADBAD IN MANGALORE

What comes to our mind on hearing the word GADBAD? Is it mayhem or chaos or confusion. NO! It is the ice cream filled with layers of different flavoured ice creams, jelly and fresh cut fruits all in one tall tumbler tossed with nuts, sauce and choco syrup served with a long spoon.

There is a beautiful story behind the Gadbad Ice-cream. The story goes, a group of customers walked into a restaurant in Udupi, temple town on coastal Karnataka and asked for ice-cream. Seeing some of the flavours were out of stock, owner of the restaurant Mr. Mohandas Pai suggested to throw in all the flavours in one tub and garnish with nuts, jelly and syrup.

Mr. Pai was not aware at that time, that he was going to invent a unique famous ice-cream. He was taken a back when customers started repeatedly coming in for the same ice-cream which was prepared a in 'GADBAD' manner.

The ice cream combination which he served to those group of customers turned out to be a gold mine. On its success many ice-creams manufactures adopted different combinations and prepared signature Gadbad combinations of ice cream, jelly, fresh fruits and syrup. The ice cream which was prepared in "Gadi Bidi" (in Kannada "Gadi Bidi" means in a hurry burry) manner and later became famous as Gadbad ice cream.

The best GADBAD ice-cream can be had from Ideal ice cream parlour at Mangalore or iconic Diana restaurant at Udupi. The taste buds and nostrils still recur the taste and flavours of Gadbad even today.

Come and Visit Mangalore/ Udupi, twin cities of coastal Karnataka and enjoy the signature dish.

- Mahesha J
RO Mangalore

हमें गर्व है

लखनऊ में आयोजित उत्तर प्रदेश टेबल टेनिस संघ की वार्षिक सामान्य बैठक में हमारे बैंक की टेबल टेनिस खिलाडी तथा कबीरचौरा शाखा, वाराणसी में कार्यरत सुश्री सरिता विश्वनाथ गोकर्ण को वर्ष 2021-25 तक के लिए उत्तर प्रदेश टेबल टेनिस संघ में कार्यकारी कमेटी सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया.

क्षे.का., अमरावती के अंतर्गत अकोला शाखा के शाखा प्रबन्धक, श्री अतुल मोहोड़ को वित्तीय वर्ष 2020-21 में मुख्यमंत्री रोजगार निर्मिति कार्यक्रम के तहत दि. 09 जून 2021 को क्षेत्र निहित उद्योग को बढ़ावा देने के लिए जिल्हा उद्योग केंद्र, अकोला द्वारा सम्मानित किया गया.

Architecture of karnataka

Since the ancient times, architecture has stood as a representation of society, reflecting the values, successes, and eventual downfall of civilizations over time. At its roots, architecture exists to create a physical environment in which people live, and are also a part of our culture. It stands as a representation of how we see ourselves, as well as the world.

Karnataka has the advantage of a rich heritage, cosmopolitan culture and salubrious climate and is a multi-linguistic place. The fact that more than 65% of Bangalore's population consists of migrants from other states is an indication of its cultural diversity. So what makes it so attractive that Karnataka became an IT and Education hub? Well the answer lies in its enthralling historical structure that is the Architecture of Karnataka.

Karnataka is derived from the Kannada words "karu" and "nadu" meaning "elevated land". During the pre-historic times the hand-axe culture was prevalent in Karnataka. This culture was similar to the pre-historic culture of Africa. The use of iron was known to the inhabitants of Karnataka even before 1200 B.C. During the 4th and 3rd century BCE parts of Karnataka was under the rule of the Maurya and Nanda Empire of North India. After the fall of the Mauryan Empire the Satavahana dynasty came to power in Karnataka around 3 BCE. and they ruled over Karnataka for almost 300 years. Both Kannada and Telugu were found and evolved during their rule. The weakening of the Satavahana dynasty resulted in the Pallavas of Kanchi becoming the political power for a short period of time. After Pallavas,the Kadambas of Banavasi and the Gangas of Kolar came to rule.

The Kadambas were an ancient royal family of Karnataka, that ruled northern Karnataka and the present-day Uttara Kannada district. The Kadambas were the first indigenous dynasty to use Kannada, the language of the soil at an administrative level. The Kadambas are the originators of the Karnataka architecture. Most of their extant constructions are seen in Halasi and surrounding areas with the oldest one ascribed to King Mrigeshavarma.

Other notable temples in Halasi include the Hattikesavara temple with perforated screens by the doors, the Kallesvara temple with octagonal pillars, the Bhuvaraha Narasimha temple and the Ramesvara temple which shows a Sukhanasa projection (small tower) over the vestibule (Ardhamantapa) that connects the sanctum to the hall. All temples at Halasi have pillars with decorative capitals.

Western Ganga Dynasty ruled from Kolar and later moved their capital to Talakad. They laid a strong foundation for the development of Kannada literature and constructed

several monuments. The Gomateshwara statue in Shravanabelagola, constructed around 983 AD, is the tallest monolith statue in the world and is considered to be the most famous Ganga architecture.

Badami Chalukya Dynasty ruled from Vatapi and bringing the whole of Karnataka under a single rule. The Badami Chalukya architecture was a temple building idiom that evolved in the 5th – 8th centuries AD in the Malaprabha river basin. Badami cave temples have rock-cut halls with three basic features: pillared veranda, columned hall and a sanctum cut out deep into rock.

Early experiments in rock-cut halls were attempted in Aihole where they built three cave temples, one each in Vedic, Buddhist and Jaina styles.

during the of rule Rastrakuta Dynasty architecture flourished. The world famous Kailash Temple at Ellora was built by the Rastrakutas. The era of the Badami Chalukyas and Rastrakutas is considered as the “Age of Imperial Karnataka”.

Other important contributions are the Kashivishvanatha temple and the Jain Narayana temple at Pattadakal in modern Karnataka. The dominant style of the Rashtrakuta was called Dravidian style. Dravidian architecture is characterized by a pyramidal shape and numerous, elaborate friezes of deities.

The Hoysala Empire was a Kannadiga power originating from the Indian subcontinent that ruled most of Karnataka between the 10th and the 14th centuries. The Hoysala Empire was found by a legendary individual called Sala. who killed a tiger in order to rescue his master and thus the empire was named as Hoysala. The Hoysala era saw a significant development of art, architecture and religion in South India.

The world-famous Chennakesava Temple at Belur, the Hoysaleswara Temple at Halebidu, and the Kesava Temple at Somanathapura are examples of their sculptural exuberance. Even today there are more than a hundred temples scattered across Karnataka that were built by the Hoysalas.

Vijayanagara Dynasty the rulers of this empire enabled fine arts and literature to reach new heights in Kannada, Sanskrit, Tamil and Telugu. Carnatic music evolved during this era. Some of the best known remnants of Vijayanagara Empire’s architectural prowess can be seen at the Group of Monuments at Hampi, which is recognised as a UNESCO World Heritage Site. The Stone Chariot in Hampi is a brilliant example of the Vijayanagara style of architecture. Vijayanagar temples are surrounded by strong enclosures and characterized by ornate pillared kalyanamandapa tall rayagopurams built of wood, brick, and stucco in the Chola style; and adorned with life-sized figures of gods and goddesses.

Bahmani Empire was the first independent Islamic Kingdom in South India. The Bahmani Kingdom or Sultanate blended elements from Persia and India into their structures. These architectural features can be seen in the sultanate's mosques, forts, and madrasas. Bidar Fort was one of the prominent architectural structure with its seven huge arching gateways. Bidar Fort also had a special architectural feature called a karez which was Persian innovation that brought water to the fort from underground canals connected to springs.

- Eesha Vashishtha
Staff College Bengaluru

शुभमस्तु

श्री वी. वेंकटेश्वर राव
मुख्य महाप्रबंधक

श्री वि. मुथुकृष्णन
महाप्रबंधक

श्री डी बी धनुंजय राव
महाप्रबंधक

श्री निहार रंजन सामल
महाप्रबंधक

श्री वी. के. सिंहल
उप महाप्रबंधक

श्री आर. श्रीनिवासन
उप महाप्रबंधक

श्री वी मुरलीकृष्णा राव
उप महाप्रबंधक

श्री दिलीप कुमार रथ
उप महाप्रबंधक

श्री एम. वरदराजन
उप महाप्रबंधक

श्री एम. श्रीनिवास
उप महाप्रबंधक

श्री के. वेणु गोपाल
उप महाप्रबंधक

श्री मारुती एच प्रसाद
उप महाप्रबंधक

श्री टी. दीनदयाल
उप महाप्रबंधक

श्री के. वी. एस. एस. प्रसाद
उप महाप्रबंधक

श्री विवेकानन्दन ए. आर.
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं

YOGA- A Key to Success

Our country has emerged itself as a global market place, commercial center and a business hub, to maintain the economic growth at peak level. The hectic lifestyle and incessant stress levels has led to deteriorating health conditions envisaging major ailments like blood pressure, heart problems, diabetes etc. which are no more the rich man's diseases in the present day scenario.

The Backdrop-

With the technology upgradation in full swing in almost all the banks to sustain level performance and to step up increase growth in all parameters and to compete with peer banks in the industry it is the compelling order of the day necessitating extended business hours, long working hours, sustained maintenance of product and services, alternate delivery channels round the clock working to ensure customer service designed to ensure demand and supply channels.

As a result, one has to reluctantly opt for instant avoidable junk foods at the desks, at irregular intervals leading to physical and mental health issues, like stress, tension, and anxiety and life style disorders.

Fitness is the key-

Gone are the days when people used to solely depend on walking and exercise, for their overall health. Walking alone is no longer an elixir to the present day complex health issues. Exercise, walking acts as a prelude to yoga. it is neither a rich man's property nor a poor man's night mare.

An insight into yoga-

Through yoga, one can ensure not only physical health but also mental health with calmness of mind for sustained performance at the work place, in all situations there are specific yogasanas to suit all types of health issue, designed to take care of all organs of human body. Proper yogasana combine with deep breathing ensures blood circulation all over the body. One need not necessarily depend on yoga centers/ institutes/academies, with the reputed regional/ national level TV channels, airing yoga programs, to reach out to all age groups Thus, yoga coupled with pranayama and meditation is the order of the day

Yoga Day-

Starting from the year 2015, June 21 is being celebrated as yoga day globally. To rededicate ourselves into ensuring a 'healthy world'. Let resolve to devote at least half hour to one hour daily, in our own interest and wellbeing thereby embracing yoga a way of life, to take our mother institution 'Union bank of India' to greater heights in times to come.

- G. Ashwath Kumar
Retired, Bengaluru

चिंगारी

"दादी, यह क्या है?" सेतु दिमाग चाट रहा था. आँसू पोंछते हुए दादी बोली, "चेक है."

"वह क्या होता है ?"

दादी गुस्से में फट पड़ी, "तेरा बाप अस्पताल में जल गया, उसके पैसे..."

और वह फूट फूट कर रोने लगी.

दादी को चेक कागज़ के टुकड़े से अधिक नहीं लग रहा था पर चाहते हुए भी वह उसे फेंक न सकी. पूरी जिंदगी उसका बेटा इतनी रकम के लिए तरस गया था और जब वह नहीं रहा तब...

बीमारी बढ़ गई तब उसे वेंटिलेटर पर लिया गया था. उन दिनों दादी यही सोचती थीं कि इतने पैसे कहाँ से लाये जाएं? कैसे बेटे का इलाज किया जाएं?

पर बेटे का दोस्त बोला था, "माई, आप फिक्र न करें. जुगाड़ हो जाएगा."

और जुगाड़ ऐसा हुआ कि बेटे को जलाने तक की जरूरत नहीं रही.

रात को कहीं से लपटें उठी और पूरा आईसीयू राख का ढ़ेर हो गया. कईं जानें गईं.

वह तो अच्छा हुआ लोगों ने दो चार जाने बचा लीं, जिसमें उसकी बहू भी थीं. डॉक्टर कह रहे थे कि वह अब ठीक हैं. भगवान करें वह लौट आये तो सेतु को उसे सौंप कर गंगा नहा लिया जाएं. सेतु छोटा था, शरारती भी था, पर इन दिनों न मालूम क्यों, वह बहुत ही शांत रह रहा था.

दादी ने उसे पुचकारते हुए चेक थमा दिया. चेक को आगे पीछे घूमाते हुए वह बोला, "ये पैसे सब को दिये?"

"नहीं रे. जो गुज़र गये उनको..."

"तब तो..." कुछ सोचते हुए सेतु बोला, "मम्मी गुजर जाती तो उसके भी... पैसे मिलते"

चांटा रसीद कर दिया दादी ने और रोते हुए सेतु को गले लगा लिया.

दोनों रो रहे थे, सेतु चाटे की वजह से और दादी...

- रवीन्द्र पारेख, सेवानिवृत्त

Gopal Trasi – A Multifaceted Author

with Dr. G N. Upadya, head of the Kannada department, Nadoja Dr. Baraguru Ramchandrappa, Eminent scholar, writer, director and producer; Chandrashekar Palettadi, editor, kannada news paper at Mumbai university, Kannada department, Kalina campus

Felicitatiation by Dr. Gopal Kalkoti, principal of MVM college, Andheri Mr. Poojary on

Shri Nadoja Patil Puttappa, the great kannada writer, thinker and scholar (Right side), Eminent research writer Shri Babu Shiva Poojary of mumbai (Middle) and Mr. Poojary (Left side)

Expressing our thoughts and ideas through writing is not a cake walk. When one who deals with the numbers, currency, data and practicality in this world of banking becomes a writer, which is completely a different world, with emotion, words, creativity, expression, narration, connecting with the reader and much more, then definitely he has the special ability to be a face in the UBI crowd. So, let's meet 'Mr.Gopal Linga Poojary' through this column who is not just writer but also actor, anchor and avid traveler. He joined our bank in 1985 as clerk cum typist. He is now scale-2 forex officer and posted at FTFC (Forex back office), Mumbai. He writes under the pen name 'Gopal Trasi'. He has writer of 8 books published in kannada.

1. **How did you incline towards writing a book?**

   Actually I never thought of publishing a book. In my college days, few close Friends and like-minded literary people around me started appreciating my writing work. Initially I got few prizes for my poetries and short stories. My first collection of poetry book got published in 1996.

2. **Would you like to throw some light on your initial journey as a writer?**

   I came to Mumbai from Karnataka at the age of 13 after the sudden and shocking demise of my mother. I stayed with my uncle (maternal) to pursue my further studies. I Joined night college, kannada medium high school and junior college. I was feeling very lonely in this mega city, So I engaged myself in reading listening to hindi songs etc. During my school and college days, I used to participate in various inter school extracurricular activities such as elocution, singing (bhav geet), essay writing. I bagged many prizes for the same and Lots of love and affection from my Teachers and schoolmates. learned to express myself through all these activities. Those days nurtured a writer within me. Later I came across many kannada sangha members in and around Mumbai metropolis who gave me opportunities to be a part of kavi sammelan, literary and cultural activities.

3. **Which genres of writing attract you the most?**

   Poetry, it's like listening to your inner self. I also write short stories, articles and humorous essays but poetry is close to my heart. I read other languages such as poetries of Rumi, Galibs, Rahat Indoori etc. I love the saying by Pablo Naruda, 'A poet who is not realistic is dead and a poet who writes only realistic is also dead.'

4. **Could you tell us more about your books?**

   I strongly believe in expressing realistic view of life through my writing. so I try to pen down experiences and incident that happens in my life. My first book was 'Nelada Nakshtragalu'(ground's stars) which had poems on my night school life, Though I was quite unknown at that time, but the great writer and thinker Nadoja Dr. Baraguru Ramachandrappa wrote few words for first book. The first book happened because of my well-wishers Guru bharati Adyayana Kendra's writer and thinker Mr. Ravi R. Anchan (late), Prof. Shivabillava (late), Mr. S. K. Sundar and great Cartoonist Mr. Panjugangolli. My very first book was nominated for 'Vardhaman young writer award' also. Later, few books were published solely because of the legendary dramatist, national award winner film producer and director and my drama guru Shri. Sadanand Suvarna sir. My first two poetry books were selected by a leading newspaper for 'Annual young writers book'. In all, three poetry collection books, one short stories collection, one collections of column writings and one book on life and achievement of a journalist and editor Shri Ashok suvarna were published. Few more are in the pipe line. I also co-edited and compiled two books. Few of my books were selected

and bought (Under bulk purchasing scheme) by the library department of government of Karnataka.

5. **Could you share with us about your awards and recognition?**

Awards, not much, because i write for my satisfaction. In my Initial days, few poetries and short stories won state level prizes including the prestigious 'Sankramaa Kaavyaprashasti' which made me believe in my writing ability. My poetry got selected in the anthology of kannada poetry, published by kannada cultural Department. I was invited for kavisammelan organised by 'Akhil bharata kannada sahitya sammelan' during 2005. I was invited for 'kavi sammelanat' in udupi district and kundapura taluk sahitya sammelana too. I got Invited and presided over many 'kavi sammelans' in and around mumbai. A certification Felicitation (2018) by Montegomary county council, Maryland State, USA in 'AKKA world Kannada Conference 'was heart touching.

6. **We would like to know more about your AKKA world Kannada Conference.**

It's a conference held once in two years at USA, conducted by 'Association of Kannada Koota's of America',fondly known as 'AKKA Sammelan'. Worldwide kannada people from the different fields such as literature, art, education, drama, Television, film, medical come together. It's a grand literature and cultural festival for three full days. I was fortunate to be invited for the 'Kavi sammelan' at 10th AKKA world conference held at Dallas city of Texas in 2018. I presented two of my poems which were very well appreciated by the audience. I took some 25 books of mine which were all sold out in one go. My whole hearted thanks to my childhood friend Mr. Anand Poojary of Maryland State, USA resident.

7. **Could you share any small piece of poetry with our readers**

This one is from my first book (In Kannada). I tried to translate it in English

My poems

Float in water, Fly free in air

My poems do not abide by Grammar and rules

Run away from critics / My poems are like me

Hightless, weightless, Just like Grounded Rupee rate.

8. **How do you improve you writing skill?**

It's a continuous process. Reading is the best habit. A writer has to be good reader first. He should always observe little things and be open to everything.

9. **What be motivates or inspires you to write?**

I can't pin point a single thing. Anything which makes me feel deep within, sometimes what hurts and disturbs. Discrimination, inhuman things happen in the name of God, religion, caste etc, superstition and hypocrisy even among educated people. I am being deeply inspired by works and deeds of Mahatma Gandhi. Swamy Vivekananda and the great religious, social reformer saint Shri Narayan guru. I always remember greatest kannada writers, poets like Kuvempu, Bendre, Shivaram Karanth, Devanooru mahadeva and many more. Feel proud of kannada literature history who gave 8 Jnanapita award winners to the country.

10. **What are your future goals?**

Nothing special, a book 'London to vatican city' a travelogue is in the press. And yes, I want to write a novel depicting my journey into this ever lively and lovely dynamic Mumbai's cosmopolitan life.

11. **Is there anything other than writing that interests you?**

Yes, I am interested in the drama field also. I did participate in few drama workshops organised by eminent stage personalities including legendary Sadananda Suvarnaji, NSD's Shri Suresh Anagalli, Krisnamurty Kavattar, dayanand Saliyan etc. I did few roles including memorable role of SAHIRA, A HIZADA (3rd gender in a play by Sa.Daya,called 'ChowkattinaacheyaChitra' means 'Art beyond Frame'). Stage Acting is very tough and I am still a learner. I have given stage music and also sang for few plays. I love anchoring too. I am a travel buff. I have visited many places in and out of India. I have touched twelve foreign soils.

12. **Being multitalented, how do you manage this role of yours?**

Yes, it all happened with no special planning but just time management.

13. **What role does your family and Bank play in year?**

As a proud unionite, I have been feeling blessed to be associated with our bank. My banking career enabled me to come across and interact with countless multi lingual, multi religious people from all walks of life. My wife, Savita is always supportive and gave free hand in my creative activities. Two loving children, Dhruva is doing his 3rd year Mech. Engg through NMIMS group colleges Mumbai. He is football player as well as a passionate dancer. Second son Apurv is 10th standard student. Actually I must confess they all tolerate me a lot.

14. **Would you like to give any piece of advice to aspiring writers?**

Advice is a big word. I say a writer has to be a good reader always. One should believe in oneself and remain true to his feelings. Before everything else in life, its utmost important to be a good human being.

15. **Anything you want to say, at the end?**

Since beginning I have been fond reader of 'Union Dhara'. It's content, design and reach is always beyond a normal House Magazine. Thanks to all previous and current editors and Editorial team. I am indebted to few of my close friends, many learned kannada literary personalities all readers and A big salute to this Mumbai city. Because of you all, I could protect a writer within me.

- Priyanka Angawalkar
Union Dhara, C.O

कर्नाटक का खान-पान एवं पहनावा

दक्षिण भारत का एक ऐसा राज्य कर्नाटक, जहां लाजवाब स्वाद और भोजन में कई विविधता फूड लवर को अपनी ओर आकर्षित करती है. कर्नाटक के मुख्य खाद्य पदार्थों में चावल, रागी और ज्वार शामिल है. कर्नाटक में शाकाहारी और मांसाहारी व्यंजनों की एक लंबी लिस्ट शामिल है. कर्नाटक के अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न व्यंजन परोसे जाते हैं. उत्तर कर्नाटक में मुख्य रूप से शाकाहारी भोजन सर्व किए जाते हैं. व्यंजन ज्वार और गेहूं पर आधारित है, जो ज्वार से बने जोलाडा रोटियों में बनाया जाता है. वहीं तटीय क्षेत्र में आपको स्वादिष्ट सी फूड का स्वाद चखने को मिलता है. इसमें नारियल एवं नारियल के तेल का प्रचुर मात्रा में इस्तेमाल होता है. कोडागु क्षेत्र में मांसाहारी भोजन मांस करी का स्वाद चखने को मिल जाएगा और मंगलोरियन व्यंजन में नारियल एवं स्थानीय मसालों का भरपूर स्वाद है. इन व्यंजनों में मुख्य रूप से मसाले, सूखी लाल मिर्च, हरी मिर्च, नारियल और देशी फल सब्जियां जैसे कि इमली, केला, चिचिंडा, लहसुन, अदरक आदि का उपयोग होता है. यहां चीनी, गुड और मिर्च पावडर का उपयोग बड़ी उदारता पूर्वक किया जाता है. चूंकि कर्नाटक में शाकाहारियों की संख्या अधिक है इसलिए यहां शाकाहारी व्यंजन अधिक लोकप्रिय है. मोटे तौर पर उत्तरी कर्नाटक, दक्षिण कर्नाटक, या पुराने मैसूर क्षेत्र, तटीय या केनरा भोजन कुरगी व्यंजन के नाम से जाने जाते हैं. कर्नाटक के कुछ विशेष व्यंजनों के बारे में हम विस्तार से जानेंगे-

नीर डोसा: यह बेहद लाइट लेकिन स्वादिष्ट भोजन है. यहां नीर का अर्थ है पानी. यह बहुत ही पतला और सॉफ्ट डोसा है, जिसे चावल के आटे के घोल की मदद से तैयार किया जाता है. नारियल की चटनी के साथ इसका स्वाद कई गुना बढ़ जाता है.

उडुपि सांभर: उडुपि सांभर केरल के सांभर से विपरीत होता है. उडुपि सांभर में अधिक मसालों के साथ थोड़ा मीठा स्वाद होता है. सांभर के स्वाद में लाल मिर्च, मेथी, हिंग, धनिया, जीरा, नारियल, होता है. सांभर चना और उडद दाल से बनाया जाता है और उसे डोसा और इडली के साथ परोसा जाता है तथा चावल के साथ भी इसका सेवन किया जाता है.

केन रवा फ्राई: यह एक फिश डिश है जो कर्नाटक के खानपान में काफी पसंद की जाती है. इसे बनाने के लिए मछली की आंतडिया निकालकर खाली स्थान में मसाला भर दिया जाता है. फिर इन साबुत मछलियों के चारों ओर सूजी की परत चढ़ाई जाती है और तेल में तला जाता है. सूजी की परत होने के कारण यह कुरकुरा हो जाता है और अंदर से मसालेदार और नर्म होती है. इसका स्वाद बहुत ही लाजवाब होता है. यहां के लोग इसे चटनी और सॉस के साथ बड़े चाव से खाते हैं.

कोरी गस्सी: यह एक मशहूर मंलोरियन डिश है. कोरी का मतलब चिकन होता है और गस्सी का मतलब करी. इस बनाने के लिए चिकन के टुकड़ों को मसालों में डाला जाता है और नारियल के साथ पकाया जाता है. इसे चावल के साथ खाने पर इसका स्वाद दो गुना बढ़ जाता है.

कुर्ग पांडी करी: यह कर्नाटक का एक स्वादिष्ट और प्रसिद्ध मांसाहारी व्यंजन है. इसमें मांस को मसाले के पेस्ट में लगाकर पकाया जाता है. जिसके कारण इसका रंग गहरा और स्वाद मसालेदार होता है. इसे बनाने के लिए स्थानीय स्तर पर उगाए जाने वाले कांचमपुली फल का प्रयोग किया जाता है जिसके कारण इसका विशिष्ट खट्टा स्वाद होता है. पांडी करी को चावल की रोटी के साथ परोसा जाता है.

मंगलोरियन बिरयानी: मंगलोरियन बिरयानी शाकाहारी और मांसाहारी दोनों तरह से पकाई जाती है. चावलों को मसाले के पेस्ट में पकाया जाता है. पेस्ट बनाने में नारियल, धनिया के बीज, इलायची, सौंफ, लौंग, अदरक, लाल मिर्च, लहसुन और जीरा की जरूरत होती है. नॉन वेज बिरयानी के लिए इसमें मीट डाला जाता है और वेज बिरयानी के लिए इसमें सभी तरह की सब्जियों को शामिल किया जाता है. बनने के बाद वेज और नॉन वेज दोनों बिरयानी का स्वाद लाजवाब होता है.

अक्की रोटी: कर्नाटक के हर घर में बनने वाला बहुत ही हेल्दी और टेस्टी नाश्ता है अक्की रोटी. कन्नड में अक्की का अर्थ होता है चावल. चावल के आटे और कई तरह की सब्जियों से तैयार की गई इस रोटी को बनाना बहुत ही आसान है.

मद्दुर वड़ा: कर्नाटक के पॉपुलर स्नैक्स में से एक है मद्दुर वड़ा. आटे, प्याज, सूजी व कई तरह के मसालों से तैयार इस वड़े का स्वाद बहुत ही लाजवाब होता है. वड़ा आमतौर पर डोनट की तरह नजर आता है लेकिन मद्दुर वड़ा उससे थोड़ा अलग होता है.

इडली: कर्नाटक के खानपान में इडली एक ऐसा व्यंजन है जो किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं. यह पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्ध है. इडली को चावल और उड़द दाल के संयोजन से पेस्ट बना कर तैयार किया जाता है. इस नर्म मुलायम इडली को सांभर या चटनी के साथ परोसा जाता है.

चिरोंती: चिरोंती कर्नाटक का एक पारंपरिक व स्वादिष्ट पकवान है. यह मीठा होता है. इसे किसी भी त्योहार या शादी पर बनाया जाता है. इसे मैदा या सादे आटे का उपयोग करके तैयार किया जाता है. यह गोलाकार चक्र जैसे आकार की एक तली हुई पेस्ट्री है जो काफी मात्रा में इलायची, चीनी की चाशनी में डुबो दिया जाता है. इस डिश को दूध और चीनी के साथ खाया जाता है.

पोरी उरंडई: यह एक मीठा व्यंजन है. यह परमल (चावल) से तैयार किया जाता है. इसे तैयार करने के लिए गुड को एक निश्चित मात्रा में गर्म किया जाता है. फिर परमल को उसमे मिलाया जाता है और उसके गोल लड्डू बनाये जाते हैं. ठंडा होने पर इन लड्डुओं का स्वाद कुरकुरा और मीठा होता है.

सागू: सागू कर्नाटक में बहुत प्रसिद्ध है. इसे नारियल और खसरे के बीज से तैयार किया जाता है. यह पकवान सब्जी करी का एक रूप होता है जिसे सेट डोसा, रोटी, चावल, रवा इडली के साथ परोसा जाता है.

मैसूर पाक: मैसूर पाक एक साधारण लेकिन बहुत ही प्रसिद्ध और मीठा पकवान है, जो पूरे भारत में लोकप्रिय है. मैसूर पाक केवल तीन चीजों से बनता है- बेसन, घी और चीनी. यह पकवान त्योहारों में विशेष रूप से बनाया जाता है. कर्नाटक की यह फेमस डिश यहां आने-जाने वालों की पहली पसंद है.

कर्नाटक का पहनावा

भारत देश एक ऐसा देश है जिसे 'अनेकता में एकता' की भूमि कहा जाता है, यह विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, धर्मों, जातियों, भाषाओं, नस्लों और जातीय समूहों का देश है. इसलिए भारतीय लोगों की वेशभूषा संस्कृति, परंपराओं, धर्मों, जातियों, भाषाओं के आधार पर अलग अलग हैं. कर्नाटक के पारंपरिक कपड़े इस दक्षिण भारतीय राज्य में रहने वाले लोगों की आधुनिकता और संस्कृति का सद्भाव दिखाते हैं. कर्नाटक का पहनावा बहुत ही सादा है, जो भारतीय संस्कृति एक हिस्सा है. आज का समकालीन समाज कर्नाटक के निवासियों के कपड़े पहनने की अनूठी शैली से प्रभावित है. महिलाएं साड़ी पहनना पसंद करती हैं. अधिकांश बुजुर्ग पुरुष अपने पारंपरिक कपड़ों को जीवित रखने के लिए ड्रेस कोड का पालन करते हैं क्योंकि वे बहुत ही धार्मिक, विशिष्ट भावनात्मक और उनकी संस्कृति से निकटता से जुड़े होते हैं.

कर्नाटक में महिलाओं की वेषभूषा साड़ी हैं. यह रेशम से बनी होती है और रेशम साड़ी न केवल कर्नाटक बल्कि पूरे देश में प्रसिद्ध हैं. यहां तक कि कर्नाटक को भारत के रेशम केंद्र के रूप में भी जाना जाता है. कर्नाटक के कांचीपुरम या कांजीवारम साड़ियाँ रेशम चमकीले रंग, शानदार डिजाइन और समृद्ध बुनावट से सभी को आश्चर्यचकित करती हैं. कांचीपुरम साड़ियां आमतौर पर दुल्हन की पोशाक के लिए उपयोगी होती है. पुरुषों के लिए पारंपरिक पोशाक लुंगी है. यह एक शर्ट के साथ कमर के नीचे पहना जाता है. पुरुष कंधे को कवर करने के लिए एक अंगवस्त्रम लेते हैं. त्योहारों के मौसम या विशेष अवसरों के दौरान, पुरुष पंचा पहनते हैं जो धोती की तरह होता है लेकिन धोती से छोटा होता है साथ ही मैसूर पेटा पुरुषों के लिए एक पारंपरिक परिधान है. वर्तमान समय में पुरुषों एवं महिलाओं की पोषक में बदलाव आया है. शहरों में पुरुष कमीज-पैंट, जींस-टी शर्ट और औरते सलवार-कमीज या जींस-टी शर्ट पहनना अधिक पसंद करती हैं.

- संतोष कुमार राम
क्षे. का., सिलीगुड़ी

दक्षिण कर्नाटक के प्रसिद्ध मंदिर

दक्षिण कर्नाटक के मंदिर, यहाँ के मुख्य पर्यटक आकर्षण हैं. ये मंदिर इतिहास में अपना एक समृद्ध स्थान रखते हैं. यहाँ का हर मंदिर अपने आप में अनूठा है. इन मंदिरों की विशेषताओं में से एक है, भक्तों को प्रसाद के रूप में प्रदान किया जाने वाला सरल और स्वादिष्ट भोजन, क्योंकि वे मंदिर के दर्शन के लिए दूर-दूर से आते हैं. मंदिरों में दर्शन नि:शुल्क है और कुछ मंदिरों में विशेष दर्शन के लिए टिकट खरीदे जा सकते हैं. यहाँ के ज्यादातर मंदिरों में दर्शन पाने के लिए पारंपरिक कपड़े अधिमानत: पहने जाते हैं. अधिकांश मंदिरों तक पहुंचने के लिए घाटों और घने जंगलों से होकर गुजरना पड़ता है. प्रत्येक मंदिर में पीठासीन देवता को दी जाने वाली महाआरती देखने वालों के लिए मंत्रमुग्ध कर देने वाली होती है. मंदिर पूरे वर्ष खुले रहते हैं, हालांकि अधिकांश मंदिरों में जाने का सबसे अच्छा समय सर्दियों का मौसम होता है. अधिकांश त्यौहार यहाँ के मंदिरों में मनाये जाते हैं, हालाँकि प्रत्येक मंदिर का अपना विशेष वार्षिक उत्सव भी होता है. दक्षिण कर्नाटक, एक ऐसी भूमि है जहां कई मंदिर हैं, तो आइये, कुछ सबसे प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में जानते हैं.

श्रीकृष्ण मठ, उडुपि

मंदिरों का शहर उडुपि, जिसे 'दक्षिण की मथुरा' भी कहा जाता है, श्रीकृष्ण मंदिर के लिए प्रसिद्ध है. इस मंदिर की स्थापना 13वीं शताब्दी में वैष्णव संत जगदगुरु श्री मध्वाचार्य ने की थी. यह मंदिर विभिन्न माधवा संतों से संबंधित आठ मठों से घिरा हुआ है. इस मंदिर की एक अनूठी विशेषता यह है कि भक्तों को दो अलग-अलग प्रकार की खिड़कियों से भगवान कृष्ण के दर्शन होते हैं. भीतरी खिड़की जो नवग्रह किंडी के नाम से जानी जाती है और बाहरी खिड़की कनकना किंडी के नाम से जानी जाती है. विशेष दिनों में किए जाने वाले रथोत्सव को भी अवश्य देखना चाहिए, जहां भगवान कृष्ण की मूर्ति को रथ में रखा जाता है और भजन और कीर्तन के बीच मंदिर परिसर के चारों ओर परिक्रमा की जाती है. कृष्ण मठ अपने धार्मिक रीति-रिवाजों, परंपराओं और द्वैत दर्शन के सिद्धांतों के लिए दुनिया भर में जाना जाता है.

श्री क्षेत्र धर्मस्थल मंजुनाथ स्वामी मंदिर- धर्मस्थला

भगवान शिव, जिन्हें यहां मंजुनाथेश्वर के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य देवता हैं, जिनकी इस 800 साल पुराने मंदिर में शिवलिंग के रूप में पूजा की जाती है. इस मंदिर की एक अनूठी विशेषता यह है कि इस मंदिर की पूजा वैष्णव पुजारियों द्वारा की जाती है और जैन वंशजों द्वारा प्रशासित किया जाता है. धर्मस्थल मंदिर तक परिवहन के विभिन्न साधनों के माध्यम से आसानी से पहुँचा जा सकता है, मंगलूर निकटतम बड़ा शहर है, जहाँ से हवाई यात्रा करने और तीर्थयात्रियों को ट्रेन की सुविधा है. दिवाली, वार्षिक समारोहों की शुरुआत का प्रतीक है, लक्ष दीपोत्सव, यहाँ की रोशनी का वार्षिक भव्य उत्सव, कार्तिक महीने में अंतिम पांच दिनों में मनाया जाता है. मंजुषा संग्रहालय भी देखा जा सकता है जो मंदिर के बहुत करीब स्थित है, जो धर्म अधिकारी से संबंधित हथियारों, तलवारों, पुराने कैमरों, पुरानी कारों (विन्टेज कार) का भांडार है.

कुक्के श्री सुब्रह्मण्य मंदिर, सुब्रमण्य

इस मंदिर में भगवान कार्तिकेय को सभी नागों के स्वामी सुब्रमण्य के रूप में पूजा जाता है. पुराणों में यह कहा गया है कि दिव्य नाग वासुकी और अन्य नागों को गरुड़ द्वारा धमकी दिए जाने पर सुब्रमण्य के अधीन शरण मिली. यह मंदिर पश्चिमी घाट के घने जंगलों में स्थित है, एक सुंदर पृष्ठभूमि के रूप में प्रसिद्ध कुमार पर्वत के साथ. यह मंगलूर से लगभग 105 किमी दूर है और यहां ट्रेन, बसों या टैक्सियों द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता है. सुब्रमण्या को पहले कुक्के पट्टाना कहा जाता था. इस स्थान का कई धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है. अश्लेषा बाली समारोह और सर्प संस्कार दो महत्वपूर्ण सर्प दोष समारोह हैं जो कुक्के सुब्रमण्य मंदिर में किए जाते हैं.

श्री क्षेत्र श्रृंगेरी, श्रृंगेरी

सह्याद्री पहाड़ियों के बीच स्थित श्रृंगेरी, श्रृंगेरी शारदा पीठम के लिए प्रसिद्ध है. दक्षिणामन्य श्रृंगेरी शारदा पीठ 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित किया जाने वाला पहला मठ है. बंगलूर और मंगलूर से श्रृंगेरी तक सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है. श्रृंगेरी तुंगा नदी के तट पर बसा है. मठ परिसर में नदी के उत्तरी और दक्षिणी दोनों किनारों पर मंदिर हैं. श्री शारदाम्बा मंदिर और श्री विद्याशंकर मंदिर श्रृंगेरी के सबसे प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर हैं जो उत्तर में स्थित है. विद्या शंकर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और शारदाम्बा मंदिर देवी सरस्वती को समर्पित है. दक्षिणी तट में वर्तमान शंकराचार्य का निवास है, पिछले शंकराचार्य के मंदिर और सदविद्या संजीविनी संस्कृत महापाठशाला है. शरद नवरात्रि यहां मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है. यह मंदिर छोटे बच्चों के लिए 'विद्या आरंभ पूजा' करने के लिए भी प्रसिद्ध है.

श्री अन्नपूर्णेश्वरी मंदिर, होरनाडु

मंदिर देवी अन्नपूर्णेश्वरी (अन्नपूर्णा) को समर्पित है. श्री अन्नपूर्णेश्वरी को भगवान शिव की पत्नी, देवी पार्वती का अवतार माना जाता है. मंदिर पश्चिमी घाट के घने जंगलों और घाटियों में चिकमगलूर से 100 किमी दूर

होरानाडु में स्थित है. ऐसा माना जाता है कि 8वीं शताब्दी में ऋषि अगस्त्य ने यहां देवी के प्रतीक की स्थापना की थी. देवी अन्नपूर्णेश्वरी को यहां एक पीठ पर खड़ी मुद्रा में देखा जा सकता है. पूरी मूर्ति सिर से पांव तक सोने से ढकी है. वह अपने चार हाथों में शंख, चक्र, श्री चक्र और देवी गायत्री धारण किए हुए हैं. ऐसा माना जाता है कि देवी अन्नपूर्णा के दर्शन करने के बाद, कोई भी अपने जीवन में भोजन के बिना कभी नहीं जाएंगे. अक्षय तृतीया इस मंदिर में मनाया जाने वाला मुख्य त्योहार है, क्योंकि इस दिन को देवी अन्नपूर्णा की जन्म तिथि माना जाता है.

श्री मूकाम्बिका मंदिर, कोल्लूरु

कोल्लूर मूकाम्बिका मंदिर, उडुपि जिले के बैंदूर तालुक में कोल्लूर में स्थित है और सौपर्णिका नदी के दक्षिणी तट पर कोडाचाद्री पहाड़ियों की तलहटी में स्थापित है. ऐसा माना जाता है कि आदि शंकराचार्य को श्री मूकाम्बिका देवी के दर्शन हुए थे और उन्होंने यहां देवी की स्थापना की थी. मंदिर के मुख्य देवता एक स्वयंभू (स्वयं जन्म) ज्योतिर्लिंग है, इसके साथ ही देवी मूकाम्बिका की चतुर्भुज पंचलोहा मूर्ति भी स्थापित है. मूल मंदिर जहां शंकराचार्य जी ने ध्यान लगाया और देवी उनके सामने प्रकट हुईं, वह कोडाचाद्री चोटी (1343 मीटर) पर है, जो कोल्लूर से लगभग 21 किमी की दूरी पर है, यह कोल्लूर श्री मूकाम्बिका देवी मंदिर से एक बड़े पर्वत शिखर के रूप में भी दिखाई देती है. फाल्गुन के महीने में रथोत्सव और अश्विन के महीने में नवरात्रि इस मंदिर में मुख्य त्योहार हैं. केरल के कई तीर्थयात्री अपने बच्चों के विद्यारंभ के लिए यहां आते हैं.

श्री महा गणपति मंदिर, साउथडका

साउथडका एक तीर्थस्थल है जो दक्षिण कन्नड़ जिले के नेल्याडी तालुक में कोक्कडा से 3 किमी की दूरी पर स्थित है. इस जगह की विशिष्टता यह है कि भगवान महा गणपति खुले मैदान में 'गर्भ गुड़ी' और मंदिर संरचना के बिना हैं. यह चारों ओर से हरियाली से घिरा हुआ है और पूजा करने के लिए चौबीसों घंटे खुला रहता है और एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है. तुलु में, सोथे का अर्थ है 'ककड़ी' और अदका का अर्थ है 'क्षेत्र'. इस स्थान पर चरवाहे खीरा उगा रहे थे और उन्होंने अपनी पूजा के दौरान इस स्थान के भगवान गणपति को वही अर्पित किया. इसलिए इस स्थान का नाम साउथडका पड़ा. मंदिर को मुख्य रूप से बहुत घंटियों से सजाया गया है, जो भक्तों द्वारा उनकी विशेष इच्छाओं की पूर्ति के बाद अर्पित की जाती हैं. धर्मस्थल और कुक्के सुब्रह्मण्य के रास्ते से इस मंदिर तक आसानी से पहुंच सकते हैं. मंदिर में दिया जाने वाला प्रसाद सबसे लोकप्रिय है. 'अवलक्की पंचकज्जय सेवा' (पोहा, गुड़, तिल, नारियल, शहद और केले का एक स्वादिष्ट मिश्रण) जो नियमित रूप से किया जाता है, और जो कोई भी अवलक्की पंचकज्जय सेवा करता है, उसे भगवान के प्रसाद को उचित मात्रा को आसपास की कई गायों के साथ साझा करना चाहिए.

महतोबारा श्री मंगलादेवी मंदिर, मंगलूरु

यह मंदिर, शक्ति को मंगलादेवी के रूप में समर्पित है. मंगलूर शहर का नाम पीठासीन देवता, मंगलादेवी के नाम पर रखा गया है. यह सबसे पुराना महत्वपूर्ण मंदिर है और माना जाता है कि 9वीं शताब्दी के दौरान मत्स्येंद्रनाथ के संरक्षण में, 9वीं शताब्दी के दौरान अलुपा वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा कुंडवर्मन द्वारा बनाया गया था. एक अन्य किवदंती के अनुसार, माना जाता है कि मंदिर का निर्माण परशुराम द्वारा किया गया था, जो हिंदू भगवान विष्णु के दस अवतारों में से एक है और बाद में कुंडवर्मन द्वारा इसका विस्तार किया गया था. गर्भगुड़ी में पीठासीन देवता मंगलादेवी की छवि है जो बैठी मुद्रा में धारापात्र के रूप में चित्रित है. नवरात्रि के नौ दिनों में विशेष पूजा की जाती है और दसवें दिन यानि विजयादशमी पर रथोत्सव किया जाता है. सुशोभित देवी को भव्य रथ पर विराजमान किया जाता है और मंदिर परिसर के बाहर जुलूस में रथ को मोटी रस्सियों से खींचा जाता है. मंगलादेवी मंदिर के अलावा, भगवान शिव को समर्पित कद्री और कुद्रोली मंदिर भी मंगलूरु में देखने लायक हैं.

श्री दुर्गापरमेश्वरी मंदिर, कटील

श्री दुर्गा परमेश्वरी का मंदिर कटील या कटेलु दक्षिण कन्नड़ जिले में मंगलूरु और उडुपि के बीच है. इसे भारत के सबसे पवित्र हिंदू मंदिरों में से एक माना जाता है. यह नंदिनी नदी के तट पर स्थित है. कटेलु यक्षगान के लिए बहुत प्रसिद्ध है और इस पवित्र स्थान से पारंपरिक महत्व से जुड़ा हुआ है. कटेलु मंदिर में 6 मेले (दल) हैं. मंदिर के अलावा हिंदू मान्यता के भक्त अपने निवास स्थान पर भी मेल के माध्यम से यक्षगान करवाते हैं.

कार्कला के जैन मंदिर

गोमतेश्वर बाहुबली स्मारक, चतुरमुखा बसड़ी, वरंगा केरे बसड़ी कुछ अवश्य देखने लायक जैन मंदिर जो कार्कला में स्थित है. ये सभी मंदिरें प्रकृति की सुन्दरता के बीच स्थित है.

उपरोक्त मंदिरों के अलावा स्थानीय विशेषता रखने वाले और भी कई मंदिर हैं, जो दर्शनीय है. इन सभी मंदिरों की यात्रा निश्चित रूप से एक समग्र और समृद्ध अनुभव देती है. यह यात्रा कायाकल्प और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है. आप सभी को सुन्दर, आनन्दमय आध्यात्मिक यात्रा की शुभकामनाएँ.

- एन. वी. कल्याणी
कें. का.- अनेक्स, मंगलूरु

Karnataka-The Land of Opportunity & Innovation

Karnataka is one of the leading industrial states of India. The economic fundamentals including State Gross Domestic Product, industrial growth, integration with the global economy and investment inflows are stable and growing.

Bangalore, the capital of Karnataka, is the IT hub of India and also the fourth largest technology cluster in the world. Industrial diversity is evident from the fact that Bangalore has earned the nickname of 'garment capital of India'. The state has a total of 47 IT and ITeS SEZs along with three software parks. Presence of dedicated IT investment regions is supportive to the fast growth of its IT industry.

The largest software exporting state of India, Karnataka, has robust textile, agro, aerospace, heavy engineering and automobile industries too. Around 60% of biotechnology companies have a branch in Karnataka and it generates 50% of the total revenue earned by the Indian biotechnology industry.

Karnataka is in the southern region of India. It is surrounded by the Arabian Sea on the west, Goa on the northwest, Maharashtra on the north, Andhra Pradesh on the east, Tamil Nadu on the southeast, and Kerala on the southwest.

At current prices, Karnataka's revised gross state domestic product (GSDP) stood at Rs. 18.03 trillion (US$ 247.38 billion) in 2020-21. The state's GSDP increased at a CAGR of 8.47% between 2015-16 and 2021-22. Merchandise exports from the state reached US$ 16.64 billion in 2019-20 and US$ 15.14 billion in 2020-21.

Karnataka has vibrant automobile, agro, aerospace, textile and garment, biotech, and heavy engineering industries. The state has sector specific special economic zone (SEZs) for key industries such as IT, biotechnology, and engineering, food processing and aerospace.

Karnataka is the IT hub of India & home to the fourth largest technology cluster in the world. Karnataka boasts of a diverse flora and fauna and a 320 km natural coastline, which makes it a nature tourist's paradise.

Tourist arrivals in the state increased from 214.85 million in 2018 to 228.54 million in 2019.

Karnataka offers a wide range of fiscal and policy incentives for businesses under the Karnataka Industrial Policy, 2021-25. Through the ESDM Policy 2017-22, the Government of Karnataka plans to facilitate, promote and develop the ESDM sector in Karnataka and make the state a preferred destination for investment in this sector. In September 2017, the Government of Karnataka passed the 'Karnataka Electric Vehicle and Energy Storage Policy 2017'. In June 2021, the Karnataka government amended the policy to offer more impetus to the electric mobility sector. As per the amendment, a 15% subsidy was announced on capital expenditure on land value (fixed value assets up to a maximum limit of 50 acres land).

According to the Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT), the state's cumulative FDI inflow stood at US$ 11.95 billion between October 2019 and March 2021, the third highest in India after Gujarat and Maharashtra, and accounted for 14% of India's cumulative FDI inflow.

In December 2019, the New South Parallel Runway (NSPR) at Kempegowda International Airport became

operational. This will enable the airport to handle around 35 million passengers per year. The airport became the first in country to operate independent parallel runways, enabling aircraft to land and take off simultaneously on both runways.

As of April 2021, the state had an installed power-generation capacity of 30,105.02 MW. Of this, central utilities contributed 4,047.70 MW, private utilities (17,256.84 MW) and state utilities (8,800.49 MW).

Karnataka has emerged as the information technology (IT) hub of India. Export of electronics and computer software from the state reached US$ 81.4 billion in FY20 and US$ 38.8 billion in FY21, respectively (until November 2020). Export of electronics and computer software accounted for 85% share in Karnataka's overall exports.

Karnataka is the first state which came out with an aerospace policy in the country. Karnataka Aerospace Policy has identified an investment potential of US$ 12.5 billion in this sector during 2013-23 and plans to develop aerospace clusters in different regions of the state.

Karnataka is the fourth largest and one of the fastest growing States in India with a INR 16,99,115 crore economy growing at around 10.00 per cent at current prices as per Economic Survey of Karnataka 2019-20. Karnataka has carved out a niche for itself in the global market as the knowledge and technology capital of the country. The State is spearheading the growth of Indian industry, particularly in the areas of electrical and electronics, information & communication technology (ICT), biotechnology, nanotechnology, pharmaceutical, aerospace and nano machinery 4.0.

The contribution of industry and manufacturing sector to Gross State Domestic Product (GSDP) stood at 22.01 per cent and 14.46 per cent during 2018-19 respectively. The State recorded INR 6,51,983 crore worth of exports in 2018-19, constituting 17.80 % of the country's export and the largest contributing sectors were software exports followed by engineering products, petroleum products, readymade, basic chemicals and pharmaceuticals.

Government has taken many initiatives to enhance its stature as one of the leading high-tech industrialized States in the country and is in the forefront of attracting investments from across the country and abroad in disruptive technologies viz. Artificial Intelligence, Automation, Data Analytics, Machine Learning, 3D Printing and Robotics, etc. As a result, the State ranks 1st in attracting investment intentions since 2016 and has attracted FDI of US$ 37.67 billion during the period April 2000 to March 2019, constituting 9 per cent of the all India FDI.

'Karnataka is a land of immense opportunity and innovation. It is ideally positioned to make the future happen today. The State's manufacturing progress is supported by critical enablers such as: thriving ecosystem, highly skilled and talented workforce, empowering institutional & policy environment; favorable business climate and robust infrastructure Robust Infrastructure to Support Industrial Growth: Infrastructure is central to the State's effort to deliver inclusive and robust growth. With good rail, road and air connectivity, logistic support, and excellent tele-communication network the State's robust physical infrastructure has created a conducive environment for industrial development.

We firmly believe that the state will emerge as a global leader in the areas of innovation & research with the inclusive and sustainable development.

- Akhilesh Shukla
STC Bengaluru

Agriculture in Karnataka

1. Introduction:

The history of Indian agriculture dates back to 10,000 years. Karnataka is India's eighth largest state in geographical area covering 1.92 lakh sq km and accounting for 6.3 per cent of the geographical area of the country.

In Karnataka, agriculture is the major occupation for a majority of the rural population. As per the population Census 2011, agriculture supports 13.74 million workers, of which 23.61 per cent are cultivators and 25.67 per cent agricultural workers. A total of 123,100 km² of land is cultivated in Karnataka constituting 64.6% of the total geographical area of the state. A large portion of agricultural land in the state is exposed to the vagaries of monsoon with severe agro-climatic and resource constraints. Agriculture employs more than 60 per cent of Karnataka's workforce.

Agriculture in Karnataka is heavily dependent on the southwest monsoon. While only 26.5 per cent of the sown area (30,900 km²) is under irrigation. The state ranks fifth in India in terms of total area under horticulture. It stands fifth in production of vegetable crops and third in fruit crop production. It is also the largest producer of spices, aromatic and medicinal crops and tropical fruits. It is the second largest milk-producing state after Gujarat. Karnataka is also the second largest producer of grapes in the country, and accounts for the 2 production of 12 per cent of total fruits, 8 per cent of total vegetables and 70 per cent of coffee in the country. It is the third largest producer of sugar and ranks fourth in sugarcane production. In floriculture, Karnataka occupies the second position in India. Karnataka is the major silk producing state in the country.

2. Soil types :

There are varied types of soils in Karnataka. Six broad groups of soil orders are recognized, based on differences in soil formation processes, as reflected in the nature and sequence of soil horizons. Black soils are found in northern Karnataka whereas red and red loamy soils are prominent in southern Karnataka. Laterite soils are found in malnad and coastal areas of the state. A brief description of the properties of these soil groups, along with their distribution across districts of Karnataka.

3. Land use pattern :

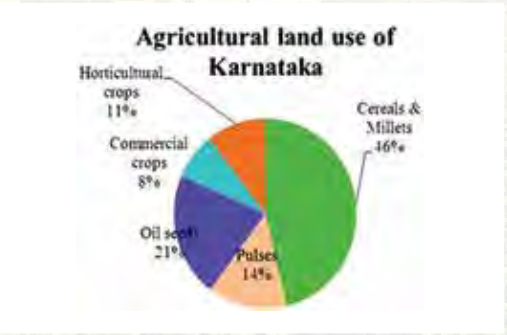

Land-use Pattern Land is a finite resource and its demand for diverse purposes is increasing day by day. There are large areas of utilizable but wasteland resources. Moreover, the pressure of commercialization is increasingly forcing out productive land resources for nonagricultural uses. Considering the importance of land use and policy, the Government of Karnataka brought out a document on land use policy recently (GoK, 2003). The analysis of land use data from 1966 to 2009 indicates structural changes in land use pattern. Areas under permanent pasture decreased consistently and areas under nonagricultural uses increased sharply during the past four decades.

4. Cropping Pattern:

Agriculture in Karnataka is mainly done over 3 seasons:

- Kharif (April to September)
- Rabi (October to December)
- Summer (January to March)

The Kharif crops in Karnataka comprise millets, paddy (rice), maize, moong (pulses), groundnut, red chillies, cotton,

soyabean, sugarcane, rice, and turmeric. It is also known as the Autumn harvest as it is cropped with the beginning of the first rains in the month of July. The major Rabi crops of Karnataka are wheat, barley, mustard, sesame, and peas. It is popularly known as the spring harvest in parts of Karnataka. Karnataka is one of the major producers of rice among all other states in India. Rice is the food crop harvested by Karnataka agriculture and sugarcane is the cash crop. Other cash crops sown in Karnataka agriculture apart from sugarcane are cashews, cardamom, betel (areca) nut, and grapes. The cool slopes of western ghats are well-known for coffee and tea plantations whereas the eastern regions are widely known for producing a heavy amount of sugarcanes, a bit of rubber plants, and fruits such as oranges and bananas.

5. Irrigation Pattern :

Irrigation plays an important role in improving production and productivity of agriculture. It facilitates adoption of improved technologies and increases cropping intensity thereby 13 making optimum use of a finite resource i.e., land. There has been a gradual increase in the irrigated area in the state. The gross irrigated area has increased steadily from 9.06 lakh ha during 1960-63 to 27.45 lakh ha during 1990-93 and touched 41.87 lakh ha for the triennium ending 2008-11. The net irrigated area is 34.90 lakh ha at the triennium ending 2008-11.

6. Horticulture Karnataka:

Karnataka is endowed with diverse agro-climatic conditions enabling it to grow a variety of horticultural crops such as fruits, vegetables, flowers, spices and plantation crops. The plantation and horticulture sector plays a vital role in the economy of the state. Though the area under horticultural crops had a share of less than 15 per cent of the net cultivated area of the state, the income generated from the sector accounts for 40 per cent of the total income from the agriculture sector. Karnataka is implementing the National Horticulture Mission (NHM) programme from 2005-06. The coverage of NHM increased from 15 districts in 2005-06 to 30 in 2010-11.

7. Animal Husbandry :

Animal husbandry and dairy farming are important sources of supplementary income to farmers. Livestock also helps in reducing the variability in income of farm families and insulates them from risk. Animal husbandry contributes about 3 per cent to the GSDP of Karnataka and roughly 22 per cent to the state GSDP generated from agriculture as a whole. Karnataka is a leading state in milk production in the country and has a good network of milk co-operative societies, milk-chilling plants, veterinary hospitals, AI centres, etc. Karnataka ranks third in sheep population and sixth in egg production (GoK, 2012). The bovine (cattle and buffaloes) population of the state was 152 lakh in 1997, but declined to 135 lakh in 2003. However, as per the 18th Livestock Census, bovine population has increased to 148 lakh in 2007. The sheep and goat population in the state reached 157 lakh in 2007 from 117 lakh during the 17th Livestock Census of 2003, a 33 per cent growth during the five-year period. Poultry population in the state increased by more than 70 per cent between 17th and 18th Livestock Census.

8. Fisheries :

Fisheries Karnataka has a 300-km coastline with a continental shelf of 27,000 sq km and 5.60 lakh hectares of inland waters. The total fish production in Karnataka was aroud 2 lakh tonnes in the early eighties and reached more than 5 lakh tonnes in 2010-11.

- Deepak N S
STC, Aluva

सुधा मूर्ति के साहित्य में कर्नाटक की झलक

कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और यह उक्ति चरितार्थ होती दिखाई देती है सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी श्रीमती सुधा मूर्ति के द्वारा लिखे गए संस्मरणों, कहानियों, जीवन वृत्तांतों एवं उपन्यासों में. वैसे सुधा जी का नाम किसी परिचय का मोहताज तो नहीं है, फिर भी पाठकों की जानकारी हेतु हम बताना चाहते हैं कि श्रीमती सुधा मूर्ति ने एक सुप्रसिद्ध इंजीनियरिगं महाविद्यालय से इलेक्ट्रिकल विषय लेकर स्नातक की उपाधि प्राप्त की, जिसमें उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया और वह भी ऐसे समय में जब अपने देश में इंजीनियरिंग की वृत्ति महिलाओं के लिए खुली न हीं थी. जब वे अपने महाविद्यालय में पहुंची तो उनके प्राचार्य उन्हें लेकर बहुत सशंकित हो गए थे. वे प्रवेश तो किसी तरह पा गईं, किंतु पूरे चार वर्ष उनकी परीक्षा प्रतिदिन होती रही. एक अकेली लड़की को देखकर मनचले एवं दंभी, दोनों ही किस्म के लड़के उन्हें अपना शिकार बनाया करते थे. कभी बातों की चुभन से उन्हें दुखी करते तो कभी स्पष्ट व्यंग्योक्तियों द्वारा पीड़ित करने का कोई मौका न छोड़ते थे. ऐसे में वे अपने दृढ़ चरित्र एवं लगनशीलता के बल पर न केवल सब में अव्वल रहीं, अपितु तत्कालीन मुख्यमंत्री (कर्नाटक राज्य) से स्वर्ण पदक प्राप्त कर गौरवशाली युवती के रूप में भी उभरीं. इतना ही नहीं उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान (बेंगलुरु) से कम्प्यूटर विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर उपाधि में भी स्वर्ण पदक प्राप्त कर एक बार पुन: स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध किया. आगे चलकर वे आज की टाटा मोटर्स एवं उस समय की टेल्को कम्पनी में काम करने वाली पहली महिला इंजीनियर के रूप में स्थापित हुईं. उनकी समान विचारधारा वाले नारायण मूर्ति से मुलाकात हुई तथा उनके साथ आजीवन का संबंध स्थापित हुआ, किंतु इससे आगे इंफोसिस नामक नामधन्य कम्पनी को शुरू करने के लिए आपने अपनी जमा पूँजी जो आज महज रु. 10,000 लगती हो, किंतु उस समय एक बड़ी रकम थी, प्रदान की थी. इस बात को श्री नारायण मूर्ति आज भी बहुत गर्व के साथ बताते हैं.

सुधा मूर्ति ने इंफोसिस फाउंडेशन के माध्यम से सेवा का जो कार्य आगे बढ़ाया है, उसकी दूसरी मिसाल देशभर में मिलनी कठिन है. उनके साहित्य में आदर्शवाद एवं यथार्थवाद का समन्वय है. एक ओर उनके साहित्य में नायिकाएं सशक्त, सुदृढ़ एवं ऊँचे व्यक्तित्व की धनी हैं, तो दूसरी ओर वे मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत एवं अपनी संस्कृति से गहरा लगाव रखने वाली, जड़ों को पहचानने वाली भी हैं. उनके साहित्य में उत्तरी कर्नाटक के चार जिलों धारवाड़, कारवाड़, हुबली एवं बेलगाँव का बहुत सुंदरता के साथ वर्णन हुआ है. लेकिन यदि व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो लगता है कि उनका साहित्य स्वयं में संपूर्ण भारतीयता को समेटे हुए है.

संभवत: शिक्षित होने एवं शिक्षा के प्रति कर्नाटक राज्य के निवासियों का प्रारंभ से ही विशेष आग्रह रहा है और यह बात सुधा जी को उनके पिताश्री से विरासत में मिली जान पड़ती है. उन्होंने ऐसे हजारों बच्चों की सहायता का बीड़ा उठाया जो प्रवीणता की सूची में तो ऊपर थे, किंतु समस्याओं के चलते अपनी शिक्षा को आगे नहीं बढ़ा पा रहे थे. ऐसे बच्चों के उत्थान में उन्होंने कोई कसर न छोड़ी. यह उदाहरण किसी समाज द्वारा अपने पीछे छूट जाने वाले हिस्से को आगे बढ़ाने के प्रति प्रतिबद्धता को स्पष्ट तौर पर दर्शाता है.

साठ और सत्तर के दशक में कर्नाटक का समाज बहुत सारे नवाचारों से होकर गुजर रहा था. जहाँ एक ओर देश पुरानी पीढ़ी, अपनी परम्पराओं क साथ जीवन जीना चाहती थी तो दूसरी ओर नई ऊर्जा और उत्साह के साथ नव युवा वर्ग भविष्य की ओर देख रहा था. ऐसे में किसी चिकित्सक एवं शिक्षकों के परिवार से संबंध रखने वाली युवती का इंजीनियर बनना और फिर एक कॉर्पोरेट के रूप में उभर कर सामने आना तथा आगे चलकर समाजसेवी और साहित्यकार के रूप में परिणित हो जाना, इतना सब कुछ क्या दर्शाता है? इससे हमारे सामने कर्नाटक की ऐसी छवि दृष्टिगत होती है जिसने उत्तर भारत की तुलना में कई दशक पहले स्वयं को बहुत सी बुराइयों से मुक्त कर लिया था.

यदि बात प्रथाओं की करें तो हम पाते हैं कि बहुदा पुरानी परम्पराएं यदि परिवर्तित नहीं होती हैं तो वे कुप्रथाओं में बदल जाया करती हैं. ऐसे में सुधा मूर्ति द्वारा उत्तर कर्नाटक की देवदासियों के लिए किये गए अथक परिश्रम को कैसे भुलाया जा सकता है. उन महिलाओं का जीवन समाज की रुढ़ियों ने बिल्कुल नारकीय बना दिया था और

उनके साथ काम करके उन्हें समाज की मुख्यधारा मे लाना कठिनाई भरा एवं चुनौती पूर्ण काम था. किसी कॉर्पोरेट जगत से जुड़ी महिला द्वारा उनके उद्धार हेतु सामने आना उनके लिए सहज ढंग से स्वीकार्य न हो सका और एक वर्ष तक तो देवदासियों के साथ वे घुल-मिल भी न सकीं, किंतु वे हार कहाँ मानने वाली थीं. सुधा जी जब पहली बार देवदासियों के क्षेत्र में उनसे मिलने गईं तो उन्हें अपशब्द सुनने पड़े, किंतु उनके पिता ने उन्हें धैर्य तथा ढाढ़स रखना सिखाया. यही कारण है कि सालों मेहनत करने के पश्चात् उन्होंने उस स्थान से न केवल देवदासी प्रथा को समाप्त किया, बल्कि उन महिलाओं व उनके परिवार को स्वाभिमान एवं स्वावलंबन का जीवन जीना भी सिखाया. सम्मान के तौर पर सुधा जी को उन महिलाओं ने बुनाई करके एक शानदार कंबल भेट किया जिसमें 3000 टाँके थे जो प्रत्येक उस महिला का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिन्हें सुधा जी की मेहनत एवं दृढ़ संकल्प ने मुक्ति का पथ दिखलाया था. पुस्तक 3000 हजार टाँके में इस कहानी का बहुत सुंदर वर्णन हुआ है.

युवा वर्ग की लालसा और महत्वाकांक्षाएं कई बार उन्हें पतन के उस मार्ग पर ले जाती हैं, जहाँ से वापस आ पाना बहुत मुश्किल जान पड़ता है. उत्तर कर्नाटक के युवा या तो बेंगलुरु को अपना अंतिम ध्येय बना लिया करते थे या फिर मुम्बई को. दोनों स्थान चकाचौंध से भरपूर थे, किंतु उन स्थानों की चमक कई बार युवाओं को और विशेष रूप से सुधा जी की महिला पात्रों को अखरने भी लगती हैं. वे अपने उस चमक-दमक से भरे महानगरीय वातावरण को छोड़कर पुन: अपने छोटे से गाँव में लौट भी आती हैं. हालाँकि पुरुष पात्रों को ऐसा करने में बहुत कठिनाई अनुभव होती हैं. उनकी कहानियों में ऐसे वृद्ध पात्र हैं जिन्हें पैसे से नि:स्वार्थ प्रेम होता है. वे पैसे को बचाना और कमाना ही अपना ध्येय समझते हैं. गाँव में रहने वाली और दुकान चलाने वाली महिलाओं के दर्शन भी सुधा जी के साहित्य का हिस्सा हैं.

'और बकुला गिर गया' नामक उपन्यास एक महिला के उस संघर्ष की कहानी है जिसमें वे उत्तर कर्नाटक के एक गाँव में रहकर अपने हमउम्र विद्यार्थी को मात देकर प्रदेश की प्रवीणता सूची में स्थान प्राप्त करती हैं. युवा होने पर उसी युवक से प्रेम हो जाता है. पारिवारिक बाधाओं के बावजूद दोनों विवाह कर लेते हैं और पुन: एक नए जंजाल में वे फँस जाती हैं. उस जंजाल को जो कि किसी कॉर्पोरेट की गृहस्थी चलाने में होता है, उस युवती का प्रेम उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है. यही प्रेरणा उसे उक्त जंजाल को काट बाहर निकलने की प्रेरणा प्रदान करता है. उस युवती ने अपनी उड़ान को देश की सीमाओं से परे पहुँचाया और दुनिया ने भौंचक होकर उसे देखा.

किसी एक की समृद्धि दूसरे की उच्चाकांक्षाओं में परिणित होती है. जो कुछ हम न कर सके या जो कुछ हमसे न हो सका, उसे अपने बच्चों से करवाने की चाहत भी व्यक्ति को पतन के मार्ग पर ले जाती है. जब आँखें खुलती हैं, तब संस्कारों एवं संस्कृति की ओर लौटने की चाहत जोर पकड़ने लगती है. सुधा जी का उपन्यास 'डॉलर बहू' इस तरह के वृत्तांत पर आधारित है, जहाँ एक माँ किसी भी हाल में अपने पुत्र को अमेरिका भेज देती है और स्वयं भी वहाँ जाकर रहने का प्रयास करती है, किंतु चकाचौंध भरा जीवन उसके सपनों को चूर-चूर कर देता है. किसी भी विकसित होते समाज में इस तरह की परिस्थितियाँ प्राय: देखने को मिला करती हैं. कर्नाटक जैसे राज्य में जो कुछ घटा वह आज उत्तर भारत में भी हो रहा है.

'वाइज ऐंड अदरवाइज' नामक पुस्तक जिसका अनुवाद 10 भारतीय भाषाओं में हुआ है, सुधा जी के जीवन पर आधारित है और उनके अपने संस्मरणों को कहने वाली एक बहुत रोचक एवं सुंदर कृति है. यह पुस्तक एक ईमानदार विद्यार्थी की कहानी से शुरू होती है जो न केवल लगनशील है, बल्कि स्वयं पर उपकार करने वाले का धन बचाने में विश्वास रखता है. ऐसे निष्ठावान व्यक्ति ही तो आगे चलकर प्रदेश व देश के लिए गौरव हासिल करते हैं. इसी तरह से द्वंद्व नामक उपन्यास में एक ऐसे युवा की कहानी है जिसे ज्ञात होता है कि वह अपने माता-पिता की संतान न होकर किसी अन्य प्रदेश के व्यक्ति की संतान है. जब वह अपनी जैविक माँ से मिलता है तो उसे पता चलता है कि वह तो किसी रेड इंडियन की संतान है. इतना सब होने पर वह अपनी जड़ों की खोज करने अमेरिका जाता है और वहाँ उसे एक अलग ही संस्कृति और संस्कारों के दर्शन होते हैं, जिससे उसकी अपनी जड़ों की तलाश की चाहत समाप्त हो जाती है.

जो कुछ आज उत्तर में हो रहा है, संभवत: दक्षिण में वह पहले घटित हुआ होगा. महानगरों में पढ़े-लिखे वर्ग का आप्रवासन हो या अपने संस्कारों को छोड़कर पाश्चात्य संस्कार अपनाने की विवशता, सब कुछ दक्षिण में पहले आया. यही कारण है कि सुधा जी के साहित्य में वे सारी बातें हैं जो आज उत्तर भारत में दिखाई दे रही है. देश में पीढ़ियों के बीच का जो अंतर सदियों से चला आ रहा है, पिछली शताब्दी में उसकी खाई कुछ अधिक चौड़ी हो गई सी लगती है. रुढ़ीवादी समाज छुआछूत को मानता रहा, किंतु विकासवादी नई पीढ़ी को पुरानी बातें पसंद न थीं.

दक्षिण भारत से खाड़ी के देशों में जाने वाली महिलाओं की करुण कथाएं भी सुधा जी ने बहुत ही मर्मस्पर्शी लिखी हैं. उन्होंने ऐसी कथाएं न केवल लिखीं बल्कि उन महिलाओं हेतु बहुत कुछ किया भी. सुधा मूर्ति के साहित्य में हमें इतना कुछ मिल जाता है जो कर्नाटक में न रहते हुए भी वहाँ का निवासी होने जैसी अनुभूति प्रदान करता है.

यदि आप भी साहित्य प्रेमी हैं और इसके माध्यम से स्थान-स्थान पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं, तो सुधा मूर्ति के साहित्य में कर्नाटक की झलक अवश्य देखने का प्रयास कीजिये.

- अर्पित जैन
क्षे.का., भोपाल (दक्षिण)

Match the Parameters (A) with Parameter (B)

No	Parameter (A)	No	Parameter (B)
1	When was Karnataka formed?	1)	K. Chengalaraya Reddy
2	When was Bangalore renamed as Bengaluru?	2)	D. Devaraj Urs (7 Years 234 Days)
3	When was Mysore renamed as Karnataka?	3)	Belagavi
4	Which City is known as the Silicon Valley Of India?	4)	Kempe Gowda I
5	First Chief Minister of Karnataka (Then Mysore)?	5)	1st November 2014
6	Who is the Longest-Serving Chief Minister of Karnataka?	6)	Agumbe
7	Which Sea is located on the Western Side of Karnataka?	7)	Bengaluru
8	How many Indian States surround Karnataka?	8)	1st November 1956
9	Who is considered the Father of Carnatic Music?	9)	Hubli
10	How many Districts are there in Karnataka?	10)	1909
11	What is the Nickname of Karnataka?	11)	Mamatha Poojary
12	Which City of Karnataka is also known as “Land Of Jowar Roti And Groundnut Chatni”?	12)	Issuru
13	Which is the Highest waterfall in Karnataka?	13)	six
14	Which is the Second-Highest plunge waterfall in India that drops vertically without touching the underlying cliff face?	14)	Arabian
15	What is the State Festival of Karnataka?	15)	M. Visvesvaraya
16	Which is the First Kannada Newspaper?	16)	Chamarajanagar
17	Who founded The Printers (Mysuru) Private Limited and began publishing two newspapers “Deccan Herald” and “Prajavani”?	17)	Jog Falls
18	How many times was President’s Rule imposed in Karnataka?	18)	Vijayapura (Bijapur)
19	Which is the Largest District of Karnataka?	19)	Ramanagara
20	Which city is also known as Chota Bombay?	20)	Coorg
21	Who founded Bangalore?	21)	30
22	When was the Indian Institute of Science established?	22)	Science City Of India
23	In which District Bandipur National Park is located?	23)	K. N. Guruswamy
24	Which Place is Known as Scotland Of India?	24)	Sati Sulochana
25	Who was the First Person to receive the Bharat Ratna Award from Karnataka?	25)	Mysore Dasara
26	Name the first Kannada Movie?	26)	6 Times
27	Which town is known as the Silk Town of Karnataka?	27)	Mangaluru Samachara
28	Name the first village to be declared Independent in Karnataka?	28)	1973
29	Who is Known as the Kabaddi Queen of Karnataka?	29)	Kunchikal Falls (455 m)
30	Which place is known as Cherrapunji of Karnataka?	30)	Purandara Dasa

- U Sethupitchai
Kochadai Branch, Madurai

Please find the answers of this quiz in this issue only

नयी प्रतियोगिता / New Contest

फोटो - जॉन अब्राहम
क्षे.म.प्र.का, मंगलूरु

कविता लिखें / Compose Poem

क्या यह तस्वीर आपकी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की-बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरु करें और हमें sulabhakore@unionbankofindia.com पर इस तस्वीर से संबंधित बढ़िया सी कविता अधिकतम 20 पंक्तियों में लिखकर ई-मेल करें.

आप अपनी प्रविष्टि 'संपादक, यूनियन धारा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक भवन, तल मंजिल, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई- 400021' इस पते पर भी प्रेषित कर सकते हैं.

कविता अंग्रेजी या हिंदी में भेजी जा सकती हैं. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं.

विजेताओं का नाम यूनियन धारा के अगले अंक में प्रतियोगिता कॉलम में प्रकाशित किया जाएगा और मानदेय प्रदान किया जाएगा. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है .

जल्दी करें, प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 20 अक्तूबर, 2021 है,

संपादक

Does this photograph fire your imagination or spontaneously inspire you to express your feelings? Then what are you waiting for? Start Keying in and and e-mail us your superb, classy poem, not exceeding 20 lines, relating to this photograph to `sulabhakore@unionbankofindia.com' .

You can also send your entries to `Editor, Union Dhara, Union Bank of India, Central Office, Union Bank Bhavan, Ground Floor, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai-400021'. The poem can be sent in English or Hindi. Both the categories have different prizes.

Name of Prize winners will be published in 'Contest Column' of next issue of Union Dhara and honorarium will also be awarded. Please note that this contest is open only for the working staff members of the Bank.

Hurry up the last date to receive entries is 20th October 2021.

Editor

'यूनियन धारा' प्रतियोगिता क्रमांक 156 - 'कविता लिखें' पुरस्कार प्राप्त योगदानकर्ता

पुरस्कार	हिन्दी खण्ड	अंग्रेजी खण्ड
प्रथम	**श्री भरत परिहार,** सांचोर शाखा, उदयपुर	**श्री रवि लाधावाला,** क्षे. का. राजकोट
द्वितीय	**श्री अजय कुमार प्रसाद,** क्षे. का. काकीनाड़ा	**श्री दिव्योजित नाथ,** हैदराबाद-सैफाबाद
तृतीय	**श्री रूपेश कुमार उपाध्याय,** क्षे. का. अहमदाबाद	**सुश्री मिताली बोस,** क्षे. का. नासिक
प्रोत्साहन	**श्री सुनील रोलिया,** किशनगढ़ शाखा, जोधपुर	**सुश्री पद्मा,** गोरखपुर शाखा, जबलपुर

Answers for Quiz (From Page No. 91)

Answer : 5, 6, 19, 21, 2, 30, 4, 1, 20, 22, 29, 28, 8, 7, 25, 23, 14, 12, 27, 24, 10, 11, 17, 26, 15, 18, 16, 3, 13, 9

Award Gallery

On 07th April, 2021, Union Bank of India won major awards viz "Best Strategy in HR 2020" and prestigious honor of "HR Oriented CEO Award 2020" conferred on Bank's MD&CEO, Shri Rajkiran Rai G. at the Apex India HR & Business Excellence Awards 2020.

The Apex India Foundation, Delhi honors individuals and organizations for their outstanding contribution towards HR good practices and business excellence through its annual award program with a thorough selection process by an elite jury of notable personalities. The awards recognize the excellent work carried out by the Bank adopting best practices and its quest to provide a completely digital employment experience.

दि. 06 अप्रैल 2021 को नई दिल्ली में अपेक्स इंडिया फाउंडेशन द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को अपेक्स इंडिया एचआर एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया. यह पुरस्कार श्री पवन कुमार दास, क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली द्वारा प्राप्त किया गया.

समाचार (केंद्रीकृत)

Shri Rajkiran Rai G, Managing Director & CEO, Shri Gopal Singh Gusain, Shri Dinesh Kumar Garg, Shri Manas Ranjan Biswal and Shri Nitesh Ranjan, Executive Directors, Union Bank of India at the Press Conference held in Mumbai on the occasion of announcement of Q1 Financial Results for Quarter ended June 30, 2021.

दि. 01 जुलाई, 2021 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा सशस्त्र पुलिस मुख्यालय, नायगाँव, दादर पूर्व, मुंबई स्थित मुंबई पुलिस अपर आयुक्त कार्यालय में सशस्त्र पुलिस कर्मियों को यशलोक वेलफ़ेयर फाउंडेशन के सहयोग से उनके अच्छे कार्यों व साहसिक प्रयासों के लिए, मानसून से बचाव के लिए रेनकोट प्रदान किए गए. ये रेनकोट शहरी और ग्रामीण भारत के वंचित एवं बेरोजगार वर्ग के पुरुषों व महिलाओं द्वारा बनाए गए हैं, जिन्हें इस प्रकार के रोजगार का एक स्थायी स्रोत प्रदान किया गया है.

समाचार (उत्तर)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षे.म.प्र.का. एवं क्षे.का. वाराणसी द्वारा 'योग शिविर' का आयोजन किया गया. यूनियन ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, वाराणसी में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री बिकास कुमार, अंचल प्रमुख, वाराणसी; श्री सुनील कुमार, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी सहित 40 से अधिक कर्मियों ने सहभागिता दी.

डिस्ट्रिक्ट कोर्ट शाखा, क्षे.का., भोपाल (सेंट्रल) के एटीएम के नए परिसर का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर श्री अभिजीत बसाक, क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल; श्री अखिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख भोपाल (सेंट्रल), श्रीमती दीपिका मालवीय, शाखा प्रबंधक और अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

क्षे.का. भोपाल (सेंट्रल) की आनंद नगर एवं लोहरदा शाखा ने डॉ. अजीत मराठे, उप अंचल प्रमुख, श्री अखिलेख कुमार, क्षेत्र प्रमुख एवं श्री अजित लालवानी की उपस्थिति में ऋण कैंप का आयोजन किया गया.

दि. 25.06.21 को क्षे.का. भोपाल सेंट्रल के रोलआउट की प्रथम वर्षगांठ का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया. भोपाल अंचल प्रमुख, श्री रूपलाल मीना तथा उप अंचल प्रमुख, डॉ. अजीत मराठे की उपस्थिति में केक काट कर शुभकामना संदेश दिया गया तथा साथ ही सभी को कोरोना टीकाकरण के लिए प्रेरित किया गया.

दि. 17 जून 2021 को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड (NSIC) के मुख्यालय में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटिड (NSIC) द्वारा लघु उद्योगों को ऋण सहायता प्रदान करने हेतु करार निष्पादित किया गया. इस अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से श्री पवन कुमार दास, क्षेत्र महाप्रबंधक, दिल्ली एवं श्री अजय कुमार, क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली (दक्षिण) व एनएसआईसी से पी रवि कुमार, मुख्य महाप्रबंधक एवं श्री गौरांग दीक्षित, निदेशक (वित्त) एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे.

एमपी नगर ईसीबी शाखा द्वारा इस वर्ष का सबसे बड़ा कार लोन (बीएमडब्ल्यू) शाखा के बहुमूल्य ग्राहक एवं भोपाल जिले के नामी प्रतिष्ठित बिजनेसमैन श्री संजीव अग्रवाल को स्वीकृत एवं वितरित किया गया. कार लोन की चाबी क्षेत्र प्रमुख, भोपाल (सेंट्रल), श्री अखिलेश कुमार द्वारा उनके कार्यालय में जाकर प्रदान की गयी. इस लोन को स्वीकृत कराने में हमारी एमपी नगर ईसीबी शाखा की क्रेडिट टीम, मार्केटिंग अधिकारी, क्षेका क्रेडिट टीम तथा आंचलिक क्रेडिट टीम का महत्वपूर्ण सहयोग रहा.

दि. 28.06.21 को यूनियन समृद्धि केंद्र के रोल आउट की द्वितीय वर्षगांठ का आयोजन भोपाल अंचल प्रमुख, श्री रूपलाल मीना, उप अंचल प्रमुख डॉ. अजीत मराठे एवं श्री अखिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख भोपाल (सेंट्रल) की उपस्थिति में किया गया. यूनियन समृद्धि केंद्र के शाखा प्रबन्धक, श्री संदीप श्रीवास्तव ने पीपीटी के माध्यम से शाखा के कारोबार संबंधी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी देकर शाखा की आगामी कार्ययोजना के विषय में अवगत कराया.

समाचार (पूर्व)

दि. 05.06.2021 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्टा.प्र.केंद्र, भुवनेश्वर में स्टाफ सदस्यों के बच्चों द्वारा पौधारोपण किया गया.

दि. 21.06.21 को विश्व योग दिवस के अवसर पर स्टा.प्र.केंद्र, भुवनेश्वर के प्रेक्षागृह में स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिवार सदस्यों द्वारा योग किया गया.

समाचार (पश्चिम)

क्षे.का. अमरावती के अंतर्गत नांदेड़ शाखा द्वारा दि. 28 जून 2021 को भारत सरकार के 'सबको मुफ्त वैक्सीन' अभियान का शुभारंभ ग्राहकों के मध्य किया गया.

दि. 05.06.21 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डभोई रोड शाखा, बड़ौदा के परिसर में श्री सत्यजीत महांती, क्षेत्र प्रमुख, की उपस्थिति में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. सीएजी प्रभारी, श्री मनोज कुमार जैन एवं विपणन अधिकारी के साथ उपस्थित शाखा के सभी स्टाफ सदस्य.

दि. 10.06.21 को श्री सी. वी. मंजूनाथ, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद द्वारा क्षे.का. बड़ौदा का दौरा किया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्री सत्यजीत महांती; श्री जीतेंद्र कुमार सामल, उप क्षेत्र प्रमुख ने बड़ौदा क्षेत्र में उनका स्वागत किया. इस अवसर पर शाखा प्रमुखों एवं क्षेत्र के स्टाफ-सदस्यों की बैठक भी आयोजित की गयी एवं छ:माही के दौरान उत्कृष्ट कार्यनिष्पादक शाखाओं को पुरस्कृत भी किया गया.

दि. 25.06.2021 को क्षे.का. आणंद का एक वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर 'प्रथम वर्षगांठ समारोह' का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षे.का. आणंद के क्षेत्र प्रमुख, श्री राजेश कुमार झा और क्षे.का. बड़ौदा के क्षेत्र प्रमुख, श्री सत्यजीत महांती एवं अन्य स्टाफ सदस्य केक काटते हुए.

दि. 05.06.21 को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर क्षे.का., बड़ौदा द्वारा क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए 'ऑनलाइन चित्र प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कुल 26 बच्चों ने प्रतिभागिता की.

क्षे.का. पुणे (पश्चिम) द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों के लिए सुबह विशेष योग सत्र' का आयोजन किया गया. इस सत्र में कुल 108 स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया. इसके अतिरिक्त एक ऑनलाइन 'योग प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का भी आयोजन किया गया. जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

दि. 21.05.21 को राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस पर जागरुकता हेतु शपथ लेते हुए श्री एस. ए. राजकुमार, क्षेत्र प्रमुख, मदुरै के साथ क्षेत्र के अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 26 जून 2021 को कोरोना टीकाकरण अभियान हेतु क्षे.का. कोषिक्कोड द्वारा स्टाफ सदस्यों के लिए कोरोना टीकाकरण कैम्प आयोजित किया गया. कैम्प का उद्घाटन, श्री नरसिंह कुमार आर, उप क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा किया गया. कुल 128 स्टाफ सदस्यों ने इस कैम्प में भाग लिया.

FGMO, Visakhapatnam has sponsored 20 traffic barricades for road safety to traffic inspectors on 17.4.21 at Maddilapalem junction, Visakhapatnam. Mr. Kumara Swamy, ACP, Traffic Zone-I. Visakhapatnam receiving 'certificate of handing over of traffic barricades' from Mr.B.Srinivasa Setty, FGM, Visakhapatnam. Also seen Mr.G.N.Gami, DZH, Visakhapatnam; Mr. Ajay Kumar, RH, Visakhapatnam; Mr. BKVSS Gurunadha Rao, AGM; Mr. S. Jaya Raj, AGM, FGMO, Visakhapatnam

दि. 20 जून 2021 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्षे. का. कोषिक्कोड द्वारा 'सहज योग' कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किया गया. कार्यक्रम का उद्घाटन श्री टी ए नारायणन, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया. मुख्य अतिथि, डॉ संध्या के रामकृष्णन, पूर्व राज्य स्तरीय सहज योग संयोजक तथा मुख्य वक्ता, सुश्री विजयलक्ष्मी शशीकुमार, सेवानिवृत्त, मुख्य प्रबंधक, एसबीआई थें.

दि. 05 जून 2021 को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर स्टाफ महाविद्यालय, परिसर में श्री हृषीकेश मिश्रा, प्राचार्य एवं उप महाप्रबंधक; श्री सिबिल प्रधान, उप प्राचार्य एवं सहायक महाप्रबंधक; श्री शिवकुमार शुक्ला, सहायक महाप्रबंधक एवं समस्त स्टाफ सदस्यों द्वारा पौधा-रोपण किया गया.

दि. 21.06.21 को क्षे.का., राजमुन्द्री के अंतर्गत मिर्थीपाडु शाखा के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए श्री के एस डी शिव वरप्रसाद, क्षेत्र महा प्रबन्धक, विशाखापट्टनम. साथ में है, श्री येसुदास बाबू, शाखा प्रबन्धक, मिर्थीपाडु शाखा.

दि. 25.6.21 को क्षे.का., विशाखापट्टनम में आयोजित पीएम स्वनिधि लोन वितरण मेला में लाभार्थियों के साथ, श्री केएसडी शिव वरप्रसाद, क्षेत्र महा प्रबन्धक; श्री जी एन गामी, उप अंचल प्रमुख; श्री एस अरविंद कुमार, क्षेत्र प्रमुख, विशाखापट्टनम एवं स्थानीय शाखा प्रबन्धक गण उपस्थित रहे.

क्षे.का., कलबुर्गी के अंतर्गत दि. 18.06.2021 को क्षेत्र प्रमुख, श्री एच. जी. अरविंद (बाएँ से प्रथम) की अध्यक्षता व उप क्षेत्र प्रमुख, श्री एस. जी. राजकुमार की उपस्थिति में श्री क्षेत्र धर्मस्थल ग्रामीण विकास परियोजना (एसकेडीआरडीपी) के क्षेत्रीय निदेशक, श्री शिवराया प्रभु ने क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में पौधा लगाकर कारोबार संवाददाताओं (बिजनेस करेस्पंडेंट) के लिए आयोजित चिंतन मंथन शिविर का शुभारंभ किया.

दि. 26.06.21 को क्षे.का. बेंगलूरु (उत्तर) द्वारा स्टाफ सदस्यों और आम नागरिकों के लिए कोरोना टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया. श्री डी चंद्रमोहन रेड्डी, क्षेत्र महाप्रबंधक ने शिविर का उद्घाटन किया. इस अवसर पर श्री एम आर मनोहर, क्षेत्र प्रमुख; श्री के दिनकर, उप क्षेत्र प्रमुख; क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यपालक गण एवं स्टाफ सदस्य सहित शिविर में 175 से भी अधिक लोगों ने टीकाकरण का लाभ प्राप्त किया.

रिटेल बूस्टर 10K अभियान के पहले दिन ही क्षे.का.,बेंगलूरु (दक्षिण) द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए देश के अग्रणी कार्यालयों में अपना स्थान बनाने पर दि. 16.07.2021 को क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री डी. चंद्र मोहन रेड्डी व क्षेत्र प्रमुख, श्री टी. नंजुंडप्पा द्वारा कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों व कार्यपालकों की उपस्थिति में केक काटकर खुशी का इजहार किया गया.

दि. 24 अप्रैल 2021 को क्षे.का. बेंगलूरु (उत्तर) ने नेशनल गेम्स विलेज, कोरमंगला, बेंगलूरु में आयोजित कोरोना टीकाकरण शिविर का सह-प्रायोजन किया. इस शिविर में 200 से अधिक नागरिकों ने टीकाकरण का लाभ प्राप्त किया.

दि. 25.06.21 को क्षे.का. हैदराबाद (पंजागुट्टा) के रोल आउट को एक वर्ष पूरे होने के अवसर पर केक काटकर उत्सव मनाया गया. केक काटते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री सी वी एन भास्कर राव; उप क्षेत्र प्रमुख, के श्रीनिवास मूर्ति एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

कढ़ी पत्ता

हम अपने जीवन में आयुर्वेदिक चीज़ों का प्रयोग अक्सर करते है. इसके लिए कभी दादी माँ के नुस्खें से भरी पोटली खोलते है तो कभी अपने बुजुर्गों द्वारा लिखी आयुर्वेदिक किताबों का अध्ययन करते हैं. कभी नीम की कड़वाहट, तो कभी तुलसी रूपी औषधि का प्रयोग करते रहते हैं. कढ़ी पत्ता में भी अनेक गुणों की भरमार है.

कढ़ी पत्ते सुगंधित और बहुमुखी छोटे पत्ते है, जिसमें कई प्रकार के औषधीय गुण उपलब्ध है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है. इसे कृष्ण निम्बा या मीठी नीम के नाम से भी जाना जाता है. साधारण तौर पर कई लोग इसे भोजन से निकाल कर फेंक देते है, लेकिन इसके औषधीय गुण जानने के बाद फिर ऐसा कभी नहीं करेंगे. आईए, इस कढ़ी पत्तों के महत्व के बारे में हम जान लेते है:

- हर दिन कढ़ी पत्ता खाली पेट खाने से शरीर में आयरन सोखने में मदद करता है. कढ़ी पत्ता आयरन और फॉलिक एसिड का एक बेहतरीन स्रोत है तथा इसमें एंटी ऑक्सीडेंट्स ज्यादा मात्रा में पाए जाने के कारण इसका सेवन शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है.
- कढ़ी पत्ता में मौजूद तेल बालों को मजबूत बनाने में सहायक होता है. नारियल तेल में इस पत्ते को भूरे होने तक उबालकर उस तेल को बालों में प्रति दिन प्रयोग करें तो बाल घने और काले बनते हैं. कच्चे पत्तों को चबाकर सेवन करने से बालों का झड़ना भी कम होता है. इस तेल से बालों को असमय पकने से भी रोक सकते हैं.
- त्वचा संबंधी रोग कम करने में कढ़ी पत्ता फायदेमंद है. इसमें बैक्टीरियल, वाईरल इन्फेक्शन को रोकने के गुण हैं जो मुंहासों को भी बढ़ने से रोकता है.
- शरीर में सूजन जैसी समस्याओं में इन पत्तों को पीसकर पेस्ट बनाकर लगा सकते हैं.
- इन पत्तों में विटामिन ए, बी, सी तथा कैल्शियम अधिक मात्रा में मौजूद हैं जो मानसिक तनाव और नसों की कमजोरी को कम करने में सहायक होता है तथा मस्तिष्क को तेज रखता हैं.
- कफ होने या फेफड़ों में जमाव की स्थिति हो तो कढ़ी पत्ते को पीसकर उस पाउडर में शहद को मिलाकर खा सकते हैं.
- पाचन संबंधी समस्या, पेट में जलन तथा दस्त लगने पर कढ़ी पत्ते को पीसकर छास में मिलाकर पीने से फायदा होता है. घी में भुना कढ़ी पत्ता मल में खून आने की समस्या का समाधान होता है.
- कढ़ी पत्तों में फ़ाइबर तथा कोलेस्ट्रोल को कम करने का गुण पाया जाता है. मधुमेह के रोगी अपने भोजन में इसे शामिल कर मधुमेह पर नियंत्रण कर सकते हैं.
- इन पत्ते में भारी मात्रा में अमीनो एसिड पाया जाता है जो हृदय की मांसपेशियों के लिए बेहद मददगार हैं.
- कढ़ी पत्ता नेत्र संबंधी समस्याओं को बढ़ने से रोकता है.

कढ़ी पत्ता का उपयोग दक्षिण भारत में ज्यादा किया जाता था लेकिन आज कल इसका प्रयोग सभी जगह के तरह तरह के भारतीय व्यंजनों में किया जा रहा है. अपने विशिष्ट स्वाद के कारण कढ़ी पत्ता, भारतीय भोजन का एक अहम हिस्सा बन गया है. इसलिए इसे साल भर इस्तेमाल करने वाली औषधि कहा जाता है.

- श्रीमती एन वी एन आर अन्नपूर्णा
क्षे. म. प्र. का., विशाखापट्टनम

पुलियोगरे

पुलियोगरे दक्षिण भारत का एक लोकप्रिय स्वादिष्ट पदार्थ है. तिरुपति बालाजी के मंदिर में पुलियोगरे को प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है. पुलियोगरे दावत का एक अंग भी माना जाता हैं. तथा यात्रा में भी ले जाया जा सकता है. यह मिष्ठान्न भोजन का एक अंग है. और इसे नाश्ते में भी परोसा जाता है. इसे खट्टा चावल या इमली चावल के नाम से भी पहचाना जाता है.

सामग्री : इमली 50 ग्राम, लाल मिर्ची 50 ग्राम, अक्खा या सूखा धनिया 25 ग्राम, काली मिर्च 5-8 ग्राम, जीरा 5-8 ग्राम, सूखा मेथी 5 ग्राम, राई (सरसों) 15 ग्राम, उडद डाल 50 ग्राम, चना डाल 50 ग्राम, सफ़ेद तिल 50 ग्राम, सूखा नारियल 50 ग्राम, लवंग 5 ग्राम, इलायची 5 ग्राम, मूंगफली दाना 50 ग्राम, काजू 25 ग्राम, हींग, नमक स्वाद अनुसार, तेल 100 ग्राम, घी 25 ग्राम, करीपत्ता 25 ग्राम और हल्दी पाउडर, गुड़ स्वाद के लिए.

सबसे पहले इमली को पानी में डालकर 10-15 मिनट रखें. फिर अच्छी तरह मसल कर उस का जूस बनाइये और बीज एवं गूदे को छान कर रखिए.

कढ़ाई में बिना तेल के मिर्ची 40 ग्राम, पूरा धनिया, कालीमिर्ची, जीरा, मेथी, लवंग, इलायची, 30 ग्राम उडद और 30 ग्राम चना डाल के साथ खोपरा और तिल 25 ग्राम को भी भून लीजिए, इन सभी भुनी हुई वस्तुओं को मिक्सर में दरदरा पीस लीजिये. अब कढ़ाई को आंच पर रखकर तेल डाल दीजिये. तेल गरम होने के बाद बची हुई राई, उडद दाल, चना दाल, मूंगफली, काजू, तिल, हींग, कढीपत्ता डालिए. इमली के पानी को इस तड़के में डालकर हल्दी पाउडर, नमक, और गुड़ मिलाकर इस घोल को गाढ़ा होने तक आंच पर रखिए. उतारते समय घी डालकर उतारिए. यह घोल 15-20 दिन तक बाहर और कई महीनों तक फ्रिज में रख सकते हैं.

चावल पकने के बाद इसे कढ़ाई में डाल दीजिये, उसके ऊपर इस घोल को डाल कर अच्छी तरह मिक्स कर दीजिये ताकि सभी चावल में यह घोल मिक्स हो जाए. थोड़ा सा तिल का तेल भी मिला सकते हैं. स्वाद के अनुसार नमक डाल सकते हैं. पुलियोगरे को गरम-गरम, नारियल की चटनी या राइता या तले पापड़ के साथ परोसिए.

- एस. शिवकुमारन
क्षे. म. प्र. का., पुणे

आपकी पाती

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का जनवरी-मार्च, 2021 अंक हमारे कार्यालय में प्राप्त हुआ, धन्यवाद.

सर्वप्रथम, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को 2021 के दौरान मिले अनेकानेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों के लिए टीम एमआरपीएल की ओर से बहुत-बहुत बधाई.

'यूनियन धारा' हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं के सम्मिलन से प्रकाशित पत्रिका बहुत ही अनोखी लगी. पत्रिका में प्रकाशित लगभग सभी आलेख चाहे वे हिन्दी में हो या अंग्रेजी में; स्तरीय, संग्रहणीय एवं श्रेयस्कर हैं.

संपादकीय में आपने ठीक ही कहा है कि मानव संसाधन का कार्य केवल नियुक्ति तक ही सीमित नहीं है बल्कि कौशल विकास एवं प्रशिक्षण, कार्य निष्पादन पर नज़र रखना और सभी कर्मचारियों को समान अवसर प्रदान करना भी इसके अंतर्गत आता है.

बैंकों में मानव संसाधन के अंतर्गत आनेवाले सभी योजनाओं की जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से मिलती है. विशेषत: दिव्यांग कार्मिकों के सशक्तिकरण में मानव संसाधन विभाग की भूमिका, समूह व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी, प्रशिक्षण एवं विकास का महत्व, अवकाश गृह सुविधा, समूह चिकित्सा बीमा पॉलिसी, कर्मचारी के अधिवर्षिता लाभ; पेंशन, उपदान, संस्था को बनाए रखने हेतु प्रशिक्षण एवं विकास का महत्व तथा प्रभाव, सेवा निवृत्त कार्यपालकों एवं अधिकारियों को व्यावसायिक रोजगार, Principles Of Natural Justice & Disciplinary Procedure In the Bank, Increment, Fitments आदि जैसे अनेकानेक लेख पठनीय हैं.

सारगर्भित लेखों के साथ-साथ पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएं बेहद अच्छी लगीं. अमृता प्रीतम जैसी प्रसिद्ध साहित्यकार का परिचय व उनके साहित्यिक योगदान का प्रस्तुतीकरण पत्रिका को पठनीय बनाने में सार्थक सिद्ध हुआ है. मेरी राय में यह अंक सभी कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के लिए उपयोगी साबित होगा. इस पुनीत कार्य के लिए संपादक मण्डल को साधुवाद.

विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों को दर्शाती हुई चित्रों से सुसज्जित झांकियाँ पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन को प्रतिबिंबित करती है.

उत्कृष्ट एवं सारगर्भित प्रकाशन के लिए मेरी ओर से संपादकीय टीम को बहुत-बहुत बधाइयाँ और शुभकामनाएँ तथा पदोन्नत हुए सभी उच्च कार्यपालकों को एमआरपीएल टीम की ओर से हार्दिक बधाई.

- डॉ. बी. आर. पाल

वरिष्ठ प्रबंधक (राभा), एमआरपीएल, मंगलूरु

अभी कुछ दिनों पहले ही आपकी गृह पत्रिका यूनियन धारा का नवीनतम अंक (सतर्कता विशेषांक) पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ. सतर्कता जैसे महत्वपूर्ण विषय को समर्पित यह पत्रिका ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ पाठकों का मनोरंजन भी करती है. यह पत्रिका आईटी एवं अन्य विषयों पर भी हिंदी भाषा में तकनीकी ज्ञान प्रदान करती है. श्री जितेंद्र सिंह वर्मा द्वारा लिखित 'साईबर सुरक्षा' संबंधी आलेख, मो. जावेद अर्शद का श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के संबंध में आलेख, श्री विश्वास कुमार आनंद का न्यू अंब्रेला एंटिटि संबंधी आलेख, स्टाफ सदस्यों द्वारा लिखित विभिन्न कविताएं मुझे बहुत पसंद आयीं. यह ना केवल पाठकों को चुनौतियों से परिचित करवाते हैं बल्कि नवीन उत्साह भी जागृत करते हैं. इसी प्रकार अमन सक्सेना का आलेख 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' समाज के कड़वे सच को बयान करता है. पत्रिका में समाज के लगभग सभी क्षेत्रों के आलेख जैसे खेल जगत, स्वास्थ्य, योग, बैंकिंग आदि शामिल किए गए हैं. मुन्नार का मनोहारी चित्रण बहुत शानदार है. पत्रिका डिजाईन बहुत ही आकर्षक है, साथ ही रंगों का समामेलन भी बहुत सुंदर है. अंत में केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि आपकी गृह पत्रिका का अक्टूबर-दिसम्बर 2020 का अंक पूर्णत: संतुलित है. पत्रिका हर दृष्टि से उत्कृष्ट है. यूनियन धारा के संपूर्ण संपादक मंडल, विशेषकर सुश्री सुलभा कोरे, मुख्य प्रबंधक एवं संपादक को पत्रिका के प्रकाशन हेतु बहुत बहुत बधाई.

- सद्दाम खान

बैंक ऑफ बड़ौदा, रतलाम

आपके कार्यालय की तिमाही द्विभाषिक गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का दिसंबर 2020 का अंक प्राप्त हुआ. तदर्थ धन्यवाद. यह अंक बैंकिंग विषयों के अतिरिक्त अन्य समसामयिक विषयों को सम्मिलित करके बनाया गया है. 'क्या निजीकरण, आज के युग की मांग है?' 'भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की भावी चुनौतियां,' 'नई शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएं' ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है. मुन्नार एवं जबलपुर संबंधी जानकारी भी ज्ञानवर्धक है. आपके द्वारा उत्कृष्ट एवं सार गर्भित प्रकाशन के लिए संपादकीय सलाहकार मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

- राजीव वार्ष्णेय

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मुंबई

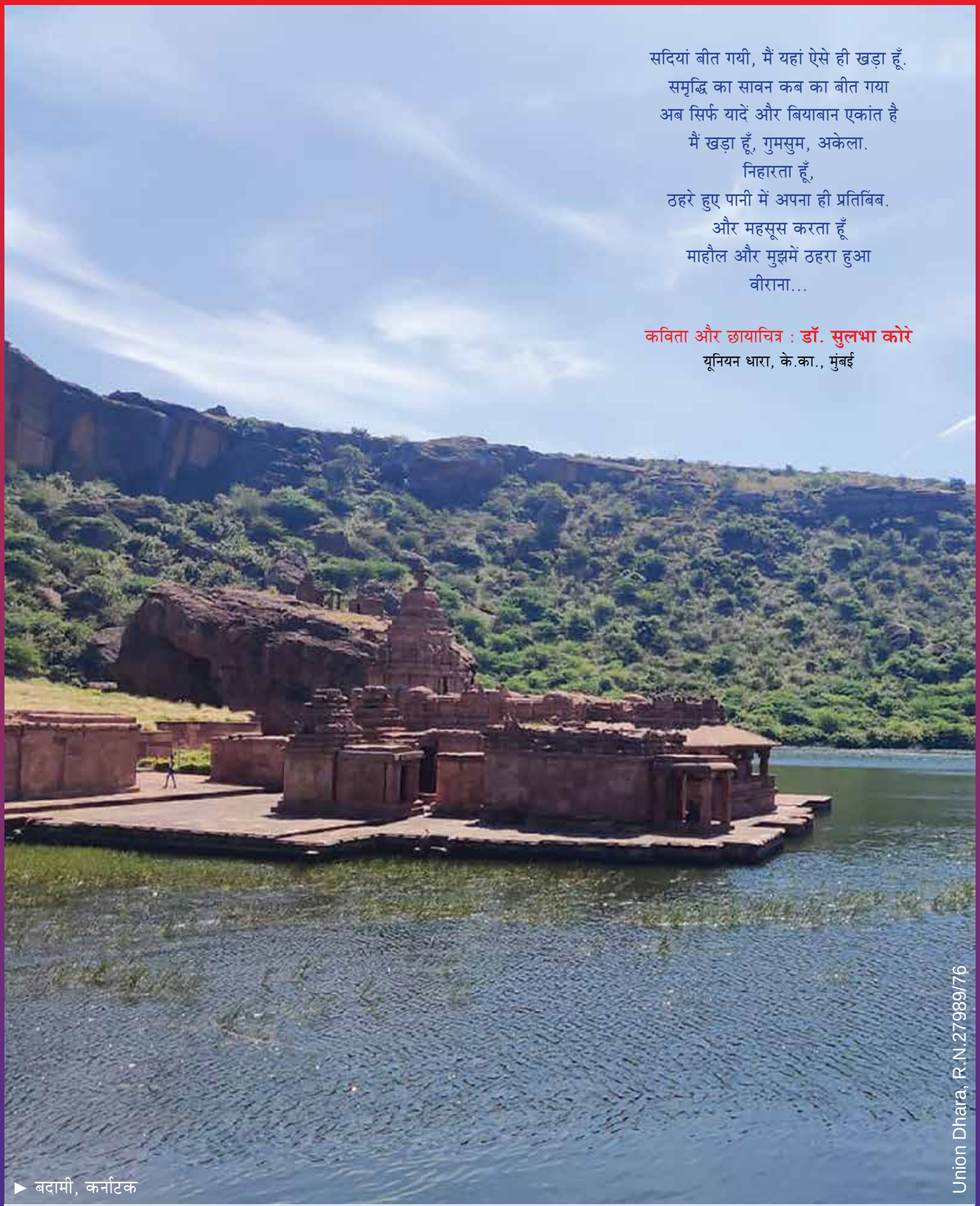

सदियां बीत गयी, मैं यहां ऐसे ही खड़ा हूँ.
समृद्धि का सावन कब का बीत गया
अब सिर्फ यादें और बियाबान एकांत है
मैं खड़ा हूँ, गुमसुम, अकेला.
निहारता हूँ,
ठहरे हुए पानी में अपना ही प्रतिबिंब.
और महसूस करता हूँ
माहौल और मुझमें ठहरा हुआ
वीराना...

कविता और छायाचित्र : **डॉ. सुलभा कोरे**
यूनियन धारा, के.का., मुंबई

► बदामी, कर्नाटक

Union Dhara, R.N.27989/76

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Dr. Sulabha Kore.